गुरु पूर्णिमा महोत्सव लखनऊ में

आनो भद्रा: क्रतवो यन्तु विश्वत:

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

धन-धान्य, मान-सम्मान प्रदान करने में सहायक : श्री ललिताम्बा सिद्धि

जीवन में गतिशीलता प्रदान करने में सहायक : कलौ चण्डी विनायकौ

साधक को जीवन में सर्वोच्चता प्राप्ति में सहायक : विशालाक्षी साधना

सद्गुरुदेव

सद्गुरु प्रवचन 5

स्तम्भ

शिष्य धर्म 34

गुरुवाणी 35

नक्षत्रों की वाणी 46

मैं समय हूँ 48

वराहमिहिर 49

इस मास दिल्ली में 60

एक दृष्टि में 62

साधनाएँ

श्रीललिताम्बा सिद्धि 20

पितृ सन्तुष्टि साधाना 22

प्रेत बाधा निवारक सा. 26

मां दुर्गा की साधनाएं 36

कलौ चण्डी विनायकौ 41

विशालाक्षी साधना 50

शरद पूर्णिमा-लक्ष्मी प्र.

कमलधारिणी लक्ष्मी प्र. 56

स्वर्णकांति लक्ष्मी प्र. 57

दो विशेष लघु प्रयोग-

सर्व दुखनाशक प्रयोग 58

सर्व रोग निवारण प्र. 58

ENGLISH

Kuber Yantra Sadhan 61

विशेष

जगत पालक श्रीविष्णु 31

अहंकार एवं विनम्रता 45

स्तोत्र

श्री विष्णु स्तोत्र 30

आयुर्वेद

पीपल 43

योग

गोरक्षासन 59

प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

आशीर्वाद

पूजनीया माताजी

(पू. भगवती देवी श्रीमाली)

सम्पादक

श्री अरविन्द श्रीमाली

सह-सम्पादक

राजेश कुमार गुप्ता
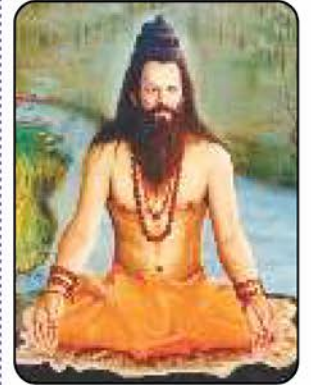
प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक

श्री अरविन्द श्रीमाली

द्वारा

नारायण प्रिण्टर्स

नोएडा

से मुद्रित तथा

'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'

कार्यालय :

हाई कोर्ट कॉलोनी, जोधपुर से

प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति 40/-

वार्षिक 405/-

सम्पर्क

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

नारायण मंत्र साधना विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 (राज.), फोन नं. : 0291-2433623, 2432010, 7960039

WWW address : http:/www.narayanmantrasadhanavigyan.org E-mail : nmsv@siddhashram.me

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस *'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'* पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायें, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु-संत होते हैं, अत: उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आजीवन सदस्यता मान्य है। यदि किसी कारणवश पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़े तो आजीवन सदस्यता भी उसी दिन पूर्ण मानी जायेगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेख योगी या संन्यासियों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अत: इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अत: पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

प्रार्थना

शिष्याणां दुर्गति नाशात त्वं दुर्गेति प्रचक्षसे।
संख्यापयेच्च तद्दिव्यं देहि पौरुषमव्ययम्।।

हे गुरुदेव! आप अपने शिष्यों की दुर्गति को दूर करने वाले हैं, आपका एक दिव्य स्वरूप दुर्गा (शक्तिरूपा) भी है, उस शक्ति को हम अपने भीतर स्थापित कर सकें, ऐसी क्षमता हमें प्रदान करें, आपके आशीर्वाद से हम चैतन्य और आत्मवान बन सकें, जिससे हम आपके मूल स्वरूप को पहचान सकें।

परीक्षा

सद्गुरु कभी किसी की परीक्षा नहीं लेते, क्योंकि वे तो उसी दिन उस व्यक्ति को समझ जाते हैं, जिस दिन वह उनके समक्ष प्रथम बार दीक्षा ग्रहण कर शिष्य बनने को प्रस्तुत होता है। एक अध्यापक प्रथम दिन ही अपने विद्यार्थी से दो-चार प्रश्न पूछकर समझ जाता है, कि उसका शिष्य ज्ञान के किस स्तर पर खड़ा है और उसे किस प्रकार से कहाँ तक ले जाना है, किन्तु वह ऊपर से सामान्य रहते हुए भी उसे शिक्षा देता ही रहता है। परीक्षा वास्तव में गुरु को कुछ ज्ञात कराने के लिए नहीं होती, वरन शिष्य को ही बताने के लिए, उसे आत्मबोध कराने के लिए होती है, जिससे वह अपना स्तर समझ सके।

उत्तम शिष्य तो वही है, जो इस प्रकार से अपनी त्रुटि समझ कर उसे सुधारने का प्रयास करे। केवल 'प्रभु की माया', 'गुरुदेव की लीला' कहने से ही कुछ निर्मित नहीं हो जाता। उसकी आत्मविवेचना के ढंग से विवेचना करनी पड़ती है। गुरुदेव के प्रत्येक संकेत एवं प्रत्येक इंगित का वही अर्थ समझना पड़ता है, जो वे समझाना चाहते हैं, परन्तु अधिकतर शिष्य अपनी सुविधा अनुसार इशारे का अर्थ लगा लेता है।

दूसरी ओर परीक्षा का यह भी तात्पर्य है, कि केवल इसी प्रकार से किसी व्यक्ति के विषय में प्रकट किया जा सकता है, कि वह 'उत्तीर्ण' हो गया है, जिससे भविष्य में मूल्यों के निर्धारण का कोई मापदंड बन सके। शिष्य के लिए इन 'परीक्षाओं' का जितना आंतरिक महत्व है, गुरु के लिए उतना ही बाह्य। जिस प्रकार किसी शिक्षक को अपने उत्तीर्ण होकर अगली कक्षा में जाते शिष्य से कोई मोह नहीं रहता तथा न ही अपने अनुत्तीर्ण छात्र से कोई राग-द्वेष, ठीक उसी प्रकार सद्गुरु भी अपना सतत प्रयत्न बिना किसी राग-द्वेष के करते ही रहते हैं। उन्हें अपना धर्म ही सर्वाधिक प्रिय होता है, कि किस युक्ति से मेरे 'विद्यार्थी' अधिकाधिक उत्तीर्ण हो सकें और वह भी श्रेष्ठता से।

अत: जब हम गुरु चर्चा करें, जीवन की कसौटियों का सामना करें, तब इस बात का गरिमापूर्ण ढंग से उल्लेख करें, कि 'गुरु की परीक्षा' का वास्तविक अर्थ क्या होता है अन्यथा तो ऐसा कहना केवल वाक्-जाल मात्र ही रह जाता है।

पूर्ण वदे पूर्ण मदैव रूपं क्रियात्व रूपं देह स्वरूपं।
ब्रह्माण्ड रूप मपर मचलं मदीयं त्वां देव सेवसेवीशरणं प्रपद्ये।।

एक समय पर पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली जी ने शिष्यों को जीवन का सार समझाते हुए इतने ओजस्वी पूर्ण तरीके से आवाहन किया था, कि वह अपने शिष्यों को कितना कुछ प्रदान कर देना चाहते हैं, उन्हें जीवित जाग्रत ग्रंथ बना देना चाहते हैं, जिससे आने वाला समय उन्हें पढ़ सके, ऐसा नवीन चिन्तन, ऐसी दिव्य वाणी जिसे सुनते ही, पढ़ते ही रोम-रोम में चेतना का संचार हो जाता है, क्योंकि सद्गुरु के वाक्य काल के भाल पर लिखे गए अमिट अक्षर होते हैं, जो सदा सर्वथा अपनी अर्थवत्ता लिए रहते हैं। पूज्यपाद सद्गुरुदेव का वही प्रवचन प्रस्तुत है-

जीवन का अमृत तत्व

हमारा शरीर, जो कि अपने-आप में जड़ स्वरूप है, पूर्ण चैतन्यता युक्त बने और हमारे शरीर के समस्त अंग, इंद्रियाँ, तीसरा नेत्र तथा प्रत्येक अणु-परमाणु अपने-आप में विकसित हो, जिससे कि हम केवल एक छोटे से क्षेत्र में ही सीमित नहीं रहे, अपितु ''अणोरणीयान् महतो महीयान्'' शब्द को पूर्णता देते हुए एक अणु से महान बनने की प्रक्रिया की ओर अग्रसर हो सकें, ...और जीवन में कुछ ऐसा कर सकें, जिसके माध्यम से हम एक अणुवत पैदा होकर भी एक महान रूप में अपने जीवन को पूर्णत्व दे सकें-ऐसा ही चिंतन करना मानव जीवन का मूल उद्देश्य है।

भौतिकता के चक्रव्यूह में उलझ कर मानव का मन और मस्तिष्क अंतर्द्वन्द्व में उलझ जाता है, और तब आदमी निर्णय नहीं ले पाता, वह सही ढंग से सोच नहीं पाता, उसकी विचारधारायें, परस्पर मंथन करने लग जाती हैं। तब अपने स्वार्थ और परमार्थ दोनों की भावनाओं से व्यक्ति यह विचार नहीं कर पाता, कि जीवन में उसे क्या करना चाहिये, क्या नहीं करना चाहिये, क्या उचित है, क्या अनुचित है... और उस समय भी एक ऐसा प्रश्न पैदा होता है, कि क्या हमारा जीवन अपने-आप में एक क्षुद्रमय अस्तित्व व्यतीत करने के लिए है या जीवन को पूर्णता देने के लिये है।

आज हर तरफ विज्ञान हावी हो रहा है, और दूसरी तरफ जो हमारे खून में ज्ञान की गरिमा है, जो ज्ञान के कण हैं, वे बार-बार हम पर हावी हो रहे हैं, कि हमें ज्ञान के क्षेत्र में, व्यक्तित्व के क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करनी है। व्यक्ति पूर्णता की ओर अग्रसर होता है, और वह इसलिये, कि हमारा खून, हमारा रक्त अपने आप में सदियों पुराना है, क्योंकि हम उन ऋषियों की संतान है-जिनको हमने वशिष्ठ कहा है, विश्वामित्र कहा है। निश्चय ही मेरी इन धमनियों में वशिष्ठ का खून प्रवाहित हो रहा है, जो मेरे पिता के शरीर में भी प्रवाहित है, अर्थात् मेरे शरीर में मेरी पचास पीढ़ी पहले का भी खून है, और यह खून निश्चय ही ऋषियों का खून है... और उनका खून है, इसलिए ज्ञानश्चेतना से अनुप्राणित है, इसलिए बार-बार हमारा मन, हमारा ज्ञान उबाल खाता है, कि हमें साधना के क्षेत्र में कुछ करना चाहिए, हमें अवश्य ही कुछ प्रयत्न करने चाहिए।

यदि हम ऐसा नहीं करेंगे, तो हमारा जीवन बुझा-बुझा सा रहेगा। जीवन में जो कुछ पूर्णता होनी चाहिए, वह नहीं होगी, हमें जीवन में जो कुछ प्राप्त करना चाहिए, वह नहीं कर पायेंगे, परन्तु बाहरी सभ्यता हमारे विचारों के ऊपर बहुत अधिक प्रतिकूल दबाव डाल देती है, क्योंकि बाहरी सभ्यता कहती है, कि ये सब ढोंग है, ये सब व्यर्थ है, ये दकियानूसी है, ये पिछड़ापन है।

उनके अनुसार जीवन का एडवान्स क्षेत्र तो यह है, कि हम बहुत अधिक फारवर्ड हो जाए, अपने-आप को एडवान्स कर दें, नाचे-गाएं, खाए-पीएं और जितना हम भोगवादी प्रवृत्ति में जिन्दा रह सकें, रहें...और फिर मर जाएं।

-और आज हम हमारे चारों तरफ यही देखते हैं, क्योंकि उनके जीवन का यह छद्म स्वरूप बाहरी सभ्यता

से आया है, वह चाहे अमेरिकन सभ्यता हो या इंग्लैण्ड की सभ्यता हो। अमेरिकन सभ्यता तो दो सौ पचास वर्ष ही पुरानी है, जबकि ईसाई सभ्यता तो दो हजार वर्ष पहले पैदा हुई–लेकिन ये सभी सभ्यताएँ अपने-आप में पचास हजार वर्ष पुरानी सभ्यता की तुलना नहीं कर सकती, क्योंकि उस सभ्यता का अपने-आप में कोई आधार नहीं है, बेस नहीं है, उस सभ्यता में किसी प्रकार की गरिमा नहीं है।

यदि एक वटवृक्ष की जड़ें पचास फीट नीचे होंगी, तभी पचास फीट पेड़ ऊपर चढ़ सकेगा... और तब वह छाया दे सकेगा। दो हजार लोगों को, मगर एक छोटी सी बेल दो चार लोगों को भी छाया नहीं दे सकती। दो हजार वर्ष पहले की सभ्यता, जो कि अभी आंख ही नहीं खोल सकी है... और वह हम पर हावी होती है, तो इसका कारण केवल भोगवादी प्रवृत्ति है, और वह भोगवादी प्रवृत्ति भी हम साधना में पूर्णता में पूर्णरूप से देख चुके हैं।

चार्वाक हमारे यहाँ एक ऋषि हुए हैं, और उन्होंने कहा–

'भस्मी भूतस्य देहस्य, पुनरागमनं कृतः'

अर्थात् ''यह शरीर तो भस्म होने के लिए है ही, यह शरीर तो खत्म होगा ही, कौन जानता है, कि फिर ऐसी देह मिले या नहीं, और जब शरीर खत्म होगा ही, तो फिर जिन्दगी है, उतनी भोग में व्यतीत की जाय।''

भोगवादी प्रवृत्ति कोई नये सिरे से पैदा नहीं हुई, मगर चार्वाक... केवल एक ही चार्वाक पैदा हो सके, उसका कोई शिष्य पैदा नहीं हो सका, क्योंकि भोगवादी प्रवृत्ति जीवन की नाशवान प्रवृत्ति है... इस भोगवादी प्रवृत्ति में जीवन की पूर्णता नहीं है।

यदि इसमें कुछ सार होता, तो निश्चित रूप से चार्वाक के दो-चार हजार शिष्य होते ही। उनके ऊपर भाष्य लिखा जाता, ग्रंथ लिखे जाते, परन्तु ऐसा कुछ नहीं हुआ, क्योंकि आज हम किसी भी भोग में कितने ही लिप्त हो जाएं, कितना ही ऐश कर लें, किसी भी पराई लड़की के साथ कुछ भी कर लें, कितना ही धन लूट लें, परन्तु जब समाज में बात चलेगी, तो यही कहा जाएगा... नहीं, ये सब नहीं होना चाहिए, दूसरी लड़की के साथ दिखना नहीं चाहिए... क्योंकि हमारे शास्त्र का आधार यह सब नहीं है।

भोगवादी जीवन हमारे जीवन का आधार नहीं है, इसलिए पश्चिमी परम्परा अपने-आप में आगे नहीं बढ़ सकी... यह जो पश्चिम की सभ्यता है, केवल एक छोटे से जीवन के लिये है, इस प्रकार का जीवन बीसवें साल में पैदा होता है और पैतालिसवें साल में समाप्त हो जाता है।

आपने शायद अमेरिका पूरी तरह से देखा नहीं होगा, लेकिन मैंने देखा है। वे बीस साल से साठ साल तक भोगवादी प्रवृत्ति में पूर्ण लिप्त हैं, मगर साठ वर्ष के बाद व्यक्ति ओल्ड पीपल्स होम में पड़े रहते हैं। बेटे उनको देखने के
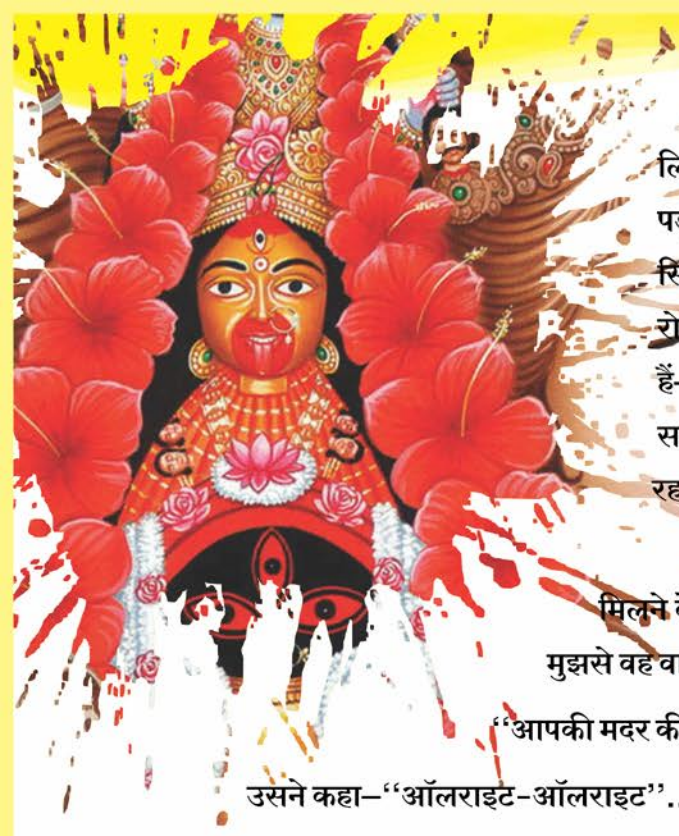
लिए जाते नहीं, बहुओं को यह पता नहीं होता, कि उनका ससुर कहाँ पड़ा हुआ है... और तब वे बहुत दु:खी, परेशान और व्यथित होते हैं, सिसक-सिसक कर, तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। सरकार उनको रोटी, कपड़ा देती है, परन्तु वे पड़े-पड़े मृत्यु की कामना करते रहते हैं—मैं उन देशों के लोगों की बात कर रहा हूँ, जो तुम्हारी नजर में सबसे अधिक सभ्य हैं... अमेरिका, इंग्लैण्ड और फ्रांस की बात कर रहा हूँ।

जब मैं सन् 1983 में अमेरिका में था, तब एक व्यक्ति मुझसे मिलने के लिये आया... यह मैं बिल्कुल आँखों देखी घटना लिख रहा हूँ... मुझसे वह वार्तालाप कर रहा था, ठीक उसी समय एक टेलीफोन आया—

''आपकी मदर की ओल्ड पीपल्स होम में डैथ हो गई है।''

उसने कहा—''ऑलराइट-ऑलराइट''...

और फिर एक टेलीफोन नं. घुमाया... वहाँ मृत्यु संस्कार करने वाले डायरेक्टर होते हैं—ऐसा भी वहाँ एक डिपार्टमेन्ट है।

फोन पर उसने निर्देश दिया—''वहाँ ओल्ड पीपल्स होम में एक बुढ़िया मर गयी है, जो मेरी मदर है, उसका अन्तिम संस्कार करना है, उसे जलाना है, क्योंकि हम हिन्दू हैं। उसको जलाकर आप हमें शाम को सूचना दे दें, और आपका जो भी चार्ज हो, उसका बिल भेज दें।''

मैंने सोचा—कमाल है, वह जो उसकी सगी माँ, जिसने उसको जन्म दिया है, उसको पाल-पोस कर बड़ा किया है, उससे कोई घृणा नहीं हो सकती है, दुश्मनी नहीं हो सकती है... और उसके प्रति ऐसी भावना!

वे अत्यन्त भोगवादी प्रवृत्ति के हैं, उनको जीवन में इस बात का एहसास नहीं है, कि हम कहाँ पर खड़े हैं। अन्तिम संस्कार के बाद वे केवल बिल का भुगतान कर देते हैं और जगह-जगह पर कार्ड भेज देते हैं—मेरी मां मर गयी है, उसकी शांति के लिए प्रार्थना करें।

—बस हो गयी शांति!

यह तो मैं बहुत ही भोगवादी प्रवृत्ति की बात कर रहा हूँ, क्योंकि आप ये जो इतना अधिक भोगवादी प्रवृत्ति की तरफ आकर्षित हो रहे हैं, उसका अंत कहाँ पर है... वह वहाँ पर है, जिसका मैंने आपको उदाहरण दिया है।

हमारे यहाँ जीवन में अपने-आप में भोगवादी प्रवृत्ति हावी नहीं रही, क्योंकि जीवन का एक अंग यदि अर्थ और काम है, तो दूसरा अंग-धर्म और मोक्ष है। जैसा कि शंकराचार्य ने अपने श्लोक में कहा है—

''अणोरणीयान''

—''मैं, अणु से भी अणु अर्थात् अत्यन्त लघु रूप में पैदा हुआ हूँ, इसमें कोई दो राय नहीं।''

शंकरभाष्य के श्लोक के अनुसार–''जब व्यक्ति पैदा होता है, तब उसमें सिर्फ एक कला होती है... और एक कला प्रधान है, अत: वह अपने कार्यों से, अपने प्रयत्नों से, अपने तरीकों से आगे बढ़ता है–ज्ञान की चेतना के माध्यम से, भोग की चेतना के माध्यम से नहीं, क्योंकि भोग अपने-आप में पशुत्व की तरफ ले जाता है।''

पशुओं को यह पता नहीं होता, कि हमारी बेटी कौन है, बहिन कौन है? इस बात का कोई एहसास नहीं होता। वे तो सामने वाली किसी मादा को देखते हैं, वह चाहे जो कोई भी हो, वे उसको भोग्या ही मानते हैं... और आज हमारा जीवन भी एक पशु जैसा ही हो गया है।

शंकराचार्य ने कहा है–यह हमारे जीवन का उद्देश्य नहीं है, क्योंकि हम तो जन्म से ही एक कला प्रधान हैं... और आपको मालूम होना चाहिए कि जब महावीर स्वामी का शरीर शांत हुआ, तब वे थोड़े से कला प्रधान थे, जब बुद्ध का शरीर शांत हुआ, तब वे कुछ कला प्रधान थे, जब राम का शरीर शांत हुआ, तब वे बारह कला प्रधान थे, सोलह कला प्रधान केवल श्रीकृष्ण थे... एक कला से सोलह कला तक की परिणति अपने-आप में अणु से महान बनने तक की यात्रा है। अणु कहाँ पर है–एक कला पर, और पूर्णता कहाँ पर है–सोलह कला पर, इसलिए सोलह कला पर पहुँचने की क्रिया पूर्णता है। अब हम बीच में कहीं पर भी रुक सकते हैं–भगवान बुद्ध की स्टेज पर रुक सकते हैं, इससे पहले की स्टेज पर भी रुक सकते हैं, और सिर्फ एक कला लेकर भी मर सकते हैं।

जिसको हम साबुन लगाते हैं, कपड़े पहिनाते हैं, संवारते हैं, सुन्दर अलंकरणों से अलंकृत करते हैं, उस शरीर को चीर-फाड़ करके अगर देख लिया जाए, तो पाएंगे कि उसमें केवल मांस है, उलझी हुई नाड़ियाँ हैं, रक्त है, श्लेष्म है, थूक है, लार है, मल है, मूत्र है, इसके अलावा इस शरीर में और कोई विशेषता नहीं है। विशिष्ठता तो इस बात में है, कि हम इस मल, मूत्र से भरे शरीर को क्रिया योग के माध्यम से वर्तमान जीवन में ही पूर्णता दे सकें, और इसी जीवन को पूर्ण रूप से चेतनायुक्त बनाते हुए, अपने जीवन में पूर्ण सामर्थ्य युक्त हो सकें।

–हमारे जीवन का उद्देश्य क्या है?

–इसको हम कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

परिश्रम करने से, और बिजनेस करने से इस उद्देश्य और लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। आप लखपति और करोड़पति तो बन सकते हैं, परन्तु वह जीवन का एक अंग है, जीवन की पूर्णता नहीं है। जीवन की पूर्णता पांच-सात पुत्र पैदा करने में भी नहीं है, न ही जीवन की पूर्णता बहुत सुन्दर भड़कीले वस्त्र धारण करने में ही है...''जीवन की पूर्णता तो अन्दर जो आनन्द का ज्वालामुखी है, जिसको अमृत कुंड कहा गया है, उसे जाग्रत कर पूरे शरीर में उसके सत्व को फैला देने की क्रिया को कहते हैं।''

यदि आपने 'रामायण' पढा हो, तो उसमें जब राम और रावण का युद्ध होता है, तो राम अपने सभी अस्त्र-शस्त्र प्रयोग करके निराश हो जाते हैं और एहसास करते हैं, कि रावण की मृत्यु नहीं हो सकती, पूरे शरीर को बींधने के बाद भी रावण मर नहीं रहा, तो वे विभीषण को पास बुलाते हैं, और विभीषण से पूछते हैं–''क्या कारण है, रावण मर क्यों नहीं रहा है? विभीषण ने कहा––

स: मृत्योर्वतेयं अमृत कुण्ड रूपं ज्ञानो वतां पूर्ण मदैव रूपं।
रमो प्रचेयं परितं स: रूपं न मार्णतत्वं मरणं त्वदेवं।।

–''राम आप रावण को नहीं मार सकेंगे। आपके अस्त्र-शस्त्र और आपकी युद्ध कला, सब अपने-आप में कोई अर्थ नहीं रखते, इनके माध्यम से आप रावण को कभी समाप्त नहीं कर सकते, क्योंकि रावण का अमृत कुंड जाग्रत है, और जब अमृत कुंड जाग्रत है, तो जहाँ पर भी नुकसान होता है, वहाँ अमृत तत्व पहुँच करके उसे पूर्ण कर देता है... मृत्यु तो हो ही नहीं सकती, क्योंकि जहाँ अमृत है, वहाँ मृत्यु नहीं हो सकती... यदि आप रावण को मारना चाहते हैं, तो बहुत जरूरी है, कि पहले आप उसके अमृत कुंड को समाप्त करें।''

राम अपने-आप में पूर्ण पुरुषोत्तम होने के बावजूद भी, बारह कला पूर्ण होने के बावजूद भी इस रहस्य को स्वत: नहीं जान सके, क्योंकि चार कला तो शेष थी ही। सोलह कला प्रधान व्यक्ति प्रत्येक प्रश्न का उत्तर जान सकता है, एहसास कर सकता है, देख सकता है... यही अन्तर है एक साधारण व्यक्ति और एक सोलह कला पूर्ण व्यक्ति में... राम की मर्यादा को मैं न्यून करके नहीं देख रहा हूँ...अपितु वास्तविकता बता रहा हूँ।

वाल्मिकी स्वयं कह रहे हैं–मैं आपको प्रणाम करता हूँ, राम! आप बारह कला प्रधान हैं।

मगर बारह और सोलह में पूरी चार कलाओं का अन्तर है, और वे चार कलायें राम पूर्ण नहीं कर सके... फिर भी वे अपने समय के अद्वितीय पुरुष थे, और आज वे भगवान राम हैं। उस समय तो उन्होंने उतनी ही दु:ख और वेदना झेली, जितनी कि आप और हम, एक आम आदमी झेलता है।

–रावण पर अपने अस्त्रों का कोई प्रभाव न देख कर राम ने उसी क्षण युद्ध भूमि में भगवान शिव की स्तुति की... यह इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है, इसको समझने की जरूरत है... उन्होंने युद्ध भूमि लंका में एक शिवलिंग बनाया–यदि कभी आप कोलम्बो गये हों, तो देखा होगा, कि जैसा रामेश्वरम् में शिवलिंग यहाँ पर है, ठीक वैसा ही वहाँ पर भी है–उसी युद्ध भूमि में राम ने शिवलिंग बनाया, और पूजन करके भगवान शिव से प्रश्न किया––

पाशुपतेयं पूर्ण मदैव रूपं शिवत्व रूपं सवितं सदेयं।
प्राणम्यं वन्दनं, चिन्तन वदेयं स: हन्तनं हन्तनं हन्तनं व:।।

–''मैं हन्त हूँ, मैं मर जाऊंगा इसमें कोई दो राय नहीं, और पराजय सूर्यवंश को समाप्त कर देगी, क्योंकि यह युद्ध नहीं है, अपितु दो सभ्यताओं का युद्ध है। इन दो सभ्यताओं में आसुरी सभ्यता प्रभावी हो जायेगी, और इस युद्ध

में यदि मैं समाप्त हो गया, तो अपने पूरे परिवार को एक कभी न मिटने वाला कलंक देकर चला जाऊंगा, क्योंकि मैं समझ नहीं पा रहा हूँ, कि किस प्रकार से इस अमृत कुंड को सुखाऊं?''

—और उसी समय भगवान शिव उनको जो उत्तर देते हैं, वही उत्तर इस पुस्तक का आधार है। शिव कह रहे हैं——

त्वं पूर्णत्व प्रोजाति अमृत कुण्डोद्भवेत्।
ज्ञातव्यं हे राम! त्वं विजयी भव निश्चयः।।

अर्थात् ''तुमने विश्वामित्र से युद्ध कला तो जरूरी सीखी, परन्तु तुमने 'ब्रह्म दीक्षा' प्राप्त नहीं की। तुम युद्ध में तो पूर्ण निष्णात हुए, परन्तु तुम्हें इस बात का ज्ञान नहीं है, कि मूलाधार के ऊपर जो अमृत कुंड है, उस अमृत कुंड को प्राप्त किये बिना तुम जीवन में पूर्णता नहीं पा सकते। अवश्य ही तुम मृत्यु को प्राप्त हो जाओगे, आज नहीं तो दस सहस्र वर्ष बाद, मगर अपयश के बाद, क्योंकि जीवन में जो कुछ प्राप्त होना चाहिए, वह रावण ने तो किया, मगर तुम नहीं कर सके, और उस अमृतकुंड को समाप्त करके ही तुम उसको मृत्यु दे सकते हो...।''

यह एक घोषणा है, यह एक चिन्तन है, यह एक विचार है।

वाल्मिकी रामायण में शिव स्वयं कहते हैं—''राम! तुम पूर्ण नहीं हो। तुम मर्यादा पुरुषोत्तम तो हो, तुमने मर्यादा तो रखी है... मर्यादा यह, कि मुझे यह काम करना चाहिए, और यह काम नहीं करना चाहिए, अगर मेरे पिता ने मुझे वनवास दिया है, तो मुझे वन में ही रहना चाहिए, नगर में नहीं जाना चाहिए—और इसलिए वे लंका में नहीं गये... मर्यादा पुरुषोत्तम तो रहे, मगर कुण्डलिनी चक्र को जाग्रत करके नाभि में अमृत कुंड की स्थापना करने की प्रक्रिया को, उस अमृत को सहस्रार से प्राप्त कर पुनः सहस्रार एवं सम्पूर्ण शरीर तक पहुंचाने की क्रिया को, जिससे एक अणु पूरे एक हजार अणुओं में परिवर्तित हो जाता है, उस क्रिया को, राम! तुमने नहीं सीखा, और उसको न सीखने के कारण से ही तुम आज पश्चात्ताप कर रहे हो, मृत्यु की ओर अग्रसर हो रहे हो।''

—और फिर शिव से प्राप्त अग्नि बाण द्वारा राम ने रावण के शरीर स्थित अमृत कुंड को सुखाकर उसको समाप्त किया।

यह तो इतिहास की एक घटना है... और मैं इतिहास के किसी पन्ने पर नहीं जा रहा हूँ, मैं तो यह समझा रहा हूँ, कि अगर तुम मृत्यु को समाप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें उस अमृत कुंड को पहिचानने की जरूरत है। उस अमृत कुंड को ऊंचा उठाकर पूर्ण सहस्रार तक पहुंचाने, और पुनः सहस्रार के उन सौ हजार अणुओं को अमृत से सिक्त होने की क्रिया को 'क्रिया योग' कहते हैं।

...और यह पूर्णता बारह कलाओं से शुरू होकर सोलह कलाओं पर समाप्त होती है। जब व्यक्ति बारह कला

तक पहुँच जाता है, तब गुरु उसको समझाता है, कि तुम अमृत कुंड में अमृत एकत्र करके, उसको ऊँचा उठाने की क्रिया करो। अभी तो तुम्हें यह मालूम ही नहीं, कि अमृत कुंड कहाँ है?

–किस प्रकार से एक-एक बूंद करके अमृत एकत्र होता है?

–किस तरीके के ज्ञान-प्रवाह से उस अमृत को कुंड में एकत्र किया जाता है?

–उस अमृत का ऊर्ध्वीकरण कैसे होता है?

–उसका वीरोचन कैसे किया जाता है?

–उसे सहस्रार में विस्तृत कैसे किया जाता है?

– सहस्रार से पूरे शरीर में कैसे प्रवाहित किया जाता है?

यह अपने-आप में कुण्डलिनी का एक पूरा परिच्छेद है, और इस पूरे क्रम को प्राप्त करने के लिये क्रिया योग को सीखना ही पड़ेगा।

जीवन की पूर्णता सोलह कला प्राप्त होना है। सोलह में से पन्द्रह तो अंधकार में हैं, केवल एक कला हमारे पास में है, और जब पन्द्रह कलाओं का अंधकार पक्ष हमारे ऊपर हावी है, तो–हम किस प्रकार से ईश्वर के दर्शन कर सकेंगे?–हम जीवन के पाप कहाँ से काट सकेंगे?–हम जीवन की पूर्णता कैसे प्राप्त कर सकेंगे?–जब कि हमने जीवन की यात्रा का मात्र एक चरण ही पार किया है। उस एक कला से आगे बढ़ते हुए दूसरी कला प्राप्त करें, तीसरी कला प्राप्त करें...और यदि व्यक्ति जीवन में तीसरी कला प्राप्त करते हुए मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, तब भी उसके साथ ये संस्कार बने रहते हैं, मिटते नहीं हैं... और जब व्यक्ति पुन: जन्म लेता है, तब उसके जीवन में तीन कलाएं तो होती ही हैं। यद्यपि वह उस समय भी एक कला प्रधान ही होता है, किन्तु थोड़ा सा भी साधना में आगे बढ़ जाए, तो वह तुरन्त तीन कलाएं प्राप्त कर लेता है।

–मैं आपको बता रहा हूँ, कि साधना का क्षेत्र, स्तर क्या है?

– यदि व्यक्ति में पूर्ण क्षमता है, तो वह साधना करता हुआ एक जन्म में ही पूरी कलाएं प्राप्त कर सकता है... प्राप्त कर सकता है, यदि व्यक्ति के पास कोई ऐसा गुरु है, जिसको इस बात का ज्ञान हो, कि इस व्यक्ति का विकास कहाँ तक है–यह तीसरी कला प्रधान है या पांचवी कला प्रधान है। लेकिन व्यक्ति कितनी भी उच्चता पर पहुंच जाएं, उसके चेहरे पर कोई अन्तर नहीं आयेगा, चेहरा और शरीर तो वैसा ही रहेगा, पर बौद्धिकता में अन्तर आ जायेगा। एक कला से आठ कला युक्त होने में बाहरी रूप में कोई चेन्ज नहीं आयेगा, किन्तु उसमें साधनात्मक डिफरेन्स तो आ ही जायेगा। अणु से पूर्णता तक, एक कला से सोलह कला तक पहुंचने का जो रास्ता है, उस रास्ते को क्रिया योग कहा जाता है।

–क्रिया योग क्या है? किसी ग्रंथ में इस प्रकार का विवेचन नहीं किया जाएगा, कि क्रिया योग का अर्थ क्या है?

मैं आपको समझा देता हूँ–''हम निष्क्रिय हैं... हम ये जो खाना खा रहे हैं, दौड़ रहे हैं, बच्चे पैदा कर रहे हैं, यह सक्रियता नहीं है, पशुता है... सक्रियता तो एक कला से सोलह कला तक पहुँचने में है, और वह रास्ता बिल्कुल अलग है, उस रास्ते पर तीव्रता से बढ़ने को क्रिया योग कहते हैं।

–मैंने यह कहा, कि हम सक्रिय नहीं, निष्क्रिय है, और निष्क्रिय इसलिए कि हमारा पूरा मस्तिष्क... जो कुछ हमारे पास है, उसका अमेरिका में सर्वेक्षण करने के बाद वहाँ के वैज्ञानिकों एवं डॉक्टरों ने यह निर्णय लिया, कि व्यक्ति के पूरे मस्तिष्क में से केवल दस प्रतिशत भाग ही क्रियाशील है, नब्बे प्रतिशत मानस चेतना मृतवत है, जिसका व्यक्ति प्रयोग नहीं कर पा रहा है, उसको ज्ञान नहीं है, कि बाकी दिमाग का प्रयोग किस प्रकार किया जाए, इसका तरीका क्या है? इसको हम कैसे उपयोग में लें? जब मुझे पंखा चलाने का ज्ञान नहीं है, तो पंखा बंद ही पड़ा रहेगा, फिर उसका होना न होना बराबर है।

हमारे मस्तिष्क में एक सहस्रार ग्रंथि है। ग्रंथि का मतलब है–मांस पिण्ड, ग्रंथि का मतलब है–नाड़ियों का एक गुच्छा। यदि मैं आगे से हाथ काटूं, तो यहाँ पर भी नाड़ियों का एक गुच्छा होगा, यहाँ सभी मांस पिण्ड ही हैं... और इन मांसपिण्डों पर हमारा कोई कण्ट्रोल है ही नहीं।

आप कान को क्यों नहीं हिला पाते? क्योंकि वह मांस पिण्ड अपने-आप में निष्क्रिय है। उसके अन्दर का जो गुह्य भाग है, उसका प्रयोग तो हो रहा है, मगर कान की मांसपेशियों का प्रयोग नहीं हो रहा। अगर शरीर का कण्ट्रोल आपके हाथ में है, तो जरा सोचिए, आप उंगली हिला सकते हैं, पर कान क्यों नहीं हिला पाते? सीना क्यों नहीं हिला पाते?

–आप नहीं हिला सकते, क्योंकि शरीर आपके कण्ट्रोल में है ही नहीं, यह तो केवल बाहरी आवरण है।

शंकराचार्य के इसी श्लोक में अणु से महियान तक की यात्रा में उन्होंने बताया है–इस शरीर में एक सौ आठ इंद्रियाँ हैं... और मंत्र जप की माला में भी एक सौ आठ मनके होते हैं, ये एक सौ आठ मनके क्यों रखे गये? इसलिए कि इस माला के माध्यम से हमें ज्ञात हो सके, कि हम साधना के क्षेत्र में बैठे हैं, और साधना के क्षेत्र में हमें कहाँ बढ़ना है?

–''वहाँ जहाँ हमें समस्त एक सौ आठ उपनिषदों का निचोड़ प्राप्त हो सके... एक मनका घुमाते हैं, तो एक उपनिषद् पूर्ण होता है।''

कुल एक सौ आठ उपनिषद् हैं, और हमारे शरीर की एक कुल ग्रंथियाँ भी एक सौ आठ हैं, इन एक सौ आठ ग्रंथियों में अधिकतर ग्रंथियाँ सुप्त हैं... मैंने, आपने और दुनियां भर के लोगों ने तो कहा है, कि पांच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं, और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, दस तो हमको मालूम हैं कर्मेन्द्रियों में हाथ पैर, जिह्वा, आँख, नाक, कान हैं, इनका कार्य है केवल सूंघना, देखना, सुनना, स्पर्श करना, अनुभव करना और पांच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं।

मगर शंकराचार्य और पुलस्त्य यह कह रहे हैं, कि एक सौ आठ ग्रंथियाँ हैं। एक सौ आठ में से यदि दस इन्द्रियों का ज्ञान है, तो उसके बाद अट्ठानवे इंद्रियाँ कहाँ चली गईं?

–उनका आपको ज्ञान नहीं है।

जिनका ज्ञान है, वो मैंने आपको बता दिया है। हाथ का ज्ञान है, आप हाथ हिला देते हैं, परन्तु आपको केवल दस परसेण्ट ही ज्ञान है, और जब आपको अट्ठानवे इंद्रियों की जानकारी नहीं है, तो आप उनका उपयोग भी नहीं कर सकते... और नहीं कर सकते, इसलिए आप पैदा होते हैं और मर जाते हैं।

अब आप पैदा तो हो गये, पर आपको मालूम नहीं, कि आपको पहुँचना कहाँ पर है? और मालूम इसलिए नहीं, क्योंकि आपके पास कोई गुरु ही नहीं हैं। अगर हैं, तो ऐसे जिनको खुद ही ज्ञान नहीं, वे तो खुद पांच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ लिये बैठे हैं–बच्चा राम-राम बोलो, सदा सत्य बोलो–अब राम-राम बोलो, और सदा सत्य बोलो से तो उस यात्रा की पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकते।

–क्योंकि सहस्रार को जाग्रत करना ही पूर्णता है। एक हजार नाड़ियों से मिलकर जो गुच्छा बना है, वह सहस्रार है। अगर आपने मधुमक्खियों का छत्ता देखा होगा, तो ठीक वैसे ही सहस्रार होता है। आपको ज्ञान नहीं है, कि आपका मन कहाँ पर है? दिल तो सीने में लेफ्ट साइड में पड़ा है, यहाँ तक तो विज्ञान पहुँचा, मगर... मेरा मन कह रहा है, कि मौसम बहुत सुहावना है... मेरा मन कह रहा है, कि आज मैं बगीचे में घूम कर आऊँ... हृदय नहीं कह रहा, हृदय तो दूसरी चीज है उसका काम तो धड़कना है। मन का काम है–भावनाओं को उजागर करना, कि यह मुझे अच्छा लगता है या बुरा लगता है।

–और मैं पूछ रहा हूँ उन डाक्टरों से, कि यह मन कहाँ पर है, मुझे निकाल कर दिखाएं तो सही।

परन्तु उनका कहना है–नहीं, मन तो होता ही नहीं।

जब मन है ही नहीं, तो फिर मन ऐसा क्यों कह रहा है, कि मुझे यह पसन्द है। वास्तव में उनको खुद ही ज्ञान नहीं है, कि यह मन कहाँ पर है? उनको खुद ही ज्ञान नहीं है, कि ये जो मस्तिष्क में ऊपर सहस्र छत्तों की तरह बना हुआ है, वह सहस्रार क्या चीज है?

एक लुहार का बेटा आसानी से एक लोहे की कील बना देता है। यदि मैं लोहे की कील बनाऊंगा, तो हाथ

कुचल लूंगा, या हाथ काट लूंगा, पर लोहे की कील मुझसे नहीं बन पाएगी, पर उसे लुहार बना देगा।

अब जो ज्ञानी है, वही तो आपको बताएगा, कि मन कहाँ है? प्राचीन काल में पूर्वजों को यह ज्ञान था, उनका पूर्ण सहस्रार जाग्रत था, इसलिये उनके बेटों को भी ज्ञान था, और इसलिए उस समय जो ऋषि पैदा हुए, उनके पुत्र भी ऋषि ही हुए। ऋषियों को हमने त्रिकालज्ञ कहा, तीनों लोकों को देखने वाला कहा... और काल क्या होता है?

'कालोह्ययं निर्विधाः विपुश्च सत्यः'

''काल का अर्थ है–जो क्षय नहीं हो सके, जिसको समाप्त कर ही नहीं सकते वह काल है।''

मैं यहाँ ठेठ उस दीवार तक देख लेता हूँ, क्योंकि बीच में कहीं कोई बाधा नहीं है, इसलिए मेरी दृष्टि वहाँ तक पहुँच रही है.. और काल का भी कोई अवरोधक नहीं होता। काल अपने-आप में एक पूर्ण इकाई है, हम उसके टुकड़े नहीं कर सकते। हवा के टुकड़े नहीं हो सकते, यह अलग बात है, कि आप हवा को अलग-अलग गुब्बारों में भर दें। वो तो आप भर रहे हैं, पर हवा अपने आप में विभाजित नहीं हो सकती। पानी के टुकड़े नहीं किये जा सकते, उसी प्रकार से काल के भी टुकड़े नहीं किये जा सकते। समय तो अपने-आप में पूर्ण एक पट्टी है, इस किनारे पर खड़े होकर दूसरे किनारे पर दिखाई देगा, जरूरत है तो क्षमता की।

–और काल तो अत्यन्त लम्बा-चौड़ा है।

आज से पच्चीस हजार वर्ष की जो घटना है, और जो पच्चीस हजार वर्ष बाद की घटना है, वह पूरी एक इकाई है, उसको काल कहते हैं। यदि एक सिरे से हम देखें, काल का दूसरा सिरा दिखना ही चाहिए। व्याकरण में समझाया जाता है, कि एक भूतकाल होता है, एक वर्तमान काल होता है, तथा एक भविष्य काल होता है। किसी से पूछें–काल कितने प्रकार के होते हैं? तो वह कहेगा तीन तरह के होते हैं, और हमने यह सब व्याकरण में पहली-दूसरी क्लास में पढ़ा है।

मगर मैं कहता हूँ, कि वर्तमान काल जैसी कोई चीज है ही नहीं। काल तो केवल दो ही होते हैं–भूतकाल और भविष्य काल। जो कुछ बीत चुका वह भूतकाल है। इस समय ठीक तीन बजे हैं, तो दो बजकर उनसठ मिनट और उनसठ सैकण्ड भूतकाल है। जैसे–एक सैकण्ड पहले की घटना भूतकाल है, और एक सैकण्ड आगे की घटना भविष्य काल है। वर्तमान तो अपने-आप में दोनों कालों को पहिचानने की क्षमता है... दोनों कालों के बीच में जो खड़ा है, वह मनुष्य है, एक मनुष्य ही खड़ा हो सकता है दोनों कालों के बीच में, पशु नहीं। पशु पीछे का भी चिन्तन नहीं कर सकता और आगे का भी चिन्तन नहीं कर सकता, इसलिए तीसरा काल है ही नहीं।

तीसरा, जिसे हम वर्तमान काल कहते हैं, उसको 'काल पुरुष' कहा गया है।

काल पुरुष मनुष्य को कहा गया है, भगवान को कहा गया, क्योंकि वही उस क्षण विद्यमान रहता है, जिसे

हम वर्तमान कहते हैं। उसी में क्षमता है आगे और पीछे देख सकने की। मैं देख सकता हूँ, कि भविष्य क्या है और भूत क्या है... मगर दुर्भाग्य तो यह है, कि काल के देख सकने की क्रिया हमें ज्ञात नहीं, इसलिए हमें भूतकाल का भी ज्ञान नहीं। एक घण्टे बाद क्या होगा हमें ज्ञात नहीं, और आज से सौ साल पहले हमारे साथ क्या घटना घटी, वह भी हमें ज्ञात नहीं। ऐसा इसलिए, कि उस ग्रंथि का उपयोग करना हम भूल गए, जिसके माध्यम से यह अनुभव हो सकता है। आँख एक ग्रंथि है, इसके माध्यम से हम देख सकते हैं, और सहस्रार भी एक ग्रंथि है, जिसके माध्यम से हम भूतकाल और भविष्यकाल को देख सकते हैं। उस ग्रंथि में अपने-आप में जड़ता आ चुकी है, क्योंकि उस ग्रंथि में स्पन्दन नहीं रहा।

–यदि मेरे घुटने बिलकुल खराब हो जाएं, तो मैं चल नहीं पाऊंगा। जोड़ों में बहुत ज्यादा दर्द होता है, तो लोग मुश्किल से चल पाते हैं, अगर साल दो साल निष्क्रिय पड़े रहें, तो वे चल भी नहीं सकते, क्योंकि चलने से सम्बन्धित ग्रंथि काम करना बन्द कर देगी।

–इस प्रकार शरीर के जिस किसी अंग का उपयोग नहीं किया जाए, वह धीरे-धीरे काम करना बन्द कर देगा, निष्क्रिय हो जाएगा।

आपने हठ योगियों के बारे में तो सुना ही होगा, एक हठयोगी पन्द्रह साल बिलकुल हाथ ऊपर किए हुए खड़ा रहा... और चिड़िया ने वहाँ घोंसला बनाया, अंडे दिए, और बच्चे, चिड़ियां बनके उड़ भी गये... परन्तु उसने पन्द्रह साल तक हाथ यों ही रखा, नीचे नहीं उतारा, और जब पन्द्रह साल के बाद हाथ नीचे उतारने की कोशिश की, तो हाथ नीचे नहीं उतरा, क्योंकि हाथ की ग्रंथि, उसकी मांसपेशियां जाम हो गयी, फिर उसका जिन्दगी भर हाथ ऐसे ही रहा, मरने पर भी हाथ वहीं रहा, क्योंकि हाथ से सम्बन्धित इंद्रियों ने भी वर्क करना बन्द कर दिया था।

–और हमने सहस्रार ग्रंथि का उपयोग नहीं किया, तो उसने भी वर्क करना बन्द कर दिया है, जिन्दा तो है मगर वह एक्टिव नहीं है। मैंने कहा, कि नब्बे प्रतिशत हमारा मस्तिष्क एक्टिव नहीं है। जब कोई ग्रंथि कार्य नहीं करती, तो उससे सम्बन्धित कार्य भी हम नहीं कर पाते। आंख फूट जाएगी, तो हम देख नहीं पाएंगे।

सहस्रार ग्रंथि में कोई स्पन्दन नहीं है, इसलिए वह देख नहीं पा रही है। ज्योंही सहस्रार जाग्रत होता है, तो सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। उसका काम ही है, पूरे भूतकाल और भविष्यकाल को देख लेना।

पांच हजार साल पहले शंकराचार्य कहाँ घूमे, कहाँ रहे–हम इसके माध्यम से देख सकते हैं, और इसी तरह से हम भविष्य को भी देख सकते हैं, कि मैं दो साल बाद कहाँ जाऊँगा। इस पूरे जीवन को पूर्ण समग्रता के साथ देखने की जो क्रिया है, वह सहस्रार ग्रंथि के माध्यम से ही सम्भव है।

इसी सहस्रार ग्रंथि अथवा छठी इंद्रिय को जाग्रत करने की प्रक्रिया को क्रिया योग कहते हैं। मनुष्य का उस ग्रंथि से संयोग करने को क्रिया योग कहते हैं।
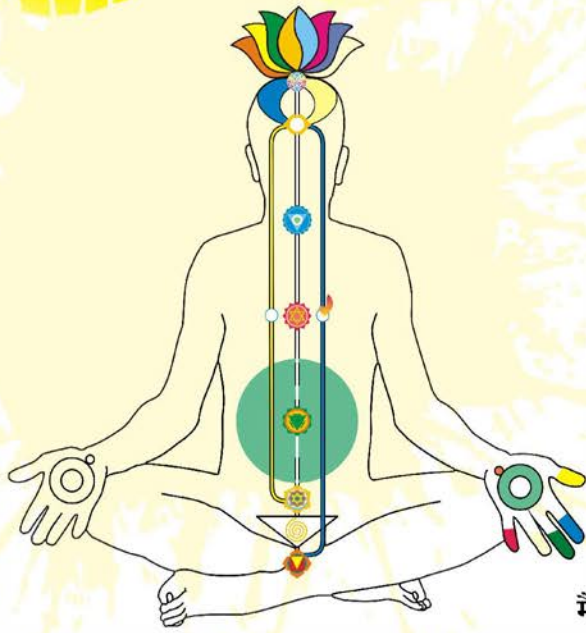
अब आप पूछेंगे–''क्या जरूरत है इस ग्रंथि को जाग्रत करने की?''

तो मैं पूछता हूँ–''आपको आँख की क्या जरूरत है? आप लकड़ी के सहारे भी चल सकते हैं, फिर आपको आँख की जरूरत ही क्या है?''

–सहस्रार जाग्रत नहीं है, इसीलिये तो हम दु:खी रहते हैं, कि भगवान जाने चार महीने बाद क्या होगा?

–परन्तु भगवान कौन सा?

हम तो खुद कह रहे हैं–''अहं ब्रह्मास्मि'', मैं ब्रह्म हूँ, और मैं सब कुछ जानता हूँ, तो भगवान फिर कौन सा है?

–और यह ऊहापोह की स्थिति इसलिए है, क्योंकि जो हमारा चेतनायुक्त स्थान है, वह अपने-आप में सक्रिय नहीं है। हमारे शरीर के कई अंग सक्रिय नहीं हैं–वे जिन्हें हम मूलाधार, स्वाधिष्ठान, आज्ञा चक्र कहते हैं, उनमें निहित शक्ति अभी सुप्तावस्था में है।

आप पूछेंगे–क्या मूलाधार होता है गुरुजी?

मैं आपसे पूछ रहा हूँ–क्या हृदय होता है? क्या अनुभव किया जा सकता है, कि हृदय है?

–यदि यहाँ चीरा लगाएं, तो देख सकते हैं।

–यदि ऑपरेशन द्वारा चीरा लगाएं, तो जैसा मूलाधार का आकार बताया है, बिलकुल वैसा ही नाड़ियों का गुच्छा दिखाई पड़ता है...अब उसको स्पन्दित करने की जरूरत है, जब उसको छेड़ेंगे, तो वह अपने-आप जाग्रत होगा... और जाग्रत होगा, तो उसका जो काम है, वह अपने-आप करने लग जाएगा। उस आदमी को एहसास होगा, कि पिछले जीवन में तो यह था ही, और इस जीवन में भी यह है, और आगे भी यह होगा। ये कृष्ण खड़े हैं, यह द्वारिका है–ये सब प्रक्रिया क्या है? इन सारी घटनाओं को देख पाने की क्षमता को त्रिकालदर्शिता कहते हैं। एक काल तो मैं हूँ ही, एक भूतकाल और एक भविष्य काल इन तीनों को मिलाकर मैं काल पुरुष सिद्ध होता हूँ।

इन सारी ऐक्टिविटी को हिन्दी में क्रिया कहते हैं, और इन सारी क्रियाओं से मनुष्य को जोड़ने की प्रक्रिया को क्रिया योग कहते हैं।

इस क्रिया योग के माध्यम से हम एक कला से छलांग लगाकर सीधा पांचवी कला पर पहुँच सकते हैं, दूसरी, तीसरी कला पर रुकने की जरूरत नहीं है।

क्रिया योग सिद्ध होने का मतलब है, आप पांचवी कला पर हैं। सोलहवीं कला तो दूर है, परन्तु आप यदि पांचवी कला पर जाना चाहें, तो क्रिया योग का अभ्यास करिये, और यदि आपको सोलहवी कला पर जाना है, तो भी रास्ता यही है क्रिया योग का। कुण्डलिनी जागरण के माध्यम से, और इसके माध्यम से... जब हम आगे बढ़ेंगे, तो अपने-आप में जीवन की पूर्णता प्राप्त हो जाएगी।

महात्मा गाँधी जैसे व्यस्त व्यक्तित्व ने भी स्वामी योगानन्द से प्रार्थना की कि ''यदि आप प्रसन्न हैं, तो कृपया मुझे क्रिया योग सिखा दीजिए।''

और वशिष्ठ ने भी यही इच्छा की अपने गुरु से–''ब्रह्मा! यदि आप प्रसन्न हैं, तो मुझे क्रिया योग सिखा दीजिए।''

शंकराचार्य ने कहा है—

''पूर्वर्द्धा पूर्व भवेत पूर्व सः क्रियां पूर्वदमेव तुल्यं''।

क्रिया योग जैसी कोई अन्यतम विद्या नहीं है, परन्तु आज क्रिया योग को समझाने वाले व्यक्तित्व नहीं है। क्रिया योग पर सुनने वाला व्यक्ति तो हो सकता है, पर क्रिया योग पर बोलने वाला, समझने-समझाने वाला व्यक्तित्व दुर्लभ है।

–क्योंकि पूरे एक सौ आठ उपनिषदों का मंथन करके जिस रस को निकालते हैं, उसको क्रिया योग कहते हैं।

पूज्यपाद सद्गुरुदेव डॉ. नारायणदत्त श्रीमालीजी

(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंदजी)

पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है,क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में संग्रहित है।

छिन्नमस्ता यंत्र

स्थापन विधि

किसी भी शुक्रवार को प्रातःकाल इस यंत्र को स्थापित कर दें। उत्तर दिशा की ओर मुंह कर पहले 108 बार 'ॐ नमः शिवाय' का जप कर फिर 108 बार नित्य 30 दिनों तक निम्न मंत्र का जप करें और अगले दिन यंत्र को शिव मन्दिर में चढ़ा दें या नदी, तालाब में विसर्जित कर दें।

मंत्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं वजवैरोचनीये
हूं हूं फट स्वाहा।

भगवती जगदम्बा का कोई भी स्वरूप हो वह हमेशा हमारे जीवन में मां की भांति बच्चे का लालन-पालन ही करती है। जहाँ महाविद्याओं में एक ओर शक्ति का अजस्र प्रवाह रहता है, वहीं दूसरी ओर प्रेम, ममता व करुणा जैसे भावों की समाहिती होती है। माँ छिन्नमस्ता साधना भी इसी श्रेणी की साधना है, जिसका समाज में भ्रमवश अत्यन्त सीमित ज्ञान ही है। लोगों में भय रहता है कि साधना में चूक होने पर यह देवी हमें नुकसान पहुँचा देगी परन्तु ऐसा नहीं है यदि आप भय बाधा, शत्रु बाधा, तंत्र बाधा आदि से परेशान हैं तो इस यंत्र को घर में स्थापित कर प्रतिदिन 108 बार 'ॐ नमः शिवाय' का जप करें एवं फिर दी गई विधि के अनुसार जप कर आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं कि यह यंत्र कैसे आपके जीवन की इन कठिनाइयों में प्रभावशाली है।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को भी बनाकर प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 405/- + 45/- डाक खर्च = 450/- Annual Subscription 405/- + 45/- postage = 450/-

महायोगी त्रिजटा के नाम से पूरा भारतवर्ष परिचित है,
उनकी साधनाओं में नित्य नये प्रयोग होते रहते हैं
और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों का उनके पास अपूर्व खजाना है, जो कि अपने आप में सिद्ध है
और उनमें तुरन्त प्रभाव उत्पन्न करने वाले मंत्र-तंत्र और साधनाएं हैं

श्री ललिताम्बा सिद्धि

कई वर्षों से मेरे मन में ललिताम्बा साधना सिद्ध करने की भावना प्रबल थी

क्योंकि यह एक गोपनीय साधना है और अभी तक प्रकाश में नहीं आ सकी, यद्यपि कई तंत्र ग्रन्थों में इस साधना की विवेचना की गई है और बताया गया है कि यह संसार की अद्वितीय साधना है

नीचे मैं विभिन्न ग्रन्थों में इस साधना के बारे में जो कुछ लिखा गया है, उसे स्पष्ट कर रहा हूं।

1. **'गोरख संहिता'** में बताया गया है, कि ललिताबा साधना अत्यन्त गोपनीय है। इस साधना को भूल कर भी अपने पुत्र या शिष्य को नहीं देना चाहिए।
2. **'शंकर भाष्य'** में कहा गया है, कि ललिताम्बा साधना सिद्ध करने के बाद साधक पूरे संसार में विजयी होता है और **'ललिताम्बा यंत्र'** को धारण करने के बाद वह जिस व्यक्ति से भी मिलता है, उसको प्रभावित करता है और उस पर विजय प्राप्त करता है।
3. **'तंत्रसार'** में बताया गया है, कि सौभाग्यशाली साधक ही **'ललिताम्बा साधना'** को प्राप्त कर सकते हैं। इसे सिद्ध करने पर उसके शत्रु स्वतः ही समाप्त हो जाते हैं और जीवन में उसे किसी भी प्रकार का कोई भय नहीं रहता।
4. **'रस तंत्र' में बताया है कि ललिताम्बा** साधना इस प्रकार की **कायाकल्प साधना भी है। इसके मंत्र** जप से नपुंसक व्यक्ति भी पूर्ण यौवनमय एवं सौन्दर्यवान बन जाता है। यह साधना पुनः यौवन प्रदान करने में समर्थ है।
5. **'मंत्र विज्ञान'** ग्रन्थ में स्पष्ट रूप से कहा गया है, कि एक तो ललिताम्बा यंत्र और उससे सबन्धित मंत्र गोपनीय और सर्वथा दुर्लभ है। पर यदि किसी को यह प्राप्त हो जाए तो उसे 'शून्य सिद्धि' स्वतः प्राप्त हो जाती है और साधना पूर्ण रूप से सिद्ध होने पर वह वायु में से कोई भी पदार्थ प्राप्त करने में सफल हो जाता है और ऐसा व्यक्ति सिद्ध योगी कहलाता है।
6. **'विश्वामित्र संहिता'** में ललिताम्बा साधना की प्रशंसा करते हुए बताया है कि गुरु अपनी तेजस्विता से 'ललिताम्बा यंत्र' को सिद्ध कर शिष्य को प्रदान करें और जब शिष्य ऐसा यंत्र धारण कर साधना सम्पन्न करता है, तो उसका तृतीय नेत्र स्वतः

ही स्पन्दित हो जाता है।

7. **'व्यास समुच्चय'** ग्रन्थ में बताया गया है, कि हजार काम छोड़ करके भी साधक को यह साधना सम्पन्न कर लेनी चाहिए, क्योंकि अन्य साधनाएं तो फिर भी प्राप्त हो सकती हैं पर यह साधना तो कई-कई जन्मों के पुण्यों से ही प्राप्त हो सकती है।

इसके अलावा भी सैकड़ों ग्रन्थों में ललिताम्बा साधना के बारे में विवरण मिलता है और सर्वत्र इसकी प्रशंसा ही की गई है, परन्तु किसी भी ग्रन्थ में इस साधना से सम्बन्धित विधि ललिताम्बा मंत्र और ललिताम्बा यंत्र निर्माण के बारे में कोई प्रामाणिक विधि प्राप्त नहीं हो पाती।

ऐसी स्थिति में यह हमारा और हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि त्रिजटा अघोरी जैसे महायोगी ने इस साधना रहस्य को ढूंढ निकाला, यंत्र निर्माण करने और उसे सिद्ध करने की प्रक्रिया स्पष्ट की और ललिताम्बा मंत्र को प्रामाणिकता के साथ स्पष्ट किया।

सद्गुरुदेव ने यह साधना **'मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान'** पत्रिका में स्पष्ट की थी। वास्तव में यह साधना दिव्य साधना है, एक तरफ जहां ललिताम्बा साधना सिद्ध होने पर धन-धान्य की निरन्तर वर्षा होती रहती है, जीवन में किसी प्रकार का अभाव नहीं रहता। वहीं दूसरी ओर उसके शत्रु स्वतः समाप्त हो जाते हैं और वह त्रिकालदर्शी बन जाता है, किसी के भूत-भविष्य को जान लेना उसके लिए कठिन नहीं होता, मां ललिताम्बा की कृपा से साधक में श्राप देने की और वरदान देने की अद्भुत क्षमता आ जाती है।

साधना विधि

यह साधना शुक्रवार से प्रारम्भ करें, जो केवल तीन दिनों की है और रात्रिकालीन साधना है। साधक अपने साधना स्थान को जल से धो लें, फिर पीला आसन बिछा लें और पीली धोती पहिन कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं, सामने **'ललिताम्बा यंत्र'** को स्थापित कर दें, जो पूर्णतः चैतन्य मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठा युक्त हो।

सबसे पहले गुरु पूजन करें और एक माला गुरु मंत्र जप करें। अगरबत्ती व दीपक लगाकर **'हकीक माला'** को यंत्र पर चढ़ा कर निम्न मंत्र का मात्र 21 बार उच्चारण श्रद्धायुक्त होकर करें-

ललिताम्बा यंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं हंसः ॐ नमो भगवति, अक्षोभ्ये रुक्ष-कर्णे, राक्षसि, पक्ष-त्राणे, क्षपे, पिंगलाक्षि, अरुणे, क्षये लीले, लोले ललिते, लूते, लुलिने, लुम्बिके लंकेश्वरि लासे, विमले, हुताशिनि, विशालाक्षि, हूंकारे, वडवामुखि महा-रवे, महा-क्रोडे-क्रोधिनि, स्वरास्ये, सर्वज्ञे, तरले, तारे, दृष्टि-हृष्टे, खग-कन्धरे सारसि, रस-संग्रहिणि, ताल जंघे, करंकिणि मेघ-नादे, प्रचण्डोग्रे, काल-कर्णि, चैल-प्रदे, चपे, चम्पावति, प्रचम्पे, मलयान्तिके, पितृ-वक्त्रे, पिशाचाक्षि पिशुनि, लोलुपे, वानति, वानरि, वायु-विकृतास्ये, वायु-वेगे, बृहत्-कुक्षि-विकृते दृश्य रूपिणि।

कामाकर्षिणि (बुद्धयाकर्षिणि, अहंकाराकर्षिणि, शब्दाकर्षिणि, स्पर्शाकर्षिणि, रूपाकर्षिणि, रसाकर्षिणि, गन्धाकर्षिणि, चित्ताकर्षिणि, धैर्याकर्षिणि, स्मृत्याकर्षिणि, नामाकर्षिणि, बीजाकर्षिणि, आत्माकर्षिणि, अनात्माकर्षिणि) अमृताकर्षिणि, शरीराकर्षिणि, गुप्त-योगिनीशि, बौद्धदर्शनांगि, सर्वाशा-पूरक- चक्र-स्वामिनि।

अनंग-कुसुमे, अनंग-मेखले, अनंग-मदने, अनंग-मदनातुरे, अनंग-रेखे, अनंग-वेगिनि अनंगकुशे, अनंग-मालिनि, अति-गुप्त योगिनीशि, रौद्र-दर्शनांगि, सर्व संक्षोभिणि-चक्र स्वामिनि, पूर्वाम्नायेशि सृष्टि-प्रदे।

सर्व-सिद्धि-प्रदे, सर्व-सम्पत्-प्रदे, सर्व-प्रियंकरि सर्व-मंगल कारिणि, सर्-काम-प्रदे, सर्व-दुःख-विमोचनि, सर्व-मृत्यु-प्रशमनि, सर्व-विघ्न-निवारणि सर्वांगसुन्दरि, सर्व-सौभाग्य-दायिनि, कुल-कौल-योगिनीशि, सर्वार्थ-साधक-चक्र-स्वामिनि।

तीसरे दिन मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद उस यंत्र को धागे में पिरोकर गले में धारण कर लें या बांह पर बांध लें, ऐसा होने पर उस साधक को यह साधना सिद्ध हो जाती है।

साधना सिद्ध होने के बाद जो इस प्रयोग से लाभ बताए गए हैं, वे धीरे-धीरे स्वतः प्राप्त होने लगते हैं और साधक कुछ ही दिनों में सिद्ध योगी बनने की ओर अग्रसर हो जाता है।

वास्तव में ही यह अद्भुत और अद्वितीय साधना है, एक प्रकार से देखा जाए, तो यह मंत्र सर्वथा गोपनीय रहा है। यह पत्रिका आपके हाथों में पहुंचने पर बड़ा ही महत्वपूर्ण समय होगा, जबकि आप इस साधना को सिद्ध कर सफलता प्राप्त कर सकते हैं। यह **'प्राण संजीवन काल सिद्धि मंत्रों से आपूरित ललिताम्बा सिद्धि यंत्र'** तो सर्वाधिक दुर्लभ और अप्राप्य है। अत्यधिक व्यय करने पर भी ऐसा यंत्र प्राप्त होना कठिन है, फिर भी पत्रिका ने निश्चय किया है, कि साधकों को दुर्लभ साधनाएं भी सपन्न कराई ही जाएं। इसी योजना के अन्तर्गत यह महत्वपूर्ण यंत्र भी साधकों और पाठकों के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया है।

यंत्र-600

सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या - 25.09.22

श्राद्ध

भारतीय संस्कृति की परम्परा कितनी अनूठी है, जो एक–एक क्षण का एहसास दिलाती है

हमारे देशवासी कितने ही आधुनिक क्यों न हो जाए, किन्तु एक क्षण जब वे अपनी परम्परा का अवलोकन करते हैं, तो उनका मन तड़प उठता है और अपनी संस्कृति को हृदय से लगाने के लिए आतुर हो उठता है, किन्तु स्पष्ट मार्ग के अभाव में बीच में ही अटक कर रह जाते हैं।

हमारे देश की संस्कृति में यह विशेषता रही है, कि वर्ष के प्रत्येक माह की प्रकृति एवं उसकी विशेषता के अनुरूप व्रत, पर्व, त्यौहार निर्धारित किए गए हैं, जिससे सम्बन्धित कार्य में निश्चित रूप से सफलता प्राप्त होती रहे

पितृ सन्तुष्टि साधना

सम्पन्न करें इन दिवसों पर

हमारे देश की सभ्यता और संस्कृति सर्वाधिक प्राचीन है। इसके महत्व इस दृष्टि से भी अधिक है, कि यहां लोगों में परस्पर स्नेह, अपनत्व और आदर की भावना है तथा हमारे जीवन के जो भी सूत्रधार रहे हैं, उनके प्रति मान–सम्मान बनाए रखने का चिन्तन हमारे मानस पटल पर अंकित रहता ही है। वही अपने मृतक पूर्वजों के प्रति भी श्रद्धानत रहते हैं और उन्हें सम्मान प्रदान करते हैं।

मृत्यु के उपरान्त मानव का क्या होता है ?

यह प्रश्न अत्यन्त जटिल एवं प्राचीन काल से प्रायः अनुत्तरित चला आ रहा है। इसके विषय में तरह-तरह के विचार लोगों द्वारा दिए जाते हैं। लोग मृत्यु को भयावह समझते हैं और यह माना गया है, कि मृत्यु के समय व्यक्ति जो विचार रखता है, उसी के अनुसार उसकी जीवात्मा का संक्रमण होता है। पुराणों के अनुसार जब व्यक्ति मर जाता है, तो उसकी आत्मा अति वाहिक शरीर धारण कर लेती है, जिसमें केवल तीन तत्व-अग्नि, वायु एवं आकाश ही शेष रहते हैं, जो शरीर से ऊपर उठ जाते हैं और पृथ्वी, जल नीचे रह जाते हैं।

शव दाह के समय से लेकर 10 दिन तक, जो पिण्डदान किए जाते हैं, उनसे आत्मा एक दूसरा शरीर धारण कर लेती है, जिसे भोग देह (पिण्ड का भोग करने वाला) कहा जाता है और वर्ष के अन्त में जब सपिण्डी श्राद्ध होता है, तब आत्मा तीसरा शरीर धारण कर लेती है, जिसके द्वारा कर्मों के अनुसार उसकी गति होती है अर्थात् स्वर्ग या नरक प्राप्त होता है।

वस्तुतः श्राद्ध के महत्व को स्पष्ट करते हुए शास्त्रों में कहा गया है, कि जिस मृतक के लिए पिण्डदान अथवा सोलह श्राद्ध नहीं किए जाते हैं, वह पिशाच की स्थिति में रहता है-

यस्यैतानि न दीयन्त प्रेत श्रद्धानि षोडशः।
पिशाचत्वं ध्रुवं तस्य दत्तैः श्राद्ध शतैरपि।।

ब्रह्म पुराण में इस अवस्था को यातनाएं पाने वाली अवस्था कहा है। पद्म पुराण के अनुसार जो लोग पाप कर्म करते हैं, वे मृत्यु के उपरान्त भी भौतिक शरीर के समान कष्ट भोगने हेतु एक शरीर पाते हैं।

भारतीय प्राचीन धर्म ग्रन्थों में पितरों को सम्मान देने का विशेष उल्लेख मिलता है। इनमें 'पितृ' का अर्थ है पिता, किन्तु ऋग्वेद में पितरः शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त हुआ है-
1. व्यक्ति के मृतक पूर्वज तथा 2. प्राची पूर्वज, जो पृथक लोक के अधिवासी हैं।

स्कन्दपुराा में पितरों की नौ श्रेणियां दी हैं, इसमें अग्निष्वाता, वर्हिषद, आज्यपा, सोमपा, रश्मिपा, उपहूता, आयन्तून, श्राद्ध भुज एवं नादी मुख।

मनुस्मृति में कहा गया है कि मानव सन्तति उत्पन्न कर मृत्यु के पश्चात् पितृ बन जाता है और पितर रूप में अपने सत्कर्मों के बल पर देवत्व प्राप्त करता है।

अतः पितृ वर्ग सर्वथा एक अलग वर्ग है, जो अत्यधिक पवित्र और उच्च कोटि का वर्ग है, जिस प्रकार देव वर्ग, ऋषि वर्ग, किन्नर वर्ग आदि उच्चकोटि की योनियां हैं। **पितृ वर्ग की तुलना साक्षात् भगवान ब्रह्मा से की गई है और यह वर्णित किया गया है, कि भगवान् ब्रह्मा भी इनकी सन्तुष्टि का प्रयास करते हैं। उक्त नौ प्रकार के पितृ वर्गों में सौमप नामक पितर वर्ग से ही सपूर्ण प्रजा सृष्टि का जन्म हुआ है।**

इस जगत का अस्तित्व जितना हमारे चक्षुओं से दिखाई पड़ता है यह उतना ही सीमित नहीं है, अपितु सूक्ष्म जगत में अनेक भेद छुपे हुए हैं, जिन्हें तर्क और बुद्धि से नहीं अपितु चेतना, साधना और प्रज्ञा से ही अनुभव किया जा सकता है। पितृ वर्ग का सप्पूर्ण क्रिया-कलाप इसी प्रकार की घटना है। शास्त्रों में स्पष्ट किया गया है कि पितर श्रेणी धारण करने

पर पूर्वजों की शान्ति एवं तृप्ति के लिए श्राद्ध कर्म किया जाता है। '**ब्रह्म पुराण**' के अनुसार जो कुछ काल, पात्र एवं स्थान के अनुसार विधि-विधान पूर्वक पितरों को लक्ष्य करके श्रद्धापूर्वक ब्राह्मणों को दिया जाता है, वह श्राद्ध कहलाता है।

गरुड़ पुराण व अन्य पुराणों में स्पष्ट किया गया है, कि पितरों को श्राद्ध में दिए गए पिण्डों से पितर सन्तुष्ट होकर अपने वंशजों को जीवन, सन्तति, सपत्ति, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष आदि सभी सुख देते हैं।

श्राद्ध कर्म की उत्पत्ति के विषय में धर्म शास्त्रकारों का कहना है, कि प्राचीन समय में मनुष्य तथा देव इसी लोक में रहते थे। देवगण '**यज्ञों**' के फलस्वरूप स्वर्ग जा सके, अतः जो लोग देवों के अनुसार यज्ञ सम्पन्न करते हैं, वे स्वर्ग में देवों तथा ब्रह्मा के साथ निवास करते हैं। इसमें जो लोग पीछे रह गए, उनके लिए मनु ने श्राद्ध क्रिया पद्धति प्रारम्भ की है, जो पितरों को मुक्ति एवं आनन्द प्रदान करने में सहायक है।

'स्कन्द पुराण' के अनुसार 'श्राद्ध' नाम इसलिए पड़ा है, क्योंकि इसके मूल में श्रद्धा निहित है।

गरुड़ पुराण के अनुसार श्राद्ध में जो कुछ दिया जाता है, वह पितरों द्वारा प्रयुक्त होने वाले उस भोजन में परिवर्तित हो जाता है, जिससे वे कर्म और पुनर्जन्म के सिद्धान्त के अनुसार नए शरीर के रूप में पाते हैं।

श्राद्ध कर्म के अधिकारी के सम्बन्ध में कुछ धर्मशास्त्रों जैसे विष्णु धर्म सूत्र आदि में कहा गया है, कि जो कोई मृतक की सम्पत्ति प्राप्त करता है, उसे उस मृतक के लिए श्रद्ध करना चाहिए।

मनुस्मृति में स्पष्ट किया गया है, कि अल्प वयस्क पुत्र भी यद्यपि यह उपनयन विहीन होने के कारण वेदाध्ययन रहित है, फिर भी वह अपने पिता को जल तर्पण कर सकता है। याज्ञवल्क्य ने पौत्र को भी श्राद्ध का अधिकारी माना है।

यह विश्वास है, कि परिवार के मृत सदस्य प्रत्येक अमावस्या को सन्तुष्टि प्राप्ति हेतु
अपने वंशजों के द्वार पर उपस्थित होते हैं,
किन्तु पितृ पक्ष में तो ये पूरे पन्द्रह दिन तक सूक्ष्म रूप में अपने वंशजों के द्वार पर खड़े रहते हैं।
यदि उस अवधि में उन्हें अपने वंशजों से तर्पण आदि प्राप्त नहीं होता है,
तो ये पितृ पक्ष बीत जाने के उपरान्त भी प्रतीक्षा करते रहते हैं और जब तक सूर्य का संक्रमण
वृश्चिक राशि में नहीं हो जाता है, तब तक वे घोर पीड़ा के साथ प्रतीक्षा करते रहते हैं
तथा अन्त में निराश होकर वापस लौट जाते हैं, जिसका प्रभाव परिवार पर अच्छा नहीं पड़ता है।

वस्तुतः श्राद्ध का अर्थ केवल ब्राह्मणों को भोजन कराना ही नहीं होता है, यह तो श्रद्धा व्यक्त करने का स्थूल रूप है। शास्त्रों में श्राद्ध के 12 प्रकार वर्णित किए गए हैं और उससे स्पष्ट होता है कि श्राद्ध कर्म तो ऐसी प्रक्रिया है, जिसे प्रत्येक शुभ व मंगल अवसर पर किया जाता है। विवाह, सीमान्तोन्नयन, पुंसवन आदि संस्कारों के समय भी श्राद्ध की क्रिया सम्पन्न करने का विधान है। इसका आशय यह है कि हमारे जीवन की प्रत्येक घटना चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, हमारे पितरों की सूक्ष्म उपस्थिति में घटित हो, हमें उनका आशीर्वाद प्राप्त हो तथा सबसे बड़ी बात, हमें उनसे सदैव सुरक्षा चक्र प्राप्त हो।

यह विश्वास है, कि परिवार के मृत सदस्य प्रत्येक अमावस्या को संतुष्टि प्राप्ति हेतु अपने वंशजों के द्वार पर उपस्थित होते हैं, किन्तु पितृ पक्ष में तो यह पूरे पन्द्रह दिन तक सूक्ष्म रूप में अपने वंशजों के द्वार पर खड़े रहते हैं। यदि उस अवधि में उन्हें अपने वंशजों से तर्पण आदि प्राप्त नहीं होता है, तो वे पितृ पक्ष बीत जाने के उपरान्त भी प्रतीक्षा करते रहते हैं और जब तक सूर्य का संक्रमण वृश्चिक राशि में नहीं हो जाता है, तब तक वे घोर पीड़ा के साथ प्रतीक्षा करते रहते हैं तथा अन्त में निराश होकर वापस लौट जाते हैं, जिसका प्रभाव परिवार पर अच्छा नहीं पड़ता है।

गरुड़ पुराण व अन्य पुराणों में
स्पष्ट किया गया है,
कि पितरों को श्राद्ध में दिए गए पिण्डों से
पितर सन्तुष्ट होकर अपने
वंशजों को जीवन, सन्तति, सपत्ति,
विद्या, स्वर्ग, मोक्ष आदि
सभी सुख देते हैं।

यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है-यह आवश्यक नहीं है, कि परिवार के मृत सदस्य प्रेत योनि में ही हों। वे जन्म तथा मरण के मध्य एक विचित्र सी अतृप्तावस्था में भी रह जाते हैं। जो प्रेत-योनि में चले जाते हैं, उनकी मुक्ति के उपाय परिवार के सदस्यों द्वारा न किए जाने पर वे उस परिवार में भयंकर उत्पात एवं कलह उत्पन्न कर देते हैं।

अतः हमारे धर्मशास्त्रों में मनुष्य की मृत्यु के उपरान्त उसकी आत्मा के कल्याण के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान दिए हैं, मृतक सदस्य को पितृ वर्ग में सम्मिलित करने के लिए उपाय वर्णित किए गए हैं और प्रेत योनि से मुक्ति दिलाने के लिए स्पष्ट किया गया है। यह भी एक विडम्बना है, कि जहां कोई श्रद्धालू व्यक्ति अपने पूर्वजों की तृप्ति हेतु शास्त्रोक्त क्रिया पद्धति सम्पन्न कराना चाहता है, तो वहां उसे केवल भोजन ग्रहण करने वाले ब्राह्मण ही मिलते हैं। शास्त्रों के ज्ञाता और उच्चकोटि के विद्वान तो बहुत ही कम रह गए हैं। महानगरों के विस्तार के कारण भी ऐसा सुलभ नहीं रह गया है, कि उसे कर्मकाण्डी ब्राह्मण मिल ही जाए। ऐसी स्थिति में साधनात्मक मार्ग अपनाया जा सकता है।
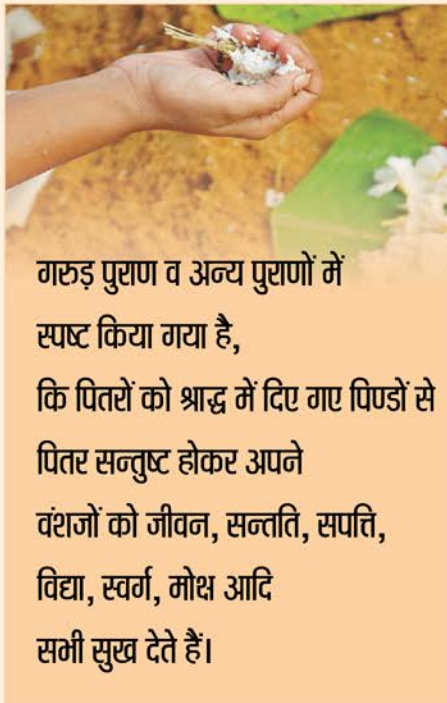
कृष्ण पक्ष की आश्विन महीने की प्रतिपदा से अमावस्या

तक के दिन श्राद्ध कहलाते हैं

जिस महीने की जिस तिथि को किसी भी सम्बन्धी का देहान्त हुआ हो, उसी तिथि को उसका श्राद्ध किया जाता है

यदि अपने पूर्वजों की मृत्यु की तिथि ज्ञात न हो,
तो वे सर्व पितृ दिवस अमावस्या को पितृ सन्तुष्टि साधना सम्पन्न कर सकते हैं

साधना विधान

1. **यह साधना आप सर्व पितृ श्राद्ध 25.09.22 को सम्पन्न करें।**
2. **इस साधना में आवश्यक सामग्री 'पितृ सन्तुष्टि यंत्र' तथा 'हकीक माला' है।**
3. **साधक सफेद वस्त्र धारण करें तथा सफेद ऊनी आसन पर बैठें।**
4. **लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से रंगे चावलों के द्वारा अष्ट दल कमल बनाएं। उस पर पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए यंत्र का स्थापन करें।**
5. **'पितृ सन्तुष्टि यंत्र' का पूजन कर ध्यान करें।**
6. **पितरों का ध्यान करते हुए पुष्प यंत्र पर चढ़ाएं।**
7. **'हकीक माला' से निम्न मंत्र की 31 माला मंत्र जप करें-**

मंत्र

।। ॐ ऐं सर्वपितृभ्यो स्वधा।।

अगले दिन समस्त साधना सामग्री जल में विसर्जित कर दें। श्राद्ध के दिन हम शुद्ध पवित्र होकर भोजन बनावें और यथा-योग्य एक या अधिक ब्राह्मणों को बुलाकर भोजन करायें अथवा किसी मन्दिर में भोजन सामग्री (चावल, दाल, आटा आदि) अपनी सामर्थ्यानुसार दान करें।

विधिपूर्वक श्राद्ध कर्म करने से पितर तृप्ति प्राप्त करते हैं, जिससे उनके वंशजों को पुण्य प्राप्ति के साथ-साथ उनके जीवन में सन्तोष का आगमन होता है।

साधना सामग्री-500/-

प्रेत बाधा निवारक

सत्रहिया यंत्र

स्पष्ट है कि प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति अपना उपचार स्वयं नहीं कर सकता, फिर क्या उसे यों ही तड़पते रहने दें? पीड़ित व्यक्ति के लिए साधना करना, उसके परिवार को मनोबल देना, यह भी सामाजिकता और समाज सेवा ही है। पौरुषवान साधक ऐसा ही करते हैं।

भारतीय पद्धति से निर्मित पंचांग अपने-आप में कालविभाजन की सम्पूर्ण विधा है। प्रकृति का अत्यन्त सूक्ष्म अवलोकन कर इसमें दिवसों, माह का विभाजन, विशिष्ट मुहूर्तों का निर्धारण इस प्रकार किया गया है जिससे जीवन के प्रत्येक पक्ष की ओर समुचित ध्यान दिया जा सके।

इसी कारणवश जहां भारतीय पद्धति में शिव, कृष्ण, दुर्गा, लक्ष्मी की उपासना-साधना के अवसर हैं, वहीं पूरे वर्ष में पन्द्रह दिन केवल अपने पितृ वर्ग एवं पूर्वजों के लिए निर्धारित किए गए हैं, जो आश्विन कृष्ण प्रतिपदा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक रहते हैं।

ये दिन पूरे वर्ष भर में सर्वथा अलग होते हैं और सामान्यत: इन दिनों में कोई भी शुभ अथवा मंगलकार्य नहीं किया जाता, किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि ये दिन अपवित्र अथा दूषित होते हैं, अपितु इसके पीछे जो मूल भावना है वह अपने पूर्वजों के प्रति गहन श्रद्धा व सम्मान की हैं ये दिन अत्यंत गंभीरता व गहनता के होते हैं, जबकि यथार्थत: व्यक्तियों के मृत पूर्वज अपने सूक्ष्म स्वरूप में उपस्थित होकर अपने वंशजों के तर्पण आदि को तो स्वीकार करते ही हैं साथ ही इस दृष्टि से भी गतिशील रहते हैं कि, वे किस प्रकार अपने वंशजों का कल्याण भी कर सकें। ये दिन साधनात्मक दृष्टि से श्मशान साधनाओं के लिए अनुकूल माने जाते हैं और सामान्य साधक इसी कारणवश इन दिनों को अपवित्र मान कर इनका उपयोग नहीं करते हैं, जबकि यह वास्तविकता नहीं है।

यह सत्य है कि इन दिनों में वायुमंडल एवं वातावरण भिन्न प्रकार का होने के कारण समस्त साधनाएं उतनी अधिक निरापदता से नहीं की जा सकती जितनी कि वर्ष के अन्य माह में, किन्तु इन दिनों का उपयोग भी सामान्य एवं सहज सौम्य पद्धति से साधना करने वाले साधक गण कर ही सकते हैं और वातावरण से तादात्म्य स्थापित कर कुछ ऐसी समस्याओं का निदान प्राप्त कर सकते हैं जिनको वर्ष के अन्य दिनों में सिद्ध करने में सम्भवत: कई गुना मेहनत अधिक करनी पड़ती है।

ऐसी ही समस्याओं में एक मुख्य समस्या है प्रेत बाधा की, जिसके उदाहरण हमें ज्यादा दूर नहीं अपने ही गली-मुहल्ले में भी देखने को मिल सकते हैं, जिसमें पीड़ित व्यक्ति अर्धविक्षिप्त या पूर्ण विक्षिप्त बनकर पूरे-पूरे जीवन के लिए पंगु जैसा बन जाता है। जहां एक ओर ऐसा व्यक्ति मानसिक रूप से असक्षम होता है वहीं उसकी शारीरिक क्षमता सामान्य से कई गुना अधिक बढ़ जाती है, साथ ही मानसिक विकृतियाँ भी। ऐसे व्यक्ति को जंजीरों में बांधकर रखने के अतिरिक्त परिवारवालों के पास कोई उपाय नहीं रह जाता है। ऐसे व्यक्ति की क्षुधा और कुप्रवृत्तियाँ इस प्रकार की हो जाती हैं कि पूरा का पूरा परिवार एक दुखद वातावरण में जीने को बाध्य हो जाता है। पूरे घर का सुख, चैन, शान्ति और प्रसन्नता चली जाती है।

अभिशाप बन जाता है प्रेत पीड़ित व्यक्ति अपने पूरे परिवार के लिए, हर कोई तो कटने लगता है उस परिवार से ही.... और उधर वह पीड़ित व्यक्ति भी भला अपनी व्यथा कहां कह पाता है? किन्तु नाथ साहित्य में ऐसी विकट स्थितियों के लिए भी साधनाएं वर्णित हैं ही।

पागलों की तरह चीखना, सिर पटकना, कपड़े फाड़ देना, बेहद अश्लील वाक्य बोलना, अश्लील मुद्रायें प्रदर्शित करना और हरेक को मारने दौड़ना जैसी घटनाओं के बाद यह परिवार सामाजिक रूप से समाप्त होने लग जाता है। तब ऐसी स्थिति में समाज के प्रत्येक व्यक्ति का एक प्रकार से दायित्व बनता है कि वह उस परिवार की यथासम्भव सहायता करे, उसे अलग पड़ने से बचाए और ऐसे साधनात्मक उपाय से परिचित कराए जिससे बिना किसी जटिलता के समस्या से मुक्ति प्राप्त की जा सके। ऐसी बाधाओं से पीड़ित व्यक्ति अथवा परिवार सामाजिक बहिष्कार के पात्र नहीं वरन् सहानुभूति के पात्र होते हैं और उन्हें घृणा की दृष्टि से न देखकर उनकी सहायता करना ही साधक का धर्म और गुण है।

प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को मुक्त कराना अधिकांश स्थितियों में यदि असम्भव नहीं तो कठिन होता ही है, क्योंकि प्रेत एक अत्यन्त हठी योनि है। यों तो इतर योनि वर्ग में कई भेद हैं–भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस इत्यादि लेकिन प्रेत पीड़ित व्यक्ति का उद्धार अपेक्षाकृत कठिन माना गया है। प्रेत-पीड़ित व्यक्ति की पहचान यह है कि उसके चेहरे पर एक विचित्र सी क्रूरता भरी चमक आ जाती है और साथ ही सहजता से अच्छे जानकार की पकड़ में भी नहीं आती है। भूत बाधा से ग्रसित व्यक्ति का उद्धार फिर भी सहज और सरल है किन्तु प्रेत बाधा का उपचार कठिन होने के कारण उससे सामान्य जानकार व्यक्ति भी दूर ही रहना चाहते हैं।

किन्तु साधनात्मक जगत में किसी भी स्थिति को कठिन अथवा असम्भव माना ही नहीं गया है। साधनात्मक ग्रंथों में ऐसी कठिन स्थितियों के लिए भी प्रबल निवारक साधनाएँ और उनके प्रयोग का उचित समय भी वर्णित किया गया है। आश्विन माह का यह कृष्ण पक्ष अर्थात् सामान्य बोलचाल की भाषा में पितृ पक्ष ऐसे समस्त कार्यों एवं साधनाओं के लिए अत्यन्त अनुकूल एवं निश्चित सफलतादायक समय माना गया है। आवश्यकता है तो इस बात की, कि व्यक्ति की साधनाओं के प्रति सम्मान भरी दृष्टि हो, साधना पद्धति, गुरु मंत्र एवं सामग्री में आस्था व श्रद्धा हो तथा साथ ही साथ अपने पूर्वजों के प्रति सम्मान व आत्मीयता की भी भावना हो, क्योंकि पितर वर्ग के सहयोग से, उनके स्वयं के त्रिवर्गात्मक स्वरूप के होने से इस प्रकार की समस्याओं में निश्चय ही ठोस सफलता मिलती ही है।

प्रेत बाधा से पीड़ित व्यक्ति को मुक्त कराना अधिकांश स्थितियों में यदि असम्भव नहीं तो कठिन होता ही है, क्योंकि प्रेत एक अत्यन्त हठी योनि है। यों तो इतर योनि वर्ग में कई भेद हैं–भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस इत्यादि लेकिन प्रेत पीड़ित व्यक्ति का उद्धार अपेक्षाकृत कठिन माना गया है। प्रेत-पीड़ित व्यक्ति की पहचान यह है कि उसके चेहरे पर एक विचित्र सी क्रूरता भरी चमक आ जाती है और साथ ही सहजता से अच्छे जानकार की पकड़ में भी नहीं आती है। भूत बाधा से ग्रसित व्यक्ति का उद्धार फिर भी सहज और सरल है किन्तु प्रेत बाधा का उपचार कठिन होने के कारण उससे सामान्य जानकार व्यक्ति भी दूर ही रहना चाहते हैं।

इसी माह दिनांक 18.09.22 को एक महत्वपूर्ण दिवस पड़ रहा है जिसे प्रेत सिद्धि दिवस के नाम से जाना जाता है।

यह दिवस सामान्य साधकों के लिए जहां प्रेत साधना में सफलता प्राप्त करने का एक चिर प्रतीक्षित दिवस है वहीं प्रेत मुक्ति का भी स्वयंसिद्ध दिवस है। साधनात्मक ग्रंथों में और विशेषकर साबर साधनाओं के प्राचीन ग्रंथों में इस दिवस के उपयोग से सम्बन्धित अनेक साधनाएं दी गई हैं। उनमें वर्णित किया गया है कि जिस प्रकार व्यक्ति घर में नौकर-चाकर रखता है उसी प्रकार प्रेत आदि को वश में कर अपनी सुरक्षा में नियुक्त कर सकता है अथवा उनसे घरेलू कामकाज ले सकता है। नाथ योगी स्वभावत: हठी होने के कारण ऐसी साधनाओं में विशेष रुचि रखते थे, जो सरलता से न सिद्ध होती हो, जिनमें कुछ अटपटापन हो अथवा जिनमें चुनौती जैसी बात हो। प्रस्तुत साधना ऐसे ही पौरुषवान साधकों की प्रबलता का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है।

साधना विधान

नाथ साहित्य में पन्द्रहिया, चौबीसा, बीसा, छत्तीसा जैसे यंत्रों के उपयोग से तो आप भलीभांति परिचित हैं किन्तु उन्हीं नाथ योगियों के द्वारा प्राप्त किया गया एक अन्य महत्वपूर्ण यंत्र है सत्रहिया यंत्र। यह यंत्र इसी प्रकार की समस्याओं के लिए अत्यन्त उपयोगी पाया गया है और श्मशान आदि स्थानों पर उग्र साधना करते समय नाथ योगी इसी प्रकार के विभिन्न यंत्रों के माध्यम से समस्त वातावरण को, पूरे-पूरे श्मशान को अपने वशीभूत कर लेते थे।

साधक को चाहिए कि वह ताम्रपत्र पर अंकित ऐसे यंत्र को प्राप्त कर इस दिवस विशेष की रात्रि में साधना में बैठें। यदि पीड़ित व्यक्ति उसके सामने बैठ सके तो उसे भी बैठा लें, नहीं तो उसकी अनुपस्थिति में यह प्रयोग उसके नाम का संकल्प लेकर किया जा सकता है। विशेषकर ऐसी स्थितियों में जहां प्रयोग के बीच में पीड़ित व्यक्ति के उग्र हो जाने की सम्भावना हो, उसे सामने नहीं बैठाना चाहिए।

रात के दस बजे के बाद काले वस्त्र पहन कर, पश्चिम मुख हो, काले वस्त्र पर तिलों की ढेरी स्थापित करें और उस पर ताम्र यंत्र पर अंकित सत्रहिया यंत्र स्थापित करें। स्वयं भी काले ऊनी आसन पर बैठे। साधना से पूर्व भगवान भैरव का स्मरण करे तथा एक भैरव गुटिका को भैरव स्वरूप मानकर गुड़ की ढेली का भोग लगाएं और उनसे रक्षा की प्रार्थना कर समस्त दिशाओं से बाधा निवारण हेतु निम्न मंत्र बोलते हुए अपने चारों ओर जल छिड़कें-

अपसर्पन्तु ते भूता ते भूता भूमि संस्थिता।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

अन्तरिक्ष से विघ्न निवारण हेतु ऊपर की ओर देखते हुए 'फट्' मंत्र उच्चरित करें तथा भूमि से होने वाले विघ्नों का नाश करने के लिए बाएं पैर की एड़ी से पृथ्वी पर आघात करे। तदोपरन्त लोबान धूप जला ले और एक सिद्ध रक्षा चक्र हाथ में लेकर पीड़ित व्यक्ति के नाम से संकल्प करे कि मैं अमुक नाम, अमुक गोत्र का साधक, अमुक गुरु का शिष्य, अमुक व्यक्ति को प्रेत-बाधा से मुक्त कराने में अपने पूज्य गुरुदेव, पूर्वजों एवं पितरों की उपस्थिति में यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ। ये अपने सूक्ष्म बल द्वारा इसमें सफलता दें। ऐसा कहकर सिद्ध रक्षा चक्र को यंत्र के सामने स्थापित कर दे और एक पात्र में जल रखकर, तेल का बड़ा दीपक लगाकर, काली हकीक की माला से निम्न मंत्र की पांच माला मंत्र-जप करें।

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं क्रीं क्रीं फट् ।।

ध्यान रखें कि बिना पांच माला मंत्र-जप किए आसन को नहीं छोड़ना है। यदि इस बीच में कोई हलचल हो, भय उत्पन्न हो, आहट आए तब भी साधक मंत्र-जप का क्रम बनाए रखें, किन्तु मंत्र-जप के काल में यदि कोई आकृति स्पष्ट दिखाई दे जाए तो बिना किसी हिचकिचाहट या विलम्ब के मंत्र-जप को स्थगित कर सामने रखे पात्र में जल लेकर उस पर छीटें मारें। ऐसा करने से यह प्रयोग पूर्णतया सिद्ध हो जाता है।

मंत्र के उपरान्त साधक शेष जल पीड़ित व्यक्ति को पिला दे और यदि व्यक्ति इसमें कोई बाधा उत्पन्न करे तो उसके सारे शरीर पर छिड़क दें। इस क्रिया से वह प्रेत बाधा से ग्रसित व्यक्ति अत्यन्त क्रोधित और उग्र हो सकता है। किन्तु चिन्तित न हो, **इसके बाद साधक को जब भी अवसर मिले प्रेत-बाधा से ग्रसित व्यक्ति के बाएं हाथ में सिद्ध रक्षा चक्र धारण करा दें।** अधिकांश स्थितियों में दूसरे ही दिन से पीड़ित व्यक्ति की उग्रता में कमी आने लग जाती है।

साधना के उपरान्त काले हकीक की माला, सत्रहिया यंत्र एवं अन्य पूजन सामग्री किसी काले वस्त्र में बांधकर विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री- 600/-

।। श्री शिवकृत श्री विष्णु स्तुति ।।

नमस्ते देवतानाथ नमस्ते गरुडध्वज। शङ्खचक्रगदापाणे वासुदेव नमोऽस्तु ते।।
नमस्ते निर्गुणानन्त अप्रतर्क्याय वेधसे। ज्ञानाज्ञान निरालम्ब सर्वालम्ब नमोऽतु ते।।
रजोयुक्त नमस्तेऽस्तु ब्रह्ममूर्ते सनातन। त्वया सर्वमिदं नाथ जग्त्सृष्टं चराचरम्।।
सत्त्वाधिष्ठात लोकेश विष्णुमूर्ते अधोक्षज। प्रजापाल महाबाहो जनार्दन नमोऽस्तु ते।।
तमोमूर्ते अहं ह्येष त्वदंशक्रोधसम्भवः। गुणाभियुक्तो देवेश सर्व व्यापिन्नमोऽस्तु ते।।
भूरियं त्वं जगन्नाथ जलमम्बरपावकौ। वायुर्बुद्धिर्मनश्चापि शर्वरी त्वं नमोऽस्तु ते।।
धर्मो यज्ञस्तपः सत्यमहिंसा शौचमार्जवम्। क्षमा दानं दया लक्ष्मीर्ब्रह्ममचर्यं त्वमीश्वर।।
त्वं हि साङ्गाश्चुतर्वेदास्त्वं वेद्यो वेदपाणयः। उपवेदो भवानीश सर्वोऽपि त्वं नमोऽस्तु ते।।

श्री वामनपुराण 3/14-21

श्री महादेवजी कहते हैं-

देवताओं के अधीश्वर! आपको नमस्कार है।

अपनी ध्वजा में गरुड़-चिह्न धारण करने वाले भगवन्! आपको प्रणाम है।

हाथों में शङ्ख -चक्र-गदा धारण करने वाले वासुदेव! आपको अभिवादन है।

हे निर्गुण! आप तर्क से परे हैं। हे अनन्त! ब्रह्मा आपके ही स्वरूप हैं, आपको नमस्कार है।

आप ज्ञान और अज्ञानस्वरूप हैं तथा आलम्बनरहित होते हुए सबके अवलम्ब हैं, आपको प्रणाम है।

सनातन देव! आपने ही रजोगुण से युक्त होकर ब्रह्मा का रूप धारण करके इस सारे स्थावर-जंगम जगत् की रचना की है, अतः नाथ! आपको अभिवादन है।

अधोक्षज! आप ही सत्त्वगुण के आश्रय से विष्णु रूप होकर प्रजाओं की रक्षा करते हैं, महाबाहो! आप लोगों के अधीश्वर हैं, जनार्दन! आपको नमस्कार है।

देवेश! यह मैं तमोमूर्तिधारी आपके अंशभूत क्रोध से उत्पन्न हुआ हूँ। सर्वव्यापिन् इस प्रकार आप तीनों गुणों से युक्त हैं, आपको प्रणाम है।

जगन्नाथ! यह पृथ्वी तथा जल, आकाश, अग्नि, वायु, बुद्धि और मन आप ही हैं। रात भी आप ही हैं, आपको अभिवादन है।

ईश्वर! धर्म, यज्ञ, तप, सत्य, अहिंसा, शौच (पवित्रता), आर्जव (सरलता), क्षमा, दान, दया, लक्ष्मी और ब्रह्मचर्य-ये सभी आपके ही स्वरूप हैं। आप ही अंगों सहित चारों वेद हैं। आप ही (वेदों द्वारा) जाननेयोग्य तथा वेदों के पारंगत हैं। उपवेद भी आप ही हैं। ईश! आप सब कुछ हैं, आपको नमस्कार है।

जगत् पालक श्रीविष्णु

करणं कारणं कर्ता त्वमेव परमेश्वर।
शंखचक्रगदापाणे! मां समुद्धर माधव।।

–स्कन्द पु.वै.खं–1/86

हे परमेश्वर! आप करण हैं, कारण हैं और कर्ता भी आप हैं। हे माधव! हे शंख–चक्र–गदा को धारण करने वाले प्रभो! मुझे संसार–सागर से उबार लो।

बिस्नु बिस्व ब्रह्मांड करैं पालन जीवनि कौ। सबके सारे काज करैं कल्यान सबनि कौ।।
हर-अज भोरे दे देहिं असुरनि वर इच्छित। किंतु बिस्नु अति जुगुतिसहित करि देवैं सिच्छित।।
जग पावन-हित सब करत, विधि-निषेध तैं परै प्रभु। वेष बनावें विविध विधि, बिस्वंभर बिस्वेस विभु।।

हमारे शिवजी तो औढरदानी हैं, भोलेबाबा हैं। ब्रह्माजी को सृष्टि करने की धुल लगी रहती है। वे सृष्टि करने में ऐसे व्यस्त रहते हैं कि आगे-पीछे की बिना सोचे ही असुरों को वर दे देते हैं। किंतु हमारे ये चार हाथ वाले देवता सबका ध्यान रखते हैं, चतुरता से काम लेते हैं।

ब्रह्माजी और शंकरजी के वचनों का (वरदानों का) भी निर्वाह करते हैं और युक्ति से अपना काम भी निकाल लेते हैं। इनके लिए छोटा-बड़ा, ऊँच-नीच, कर्तव्य-अकर्तव्य कुछ भी नहीं। ये विधि-निषेध-सबसे परे हैं। सबके निर्माता ये हैं ही।

चलती रेल में चढ़ने का नियम नहीं। रेल रक्षक किसी को चलती रेल में चढ़ने नहीं देता, किंतु वह सदा चलती ही रेल पर चढ़ता है, क्योंकि उसी को तो सबकी देखभाल रखनी पड़ती है। सबका समाधान, सबका मार्जन, सबका पालन, धर्म का संरक्षण तो विष्णु को ही करना पड़ता है। वे सबका सब प्रकार से संरक्षण न करें तो असुरगण तो असमय में ही जगत् का संहार कर दें। एक तो करेला दूसरे नीम चढ़ा। एक तो असुर वैसे ही बली और 'तामसी', फिर वे उग्र तपस्या करके शिवजी और ब्रह्माजी से दुर्लभ वर भी प्राप्त कर लेते हैं। उनका युक्तिसहित भगवान् विष्णु संहार न करें तो जगत् का संरक्षण कैसे हो? इसलिये भगवान् जब जैसा अवसर देखते हैं, तब तैसा रूप बनाकर शिवजी और ब्रह्माजी के वरों की रक्षा करते हुए असुरों का संहार कर देते हैं। यही उनकी विशेषता है।

क. हिरण्यकशिपु ने ब्रह्माजी से इतने वरदान प्राप्त किये थे - 1. आप के बनाये हुए पशु, मनुष्य, देवता तथा किसी भी प्राणी से मेरी मृत्यु न हो। 2. मैं न भीतर मरूं, न बाहर। 3. न दिन में मरूं, न रात्रि में। 4. आपके बनाये प्राणियों के अतिरिक्त और भी किसी जीव से न मरूं। 5. अस्त्र-शस्त्र से न मरूं। 6. पृथ्वी या आकाश में ना मरूं। 7. युद्ध में मेरा कोई सामना न करे। 8. मैं समस्त प्राणियों का एकछत्र सम्राट् होऊं। 9. मुझे तपस्वियों और योगियों जैसा अक्षय ऐश्वर्य प्राप्त हो। अब बताइये, इसमें कहीं मरने का अवसर शेष रहा? अपनी बुद्धि से तो उसने अजर-अमर, ऐश्वर्यवान् होने के समस्त वरदान मांग लिये। ब्रह्माजी ने भी कहा-'बेटा! वरदान तो तुने बहुत ही दुर्लभ मांगे हैं; किंतु जा, मैं तुझे तेरे मुंह मांगे सभी वरों को देता हूं।' सब वर उसे प्राप्त भी हो जाये और वह तीनों लोकों का ऐश्वर्य भोगता हुआ घोर अत्याचार करने लगा। अपने पुत्र भगवद्भक्त प्रह्लाद को नाना भाति की यातनाएं देने लगा। आप ही सोचिये, इतने वरदान पाये हुए उसे कोई मार सकता था क्या ? किंतु भगवान् की बुद्धि के सम्मुख किसी की बुद्धि चल सकती है? ब्रह्माजी के वरों को सत्य करते हुए भी उसे मार ही तो डाला। कैसे मारा? नरसिंह बनकर-आधे नर और आधे पशु! यह ब्रह्माजी की सृष्टि से पृथक् ही जन्तु था। उसे न भीतर मारा न बाहर मरा, सभा भवन की देहली पर मारा। न पृथ्वी पर मारा न अन्तरिक्ष में मारा, जांघों पर रखकर मारा। न अस्त्र से मारा न शस्त्र से मारा, नखों से पेट फाड़ दिया। न दिन में मारा न रात्रि में, दोनों की संध्या वेला में मारा। बताइये, दूसरा कोई ऐसी युक्ति कर सकता है? माता-पिता से पैदा न होकर खंभ से पैदा हो गये। बोलो, खंभ से प्रकट होने वाले भगवान् विष्णु की जय।
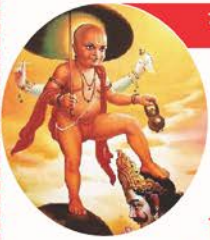
ख. शकुनि-नामक असुर का पुत्र था वृकासुर। शिवजी को प्रसन्न करके उसने यह वर मांग लिया कि 'मैं जिसके सिर पर मारने के संकल्प से हाथ रखूँ, वह मर जाय।' औढरदानी शिवजी ने झट से वरदान दे दिया। अब वह दुष्ट गौरी हरण लालसा से शिवजी को ही मारने पर उतारू हुआ। शिवजी मुट्ठी बांधकर भागे। वह भी यह कहते हुए उनके पीछे भागा कि - 'बाबा! मुझसे भागकर कहां जाओगे ?' शिवजी ने मन-ही-मन विष्णु भगवान् का स्मरण किया।

बहुरूपिया विष्णु भगवान् ने ब्रह्मचारी का कपट-वेष बना लिया और दण्ड कमण्डल लिये, मृगछाला ओढ़े, रूद्राक्ष की माला पहने, खड़ाऊं खटकाते वृक के मार्ग में खड़े हो गये। जब वृकासुर दौड़ता हुआ इनके समीप आया तो बड़ी ही मीठी वाणी में चिरपरिचितों की भाति ललककर बोले-'आह ! आज तो बड़ा सुदिवस है, श्रीमान् शकुनिनन्दनजी के दर्शन हो गये। वृकजी ! जय शंकरजी की ! इतने झपट्टे के साथ कहां जा रहे हो, बड़े श्रमित प्रतीत हो रहे हो। तनिक बैठो तो सही। जलपान तो कर लो। ऐसी क्या शीघ्रता है ?'

वृक बोला--'ब्रह्मचारीजी ! मुझसे बोलिये नहीं। बड़े आवश्यक कार्य से जा रहा हूं।'

ब्रह्मचारीजी बोले-'हम भी तो सुनें, ऐसा कौन सा कार्य है। काम का पता चले तो हम आपके कार्य में सहायता करेंगे। परस्पर सहयोग से ही संसार के सभी कार्य सम्पन्न हुआ करते हैं।'

वृक ने पूरी कहानी सुना दी। आपने तो अपनी वाणी में अमृत घोल रखा था। वृक की बात सुनकर बड़े वेग से ठहाका मारकर हंसे और फिर बड़े प्यार से अपनेपन के साथ बोले''राजन् ! हम तो आपको बहुत बुद्धिमान समझते थे। आपके पिता शकुनि तो बड़े ही विद्वान थे।'

वृक घबरा गया। बोला-'ब्रह्मचारीजी ! मैंने कुछ गड़बड़-सड़बड़ कर दिया क्या ?'

हँसते हुए आप बोले-'बहुत बड़ी भूल आपने कर दी।'

वृक चौंका और बोला-'वह क्या ?'

कपटी ब्रह्मचारी बोले-'आपने भी किनका विश्वास किया। शिवजी तो दक्ष के शाप से पिशाच हो गये हैं। उनकी बात पर आपने कैसे विश्वास कर लिया ?'

वृक बोला-'नहीं जी, ये तो जगद्गुरु हैं।'

ये बोले-'तुम उन्हें जगद्गुरु मानते हो और उनकी बात पर विश्वास करते हो तो हाथ कंगन को आरसी क्या ? तुम्हें सिर मोल लेने तो जाना नहीं। क्या तुम्हारे सिर नहीं है ? पहले अपने ही सिर पर हाथ रखकर परीक्षा कर लो।'

असुर इनकी उलटी पट्टी में आ गया, इनके मोह-जाल में फंस गया। उसने झट अपना हाथ अपने सिर पर रखा, सट से नीचे गिरा और फट से मर गया। ऐसी मोहिनी माया दूसरा कोई कर सकता है ? बोलो कपट-ब्रह्मचारी, वेषधारी भगवान् विष्णु की जय।

(ग) एक असुर ने शिवजी से यह वर प्राप्त कर लिया कि 'मुझमें शत्रुभाव रखकर जो भी प्रहार करे, वहीं परास्त हो जाय। मुझे शत्रुभाव से कोई भी मार न सके।जो लड़ने आयेगा, वह शत्रुभाव से ही लड़ेगा, अतः इन्द्रादि समस्त देवताओं को उसने स्वर्ग से निकाल दिया। स्वयं स्वर्ग के सिंहासन पर आरूढ़ होकर स्वर्ग का शासन करने लगा।

देवता ब्रह्माजी के पास गये, ब्रह्माजी सबको लेकर शिवजी के पास गये। वे तो वरदान देकर स्वयं ही हाथ कटा चुके थे। सबने कहा- 'भगवान् विष्णु के अतिरिक्त अन्य कोई इस संकट से उद्धार नहीं कर सकता।' सभी भगवान् की शरण में गये। सब सुनकर भगवान् क्रुद्ध होते हुए बोले- 'आप लोग असुरों को ऐसे दुर्लभ वर दे देते हैं, फिर आपत्ति पड़ने पर, मेरे पास आते हैं। अब आप ही बतायें, उसे कोई कैसे मार सकता है। जो मारने जायेगा, वह शत्रुभाव से ही तो मारेगा। अच्छी बात है, तुम लोग जाओ, मैं कुछ सोचूंगा।'

सबके चले जाने पर भगवान् ने पीताम्बर धारण किया, शंख-चक्र- गदा-पद्म धारण किये और गरुड़ पर चढ़कर स्वर्ग पहुंचे। द्वार पर जाकर निरायुध खड़े हो गये। द्वारपाल से कहा- 'तुम अपने राजा को सूचना दो, विष्णु भगवान् मित्रभाव से आपके स्वर्गाधिपति हो जाने पर बधाई देने आये हैं।'

द्वारपाल ने तुरंत जाकर सूचना दी। 'विष्णु भगवान् मित्रभाव से मुझे बधाई देने आये हैं' -यह सुनकर असुर के तो हर्ष का कुछ ठिकाना ही न रहा। वह तुरंत सिंहासन से कूद पड़ा और स्वयं दौड़ता हुआ भगवान् विष्णु की अगवानी करने मित्रभाव से द्वार पर पहुंच गया और प्रेम में भरकर बड़े उल्लास के साथ बोला- ''विष्णो ! आज मैं कृतार्थ हो गया, जो आप मुझे मित्र मानकर स्वयं मेरे द्वार पर मुझे बधाई देने आये।'

ये बोले- 'हे मित्र! तुमने बड़ा दुष्कर कार्य किया है। इसीलिये मित्रभाव से मैं तुमसे मिलने आया हूं। आओ, हम दोनों मित्र हृदय से हृदय सटाकर एक बार मिल तो लें।

यह कहकर भगवान् ने उसे आलिंगन करते हुए प्रेम से कस लिया। भगवान् को इतना प्रेम उमड़ा कि अपने मित्र को कसते ही गये, कसते ही गये। मित्रजी हुच्च-हुच्च करने लगे, किंतु हमारे विष्णु भगवान् का प्रेम कम नहीं हुआ। अन्त में असुरजी धम्म से निर्जीव होकर गिर गये। बताइये, छली-कपटी असुरों से ऐसी मित्रता कौन कर सकता है। बोलो कपटी मित्र भगवान् विष्णु की जय।

(घ) एक असुर ने वर मांग लिया कि मैं जल में डूबने के सिवा कभी न मरूं। अब तो वह पहाड़ की चोटी पर, जहां बीसों योजन तक डूबने योग्य जल नहीं था,रहने लगा। पीने को छोटे पात्र में ही जल पीता। जल के निकट कभी जाता ही न था।

भगवान् विष्णु ने समुद्र को बढ़ाया। बढ़ते-बढ़ते समुद्र ने उस असुर के पहाड़ की चोटी को चारों ओर से घेर लिया। अब असुर क्या करता। उसी समय भगवान् विष्णु सैकड़ों योजन लंबे कछुए का रूप रखकर जल के ऊपर जम गये। असुर ने कहीं भी अपना त्राण न देखकर सोचा, 'जल में यह जो द्वीप है, चलकर उसी पर रहूं।' बस, उस कछुए को द्वीप समझकर असुर उन कच्छप की पीठ पर बैठ गया। जब उन्होंने देखा कि असुर निश्चिन्त होकर बैठ गया, तब कच्छप रूपधारी प्रभु शनैः-शनैः खिसके और उन्होंने जल में एक डुबकी लगायी। असुर हुच्च-हुच्च करके जल में डूब गया और मर गया। बोलो 'कच्छप वपुधारी विष्णु भगवान् की जय'।

पुराणों में ऐसी मनोरंजक दस या बीस या सौ नहीं, सहस्त्रों कथाएं हैं और बड़ी ही मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद भी। विस्तारभय से अधिक का उल्लेख नहीं कर सकते। कहीं भगवान् ने असुरों को यज्ञ-दान-वेदाध्ययन करते देखकर यह समझकर कि ये कुपात्र इन शुभ कर्मों को करके अनर्थ की ही सृष्टि करेंगे, भिक्षु बनकर उन्हें इन शुभ कर्मों से विरत कराया है, कहीं नाना रूप धारण करके दुष्ट असुरों से साधुओं का परित्राण करके धर्म-संस्थापन कार्य किया है। इससे यही सिद्ध होता है कि भगवान् विष्णु, जो भी कार्य करते हैं, जो भी रूप धारण करते हैं, धर्म-संस्थापनार्थ, साधु रक्षणार्थ तथा दुष्कृतकारियों के विनाशार्थ ही करते हैं। इस बात को उन्होंने ही अपने श्रीमुख से गीता में कहा है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे।। -श्रीमद्भगवद्गीता 4/7-8

(कल्याण से साभार)

शिष्य के जीवन में गुरु ही सर्वस्व होता है। इसलिए देवी-देवताओं की साधना करने के साथ गुरु साधना को ही जीवन में प्राथमिकता देनी चाहिए।

शिष्य धर्म

त्वं विचितं भवतां वदैव देवाभवावोतु भवतं सदैव।
ज्ञानार्थ मूल मपरं विहंसि शिष्यत्व एवं भवतां भगवद् नमामि।।

- जो व्यक्ति अपने आपका सम्मान करता है, वह दूसरों से सुरक्षित है, क्योंकि उसने एक ऐसा अभेद्य आवरण ओढ़ रखा है, जिसे कोई हानि नहीं पहुँचा सकता।
- जिस प्रकार शरीर की शुचिता के लिए, उसे नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है, उसी प्रकार मन और मस्तिष्क को नित्य स्वच्छ करना आवश्यक है। जब तक मन नकारात्मक विचारों से भरा है, तब तक वह एक लक्ष्य की ओर ध्यान नहीं कर सकता है।
- हर शिष्य का रक्त लाल है और हर शिष्य के आंसू खारे हैं। हर शिष्य को ऐसा मार्ग अवश्य ही खोजना चाहिए, जिससे उसके सम्मान की रक्षा और अनन्त संभावनाओं की पूर्ण प्राप्ति हो सके।
- वास्तविकता को केवल शब्दों के माध्यम से व्यक्त नहीं किया जा सकता। आम का स्वाद, उसे चख कर ही जाना जा सकता है। साधना द्वारा विकसित ज्ञान से परम सत्य का साक्षात्कार संभव है।
- अतीत का पीछा न करो और भविष्य के भ्रम जाल में न फंसो। अतीत व्यतीत हो गया है और भविष्य अभी अनागत है। यहां अभी इस क्षण जीवन जैसा है, उसी की धारणा करो। साधनाभ्यासी शिष्य स्थिरता और मुक्त भाव से जीता है।
- जीवन में चार सत्य हैं – दु:ख की स्थिति, दु:ख का कारण, दु:ख का नाश और दु:ख नाश करने का मार्ग। इन पर निरन्तर विचार करते ही रहना चाहिए।
- शिष्य चाहे वह बीस दिन पहले जुड़ा हो अथवा बीस साल पहले, गुरु की दृष्टि में सभी बराबर ही होते हैं। इसलिए प्रत्येक शिष्य को विशिष्ट गुरुभ्राताओं अथवा गुरुबहिनों को सम्मान तो देना चाहिए, आदर तो करना चाहिए, परन्तु अपनी श्रद्धा को मात्र गुरुदेव के ही चरणों के लिए ही सुरक्षित रखना चाहिए।

जो शिष्य अपने अहम्, छल, कपट आदि को छोड़कर भौतिक श्रेष्ठताओं को भुलाकर गुरुचरणों में झुक जाता है वही सफल होता है।

गुरु वाणी

- प्रेम सम्पूर्णता है, यह झकझोर देता है प्रेमी के मन को, आत्मा को, उसका प्रेमी चाहे ईश्वर हो, वह प्रेमी चाहे गुरु हो।
- जिनको सर कटाना ही नहीं आता, जिसको अपने आपको लुटाना ही नहीं आता, उसके दिल में चोट कहां लग सकेगी, उसमें तड़फ और बैचेनी कहां से आ सकेगी. . .आशिकी में तो अपने आप को जला देना पड़ता है, रौंद डालना होता है, और तब वहां जो अंकुर फूटेगा, वह प्रेम का अंकुर होगा।
- जहां सब कुछ मिटा देने की क्रिया होगी, वहां प्रेम का पौधा पनपेगा। जो अपनी हस्ती को मिटा सकता है वह सब कुछ पा सकता है।
- साधना में सिद्धि प्राप्त करनी है, तो तुम्हें प्रेम करने की कला भी सीखनी होगी, एक-एक सांस को उसे समर्पित कर देने की क्रिया सीखनी होगी और जिस दिन से तुम गुरु से प्यार करने लग जाते हो, उस क्षण से वह सांस तुम्हारी नहीं होती, वह तो गुरु की अमानत होती है और गुरु उस सांस को तपस्या में बदल करके तुम्हारे अन्दर समाविष्ट कर देता है।
- तुम्हें बीज बनना है . . .और बीज बनोगे, तभी तुम आगे जाकर छायादार वृक्ष बन सकते हो, मगर तब बन सकते हो, जब बीज धरती के अन्दर मिल जाए। यदि बीज कहे, कि मैं माटी में मिलना नहीं चाहता, तो बीज छायादार पेड़ नहीं बन सकता, और जब वह माटी में मिल जाएगा, तब उसमें निश्चित रूप से अंकुर फूटेगा और आगे चलकर वह छायादार पेड़ बन सकेगा, जिसके नीचे हजारों-हजारों व्यक्ति बैठ सकेंगे।
- मैं हर क्षण तुम्हारे साथ हूँ, तुम कहीं अकेले नहीं हो, इस वीरान पगडण्डी पर तुम्हें अपने-आपको अकेला समझने की जरूरत नहीं है, क्योंकि तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें ब्रह्म तक पहुंचाना है, निश्चित रूप से मैं तुम्हें ब्रह्म दर्शन कराऊंगा और इस जीवन में ही तुम्हें जन्म मरण के इस भय से, इस समस्या से मुक्त कर देना है।

भगवती दुर्गा की साधना प्रत्येक साधक उनके शक्ति प्रदायनी स्वरूप को ही लेकर करता है, क्योंकि दुर्गा शक्ति स्वरूपा कही गई हैं और साधक दुर्गा की शक्ति को स्वयं में निहित कर समस्याओं से लड़ने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

भगवती दुर्गा का शक्ति स्वरूप अत्यन्त तेजस्विता युक्त है, उनके तेज को आत्मसात् कर पाना प्रत्येक मनुष्य के बस की बात नहीं है, एक साधारण मनुष्य उनके भजन तो गा सकता है, उनकी भक्ति तो कर सकता है, लेकिन साधना करने की क्षमता सिर्फ साधकों में ही होती है, जो पूर्णता के साथ भगवती दुर्गा के शक्ति स्वरूप को स्वयं में निहित कर सकते हैं।

भगवती दुर्गा की तेजस्विता यदि साधक समाहित करने में सक्षम हो जाये, तो साधक के जीवन का सौभाग्योदय होता है और ऐसा ही सौभाग्यवर्द्धक क्षण उपस्थित हो रहा है इस बार 'शारदीय नवरात्रि' (26 सितम्बर से 04 अक्टूबर 22) पर, जब साधक नवरात्रि के प्रत्येक दिन दुर्गा के प्रत्येक स्वरूप की साधना कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान कर सकता है।

विभिन्न ऋषियों ने भी इस बात को स्वीकार किया है, कि नवरात्रि का प्रत्येक दिवस साधक के लिए अपने जीवन में सौभाग्य के क्षणों को पूर्णता के साथ उतारने का अवसर है। विभिन्न तंत्र शास्त्रों द्धारा लिये गये ये प्रयोग प्रामाणिक और सटीक हैं, यदि साधक इन प्रयोगों को सम्पन्न कर लेता है, तो इसमें निहित ऊर्जा उसे अद्धितीय बना देती है।

अश्विन शुक्ल पक्ष प्रथम तिथि (26.09.22)

सर्वमनोकामना पूर्ति हेतु

नवरात्रि के प्रथम दिवस पर भगवती जगदम्बा 'शैलपुत्री' के रूप में साध्य है, शैलपुत्री की साधना साधक अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु करता है। अपने जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक समस्त इच्छाओं को पूर्णता देने के लिए यह साधना महत्वपूर्ण है, जिसे सम्पन्न कर साधक अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है।

साधना विधान

लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछायें तथा उस पर केसर से 'शं' अंकित करें, उसके ऊपर **'मनोकामना पूर्ति गुटिका'** स्थापित करें तथा साधक शैलपुत्री का ध्यान करते हुए लाल रंग का पुष्प चढ़ायें–

वन्दे वांछितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढ़ां शूलधरां मातरं च यशस्विनीं।।

इस ध्यान के बाद साधक गुटिका का सामान्य पूजन करें, घी का अखण्ड दीपक लगायें तथा भगवती से अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर नैवेद्य चढ़ायें, फिर **108 चिरमी के दानों** को एक-एक कर निम्न मंत्र बोलते हुए गुटिका पर चढ़ायें–

मंत्र

।। ॐ शं शैलपुत्र्यै फट्।।

इसके पश्चात पुनः मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर भगवती की आरती करें।

न्यौछावर-300/-

द्वितीया तिथि (27.09.22)

भगवती दुर्गा के बिम्बात्मक दर्शन तथा आरोग्यता प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि के दूसरे दिन 'ब्रह्मचारिणी' स्वरूप का पूजन होता है। भगवती आदिशक्ति के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की साधना करने से साधक के घर में आरोग्यता स्थापित होती है। यदि घर में कोई सदस्य निरन्तर रोगग्रस्त बना हुआ है या स्वास्थ्य ठीक होने पर भी स्वस्थ अनुभव नहीं कर पाता, तो उसके लिये संकल्प कर परिवार का कोई सदस्य इस प्रयोग को सम्पन्न करे, तो वह अवश्य लाभ अनुभव करता है।

साधना विधान

लाल रंग के वस्त्र के ऊपर पीले रंग के चावलों की ढेरी बनाबर उस पर **'हरी हकीक माला'** स्थापित कर ब्रह्मचारिणी का ध्यान करें–

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालां कमण्डलुम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

ध्यान के पश्चात माला का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ भोग अर्पित करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ ब्रं ब्रह्मचारिण्यै नमः।।

प्रयोग समाप्ति के बाद देवी की आरती कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर– 250/-

तृतीया तिथि (28.09.22)
समस्त बाधाओं के निराकरण तथा आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

'चन्द्रघंटा' की साधना नवरात्रि के तृतीया तिथि पर सम्पन्न की जाती है। चन्द्रघंटा देवी रौद्र स्वरूपा हैं, जो साधक के समस्त दोष तथा पाप का क्षय कर उसके जीवन की सभी बाधाओं को समाप्त करती है। भगवती चन्द्रघंटा की कृपा प्राप्त कर साधक अपने आपमें अत्यन्त समृद्धशाली और ऐश्वर्यवान हो जाता है।

आकस्मिक धन प्राप्ति और गुप्त धन प्राप्ति के लिये यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ और अद्वितीय प्रयोग है।

साधना विधान

लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर किसी ताम्रपात्र में **'चन्द्रघंटा दुर्गा यंत्र'** स्थापित कर चंन्द्रघंटा देवी का ध्यान करें–

अखण्डजप्रवरारूढ़ा चण्डकोपार्भटीयुता।
प्रसादं तनुतां मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।

ध्यान के पश्चात साधक यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर कोई भी लाल रंग का फल अर्पित करें। इसके बाद 108 लाल पुष्प अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र : ।। ॐ चं चं चं चन्द्रघण्टायै हुं।।

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

न्यौछावर– 250/-

चतुर्थी (29.09.22)
सुख-सौभाग्य, धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के चतुर्थी तिथि को 'कूष्माण्डा' की साधना सम्पन्न की जाती है। कूष्माण्डा प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख-सौभाग्य आदि की कमी नहीं रहती है। कूष्माण्डा प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिये सौभाग्य प्राप्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है।

साधना विधान

साधक पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर किसी ताम्रपात्र में **'सौभाग्यप्रदा यंत्र'** स्थापित कर कूष्माण्डा का ध्यान करें–

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिरप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डेति नमो नमः।।

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर, नैवेद्य अर्पित कर, 108 सफेद पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें–

मंत्र

।। ॐ क्रीं कूष्माण्डयै क्रीं ॐ।।

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न कर प्रसाद कर वितरण करें।

न्यौछावर-250/-

पंचमी तिथि (30.09.22)

गृहस्थ सुख-शांति में वृद्धि तथा कलह समाप्ति हेतु

नवरात्रि की पंचमी तिथि भगवती जगदम्बा के 'स्कन्द देवी' स्वरूप की साधना सम्पन्न होती है। गृहस्थ सुख में न्यूनता हो या घर में कलह निरन्तर बना रहता हो या घर के सभी सदस्यों के मध्य कटुता और द्वेष उत्पन्न हो गया हो, तो उन सब की समाप्ति के लिये तथा आपस में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शांति के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

साधना विधान

अपने सामने लकड़ी का बाजोट रखकर उसके ऊपर पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से 'ॐ' लिखें, फिर उस पर किसी ताम्रपात्र में मंत्र सिद्ध **'गृहस्थ सुख यंत्र'** को स्थापित कर भगवती जगदम्बा के स्कन्द देवी स्वरूप का ध्यान करें–

सिंहासनगता नित्यं वदनमाचितकरद्वया
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी।।

यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा 101 लाल रंग के फूल निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें–

मंत्र

।। ॐ स्कन्दायै दैव्यै ॐ।।

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न करें तथा प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर-250/-

षष्ठी तिथि (01.10.22)

शत्रु समाप्ति तथा अनुकूलता प्राप्ति हेतु

यदि व्यक्ति के आसपास विपरीत वातावरण निर्मित हो रहा हो और उसके शत्रु दिन-प्रतिदिन उसे हानि पहुँचाने के उपाय करते जा रहे हों, तो उसके लिए **'कात्यायनी प्रयोग'** सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है। कात्यायनी रौद्र स्वरूपा हैं और इनको भगवती दुर्गा का छठा स्वरूप माना जाता है।

साधना विधान

सामने रखे बाजोट पर लाल रंग के वस्त्र बिछा कर उस पर काजल से गोल घेरा बनाकर उसमें अपने शत्रु का नाम लिखें तथा उस **'शत्रु मर्दन यंत्र'** स्थापित करें, इसके बाद कात्यायनी देवी का ध्यान करें–

चन्द्रहासोज्ज्वलकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यात् देवी दानवघातिनी।।

ध्यान के बाद यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा **'काली हकीक माला'** से यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का 13 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

।। ॐ क्रौं क्रौं कात्यायन्यै क्रौं क्रौं फट्।।

मंत्र जप के पश्चात आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर-500/-

सप्तमी तिथि (02.10.22)

अकाल मृत्यु भय निवारण तथा व्यापार वर्द्धन हेतु

'कालरात्रि' की साधना सम्पन्न करने से व्यक्ति के मन से अकाल मृत्यु भय समाप्त होता है तथा यह प्रयोग व्यापार करने वालों के लिये भी अत्यन्त उपयोगी है, इसे सम्पन्न करने पर उनके व्यापार में आश्चर्यजनक रूप में वृद्धि होती ही है।

नवरात्रि में इस साधना को सम्पन्न करने से साधक अवश्य सफलता प्राप्त करता ही है।

साधना विधान

इस दिन साधक लाल रंग का वस्त्र बिछाकर **'कालरात्रि यंत्र'** का स्थापन कर कालरात्रि का ध्यान करें–

करालरूपा कालाब्जा समानाकृतिविग्रहा।
कालरात्रि शुभं दधाद् देवी चण्डाट्टहासिनी।।

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर नैवेद्य चढ़ाये तथा धूप–दीप अगरबत्ती लगा कर लाल हकीक माला से निम्न मंत्र की 9 माला मंत्र जप करें–

मंत्र : ।। ॡीं क्रीं हुं।।

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर–500/–

अष्टमी तिथि (03.10.22)

श्रेष्ठ पति या पत्नी प्राप्ति तथा पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के आठवें दिन 'महागौरी' की साधना की जाती है। महागौरी परम सौभाग्य प्रदायक देवी हैं। स्त्रियाँ श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिये तथा पुरुष श्रेष्ठ पत्नी प्राप्ति के लिये इनकी उपासना करते हैं। अप्रतिम दिव्य सौन्दर्य प्राप्त करने के लिये साधना या साधिका इनकी साधना अवश्य सम्पन्न करें।

साधना विधान

अपने सामने बाजोट पर श्वेत रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में **'महागौरी यंत्र'** का स्थापन कर भगवती महागौरी का ध्यान करें–

श्वेतहस्तिसमारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा।।

यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ नैवेद्य अर्पित कर 'हकीक माला' से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें–

मंत्र : ।। ॐ श्रीं महागौर्यै ॐ।।

प्रयोग समाप्ति पर आरती सम्पन्न करें।

न्यौछावर– 500/–

नवमी तिथि (04.10.22)

समस्त साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि का अंतिम दिन 'सिद्धिदायिनी दुर्गा' का है। इस दिन साधक जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने के लिए सिद्धिदायिनी की साधना करता है। इस दिन साधना करने से समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लग जाती है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद साधक वर्ष भर तक जितनी साधनायें करता है, उनमें उसे सफलता प्राप्त होती ही है। यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, तो भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन भी सम्भव होते हैं।

साधना विधान

सफेद रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर **'सिद्धिदायिनी दुर्गा यंत्र'** स्थापित करें। दुर्गा का ध्यान करें–

सिद्ध गन्धर्व यक्षाद्यैः असुरैरमरैरपि।
साध्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी।।

यंत्र का पूजन कर, नैवेद्य अर्पित कर 'सर्व सिद्धि माला' से 31 माला मंत्र जप करें–

मंत्र : ।। ॐ शं सिद्धिप्रदायै शं ॐ।।

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

–न्यौछावर– 500/–

साधक को तो इन सभी अद्वितीय प्रयोगों को नवरात्रि के अवसर पर अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। प्रत्येक प्रयोग अपने आप में साधक के जीवन को परिवर्तित करने वाला प्रयोग है। साधक चाहे तो प्रत्येक प्रयोग अथवा अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। इतना अवश्य ध्यान रखें, कि यंत्र का स्थापन आप नवरात्रि के प्रथम दिवस पर ही करें तथा नित्य दैनिक पूजन कर निर्धारित दिवस पर साधना सम्पन्न करें तथा नवें दिन आरती कर पूर्णाहुति करें, तो अत्यधिक फलप्रद होगा। साधक प्रत्येक दिन किये गये प्रयोगों की सामग्री को नवरात्रि की समाप्ति के बाद किसी भी सोमवार के दिन जल में प्रवाहित कर दें।

कलौ चण्डी विनायकौ

जगत के आदि देव, जगत के मूल सृष्टिकर्ता एवं नित्य स्वरूप भगवान गणपति ही तो है, जो लीला को व्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न स्वरूपों में अवतरित होते ही रहते हैं। कहीं वे देवताओं के अनुरोध पर मां भगवती पार्वती के गर्भ से उत्पन्न बताए गए हैं, तो उनको मां भगवती पार्वती के शरीर की उबटन से निर्मित कहा गया है और कहीं उनको 'योग-पुत्र' की संज्ञा दी गई है

किन्तु वास्तविकता यही है कि वे आदि ब्रह्म हैं, ॐकार स्वरूप हैं तथा इसी कारणवश शास्त्रों में उनकी उत्पत्ति की कथाओं को प्रमुखता न देकर उनके उन स्वरूपों को वर्णित किया गया है, जिनमें वे अपने भक्तों के प्रति कृपालु व वरदायक हैं

भगवान श्री गणपति के अनेक रूपों में जहाँ महागणपति, विजय गणपति, उच्छिष्ट गणपति इत्यादि हैं,

वहीं एक महत्वपूर्ण स्वरूप 'दुर्गागणपति' का भी है, जो इस तथ्य को सुस्पष्ट करता है, कि वास्तव में गणपति एवं दुर्गा का समन्वय ही साधना की पूर्णता है।

दरिद्रता केवल वहीं तक सीमित नहीं होती,

कि व्यक्ति धन, ऐश्वर्य, सौन्दर्य से हीन है वरन् उसके पश्चात् इससे निर्धारित होती है कि व्यक्ति अपनी मानसिकता से जीवन में किस स्थान पर खड़ा है।

यदि सब कुछ होते हुए भी उसके जीवन में सुख, सन्तोष की अनुभूति नहीं है, धन का सदुपयोग करने की चेतना नहीं है, किसी को कुछ प्रदान करने की भावना नहीं है या आगे बढकर उच्च कोटि की साधनाओं में सफल होने की ललक नहीं है, तो वह भी जीवन की दरिद्रता ही है कि ऐसी श्रेष्ठ साधनाएं, उनके रहस्य और सर्वोपरि पूज्य गुरुदेव का साहचर्य है, फिर भी व्यक्ति अभावग्रस्त बना रहकर भाग्य का रोना रोता रहे या अभाव को लेकर हमेशा दुखी बना रहें। दूसरी ओर दैनिक जीवन के अभाव कभी व्यक्ति को उस रूप में एकाग्र होने ही नहीं देते कि वह अपने मानस को किसी एक बिन्दु पर या किसी उच्च चिन्तन पर एकाग्र कर सके और बिना एकाग्रता अथवा निश्चिन्तता के साधना में सफल भी नहीं हो सकते। व्यक्ति जब तक एक बिन्दु पर खो जाने की कला नहीं जान लेता, साधना के पीछे अपने सारे अस्तित्व को नहीं भुला देता, सोते जागते, उठते'बैठते उसी के चिन्तन में लीन नहीं रहने लगता तब तक सफल हो भी कैसे सकता है ?

प्रस्तुत साधना गणपति साधना युक्त होने के कारण इन दोनों ही प्रकार की स्थितियों का निराकरण भली-भांति करती है।

जो साधक धन-अभाव के कारण या दैनिक जीवन की अड़चनों के कारण गतिशील न हो पा रहे हों या जो सभी प्रकार से सुखी, सन्तुष्ट सम्पन्न होते हुए भी साधना के क्षेत्रों में प्रारम्भिक सफलता भी न पा रहे हों, दोनों को ही आगे बढ़ने के लिए मार्ग देती है और यदि साधक इस साधना को अपने दैनिक जीवन का एक स्थायी अंग बना लेता है, तो यह निरन्तर उसके राह में आने वाले कांटों को भी दूर करती ही है।

साधना विधान

यह साधना विशेष रूप से तीन बुधवारों की साधना है। साधक 'श्वेतार्क गणपति' विग्रह को प्राप्त कर किसी भी बुधवार की प्रात: ताम्रपात्र में स्थापित कर उनको शुद्ध घी मिश्रित सिन्दूर से तिलक कर, लाल कनेर के पुष्प, लाल चन्दन, अक्षत एवं दूर्वादल (दूब घास) से पूजन कर एक बड़ा घी का दीपक स्थापित करें, जिसमें सुगन्धित द्रव्य की कुछ बूंदें अवश्य डाल दें। इसके पश्चात 'रक्त स्फटिक माला' से उपरोक्त विग्रह को दुर्गा व गणपति का साक्षात स्वरूप मानते हुए दोनों के संयुक्त बीज मंत्र की तीन माला अथवा पांच माला मंत्र जप करें।

मंत्र

।। ॐ दुं गं कार्य सिद्धये श्वेतार्क गं दुं फट्।।

मंत्र जप के उपरान्त इस दुर्लभ विग्रह को अपने पूजा स्थान में स्थाापित कर सकते हैं। यह तीन बुधवारों की साधना है और साधक चाहे तो नियमित रूप से प्रति बुधवार को भी सम्पन्न कर सकता है। विशेष रूप से जिनके इष्ट गणपति हों अथवा जिनकी इष्ट भगवती दुर्गा हों, उन्हें तो यह साधना नियमित करनी ही चाहिए।

न्यौछावर 660/-

पीपल

आयुर्वेद सुधा

नाम

संस्कृत–अश्वत्थ, बोधिद्रुम, चैत्यद्रु, गुह्यपुष्प, गुरु, कपीतन, कृष्णवास, क्षीरद्रुम।
हिन्दी – पीपल, पीपली। गुजराती – पीपली, पीपुल जरी।

वर्णन

पीपल का वृक्ष हिन्दू धर्म में काफी पूज्य माना गया है। इस वृक्ष के अंदर प्राण वायु को शुद्ध करने का दिव्य गुण रहता है और इसीलिए क्षय, दमा, कुष्ठ, प्लेग, भगन्दर इत्यादि अनेक रोगों पर यह लाभदायक सिद्ध होती है। इसी कारण इस वृक्ष को हिन्दू धर्मशास्त्रों में पूज्य माना है। इसके बड़े–बड़े वृक्ष भारत वर्ष में सब जगह पैदा होते हैं और सब लोग इसको जानते हैं इसलिए इसके विशेष परिचय की आवश्यता नहीं है।

गुण, दोष और प्रभाव

आयुर्वेदिक मत – यह, मधुर, शीतल, कसेला, दुर्जर, भारी, रूखा, कान्ति को उज्वल करने वाला, कड़वा, योनिशोधक और रुधिर दोष, दाह, पित्त, कफ और व्रण को दूर करने वाला है। इसके पके हुए फल शीतल, हृदय को हितकारी तथा रक्तरोग, पित्त, विष, दाह, वमन, शोष व अरुचि को दूर करने वाले हैं।

पीपल की छाल स्तम्भक, रक्त संग्राहक और पौष्टिक होती है। इसके पत्ते तथा फल पाचक, संकोच विकास प्रतिबंधक और रक्त को शुद्ध करने वाले होते हैं।

इसकी छाल संकोचक होती है और सुजाक के अंदर उपयोग में ली जाती हैं। इसकी छाल के अंदर फोड़े को पकाने वाले तत्व भी रहते हैं। इसके फल मृदु विरेचक और पाचनशक्ति को मदद करने वाले रहते हैं। इसके पत्ते और अंकुर विरेचक वस्तु की तरह काम में लिए जाते हैं। इसकी छाल के चूर्ण का मरहम एक शोषक वस्तु की तरह सूजन पर लगाया जाता है। इसके सूखे फलों का चूर्ण पानी के साथ पन्द्रह दिन तक लेने से दमे की बीमारी में बड़ा लाभ होता है।

इसकी पूजा के साथ–साथ इसे देववृक्ष भी माना गया है। इसको काटना घोर अपराध माना गया है अब तो वैज्ञानिकों ने भी इस पेड़ को प्रकृति और आयुर्वेदिक दवाओं के लिए लाभकारी सिद्ध कर दिया है।

भगवान श्री कृष्ण कहते है –

ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थं प्रादुरण्ययम्।
छन्दासि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्।।

अर्थात आदि पुरुष परमेश्वर रूप मूल वाले और ब्रह्म रूप मुख्य शाखा वाले जिस संसार रूप पीपल के वृक्ष को अविनाशी कहते है तथा वेद जिसके पत्ते कहे गये हैं। उस संसार रूप वृक्ष को जो पुरुष मूल सहित तत्व से जानता है, वह वेद के तात्पर्य को जानने वाला है। आइये हम भी जाने की पीपल के पेड़ से हमें क्या–क्या लाभ मिलता है।

उपयोग

- यह हमें 24 घंटे ऑक्सीजन देता है।
- पीपल की ताजी डंडी दातून के लिए काफी उपयोगी है।
- पीपल के ताजे पत्तों का रस नाक में टपकाने से नकसीर में आराम मिलता है।
- हाथ-पाँव फटने पर पीपल के पत्तों का रस या पत्तों का दूध लगाएं।
- पीपल की छाल को घिसकर लगाने से फोड़े फुंसी, घाव और जलने से हुए घाव भी ठीक हो जाते हैं।
- साँप काटने पर अगर चिकित्सक उपलब्ध न हो तो पीपल के पत्तों का रस 2-2 चम्मच दिन में 3-4 बार पिलायें, विष का प्रभाव कम होगा।
- इसके फलों का चूर्ण लेने से बाँझपन दूर होता है और पौरुषता में वृद्धि होती है।
- पीलिया होने पर इसके 3-4 नए पत्तों के रस को मिश्री मिलाकर शरबत पिलायें। 4-5 दिन तक दिन में दो बार दें।
- कुकुर खाँसी में छाल का 40 मि.ली काढा दिन में तीन बार पिलाने से लाभ होता है।
- इसके पके फलों के चूर्ण का शहद के साथ सेवन करने से हकलाहट दूर होती है और वाणी में सुधार होता है। इसके फलों का चूर्ण और छाल सम भाग में लेने से दमा में लाभ होता है। इसके फल और पत्तों का रस मृदु विरेचक है और बद्धकोष्ठता को दूर करता है। यह रक्त पित्तनाशक, रक्त शोधक, सूजन मिटाने वाला, शीतल और रंग निखारने वाला है।

दमा - पीपल की अंतरछाल (छाल के अन्दर का भाग) निकालकर सुखा लें और कूट-पीसकर खूब महीन चूर्ण कर लें, यह चूर्ण दमा रोगी को देने से दमा में आराम मिलता है। पूर्णिमा की रात को खीर बनाकर उसमें यह चूर्ण बुरककर खीर को 4-5 घंटे चन्द्रमा की किरणों में रखें। इससे खीर में ऐसे औषधीय तत्व आ जाते हैं कि दमा रोगी को बहुत आराम मिलता है। इसके सेवन का समय पूर्णिमा की रात को माना जाता है।

दाद-खाज - पीपल के 4-5 कोमल, नरम पत्ते खूब चबा-चबाकर खाने से, इसकी छाल का काढ़ा बनाकर आधा कप मात्रा में पीने से दाद, खाज, खुजली आदि चर्म रोगों में आराम होता है।

मसूड़े - मसूड़ों की सूजन दूर करने के लिए इसकी छाल के काढ़े से कुल्ला करें।

बिगड़े हुए व्रण - इसकी नरम कोपलों को जलाकर उनकी राख को कपड़छान करके बिगड़े फोड़ों पर भुरभुराने से वे भरने लगते हैं।

पैरों की बिवाई - पीपल का रस या दूध लगाने से पैरों की बिवाई मिटती है।

भगंदर - इसकी सूखी हुई अंतर छाल का चूर्ण किसी नली के द्वारा गुदा के नासूर में फूंक देने से कुछ दिन में वह नासूर भर जाता ह।

बंध्यापन - इसके सूखे फलों के चूर्ण की फंकी कच्चे दूध के साथ ऋतुधर्म से शुद्ध होने के पश्चात 14 दिन तक देने से स्त्री का बन्ध्यापन मिटता है।

चर्मरोग - पीपल की अंतर छाल का क्वाथ पिलाने से सब प्रकार के चर्म रोग मिटते हैं। इसके बीजों को शहद के साथ चटाने से रुधिर शुद्ध होता है।

दंतरोग - पीपल की और बड़ की छाल को पानी में औटाकर कुल्ले कराने से दाँतों की पीड़ा मिटती है।

उदरशूल - पेट की पीड़ा मिटाने के लिए पीपल के 2 पत्तों को पीसकुर गुड़ में गोली बनाकर खिलाने से उदरशूल मिटता है।

बदगांठ - पीपल के पत्तों को गरम करके सीधी ओर से बाँधने से बदगाँठ बैठ जाती है।

वमन - इसकी छाल को जलाकर उसको पानी में बुझाकर उस पानी को नितार कर पिलाने से वमन मिटती है।

प्रमेह - इसकी छाल का काढ़ा पिलाने से पित्तज और नील प्रमेह मिटता है।

नारू - इसके पत्तों को तपाकर बांधने से नारू गल जाता है।

बाजीकरण - पीपल की कोमल कोपलें 40 तोला लेकर 4 सेर पानी में औटाना चाहिये। जब 1 सेर पानी रह जाए तब उसको छानकर उसमें 2 सेर शक्कर डालकर चासनी बना लेना चाहिए। चासनी बनने पर छानने से बची हुई कोपले उसी चाशनी में डालकर उसका मुरब्बा बना लेना चाहिए। यह मुरब्बा सवेरे शाम आधी छटांक की मात्रा में खाते रहने से मनुष्य की वीर्य और कामशक्ति बहुत बढ़ती है।

हिचकी - पीपल की छाल को जलाकर राख कर ले, इसे एक कप पानी में घोलकर रख दें, जब राख नीचे बैठ जाए, तब पानी निकालकर पिलाने से हिचकी आना बन्द हो जाता है।

(उपयोग से पूर्व अपने वैद्य की सलाह अवश्य लें)

अहंकार एवं विनम्रता

मृत्यु के बाद एक साधु और एक डाकू साथ-साथ यमराज के दरबार में पहुँचे। यमराज ने अपने बहीखातों में देखा और दोनों से कहा–तुम दोनों अपने बारे में अगर कुछ कहना चाहते हो तो कह सकते हो। डाकू अत्यंत विनम्र शब्दों में बोला–महाराज! मैंने जीवनभर पापकर्म किए हैं।

मैं बहुत बड़ा अपराधी हूँ। अत: आप जो दंड मेरे लिए तय करेंगे, मुझे स्वीकार होगा। डाकू के चुप होते ही साधु बोला–महाराज! मैंने आजीवन तपस्या और भक्ति की है। मैं कभी असत्य के मार्ग पर नहीं चला। मैंने सदैव सत्कर्म ही किए हैं इसलिए आप कृपा कर मेरे लिए स्वर्ग के सुख-साधनों का प्रबंध करें।

यमराज ने दोनों की इच्छा सुनी और डाकू से कहा–तुम्हें दंड दिया जाता है कि तुम आज से इस साधु की सेवा करो। डाकू ने सिर झुकाकर आज्ञा स्वीकार कर ली। यमराज की यह आज्ञा सुनकर साधु ने आपत्ति करते हुए कहा–महाराज! इस पापी के स्पर्श से मैं अपवित्र हो जाऊंगा। मेरी तपस्या तथा भक्ति का पुण्य निरर्थक हो जाएगा।

यह सुनकर यमराज क्रोधित हुए और बोले–निरपराध और भोले व्यक्तियों को लूटने और हत्या करने वाला तो इतना विनम्र हो गया कि तुम्हारी सेवा करने को तैयार है और एक तुम हो कि वर्षों की तपस्या के बाद भी अहंकारग्रस्त ही रहे और यह न जान सके कि सबमें एक आत्मतत्व ही समाया हुआ है। तुम्हारी तपस्या अधूरी है। अत: आज से तुम इस डाकू की सेवा करो।

सद्गुरुदेव ने अपने प्रात:कालीन स्टाफ को दिये जाने वाले प्रवचन में कहा था एवं कई शिविरों में भी कहा, कि सिर्फ दीक्षा लेने से ही तुम शिष्य नहीं हो गये। सर्वप्रथम तुम्हें शिष्य बनना है, तुम बड़े सेठ हो, वकील हो, इंजीनियर हो, डॉक्टर हो, बहुत ज्ञानवान हो, बहुत सुन्दर हो, पढे-लिखे हो, भौतिकता में आकंठ डूबे हो। तुम्हारे नीचे पचास व्यक्ति कार्य करते हैं–इन योग्यताओं से तुम शिष्य नहीं बन सकते। पहले तुम्हें अपने इन आभूषणों को त्याग कर विनम्रता को विकसित करना पड़ेगा, अहंकार रहित होना पड़ेगा अन्यथा कितना ही मंत्र जप कर लो, कितनी ही तपस्या कर लो यदि अंहकार नहीं गया, दूसरों को नीचा दिखाने की प्रवृत्ति नहीं गई तो तुम्हारी सेवा एवं साधना अधूरी ही है और जिस दिन यह अहंकार समाप्त होकर सभी के प्रति हृदय में विनम्रता का संचार हो गया तो उसी क्षण गुरु अपने आप हृदय में स्थापित हो जायेंगे।

कथा का संदेश यह है कि वही सेवा एवं तपस्या प्रतिफलित होती है, जो निरंहकार होकर की जाए। वस्तुत: अहंकार का त्याग ही तपस्या का मूलमंत्र है और यही भविष्य में अपने इष्ट से एकाकार करा देता है।

राजेश गुप्ता 'निखिल'

मेष – सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा है। किसी व्यक्ति से मुलाकात व्यापार में फायदा देगा। आय के स्रोत बढ़ेंगे। विरोधियों का मुकाबला कर सकेंगे। परन्तु रोजमर्रा के जीवन में सावधान रहें। महत्वपूर्ण कागजात पर पढ़कर हस्ताक्षर करें। दूसरों की भलाई से स्वयं परेशानी में पड़ सकते हैं। दूसरे सप्ताह में कोई परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें। मनचाहा रोजगार मिल सकता है, महात्माओं के प्रवचन सुनने में आनंद मिलेगा। विदेश यात्रा का योग है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। आखिरी का सप्ताह संतोषकारी है, धीरे-धीरे उन्नति होगी। वाहन खरीदारी हो सकती है। भाई से कोई शुभ सूचना मिलेगी। मेहनत का पूरा फल नहीं मिलेगा। अधिक जोखिम वाले कार्य न करें। **भाग्य बाधा निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

वृष – प्रारम्भ सफलतादायक रहेगा। नया कारोबार भी प्रारम्भ हो सकता है। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। गरीबों की सहायता करेंगे, फैंसी आइटम के कार्य में सफलता मिलेगी। मानसिक चिंता सतायेगी। कोई छोटी सी बात कलह का कारण बनेगी। गलत मार्ग से रुपयों की प्राप्ति होगी। माह के मध्य में स्वास्थ्य गड़बड़ हो सकता है। आर्थिक स्थिति डावांडोल रहेगी। जमीन-जायदाद के मामले सुलझेंगे। भाईयों में गलतफहमियां दूर होगी। सभी के मध्य प्रेम का वातावरण बनेगा। गलतियों को बार-बार न दोहराये वरना परिणाम विपरीत मिलेगा। आखिरी सप्ताह कष्टकारी रहेगा। चलते-फिरते किसी से खटपट हो सकती है। प्रतिष्ठा को ठेस पहुँच सकती है। गलत तरीके से किये कार्य में शक के घेरे में आ सकते हैं। रुके रुपयों की वसूली होगी। भ्रमण करने में फायदा होगा। **विघ्नहर्ता गणेश दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28, 29

मिथुन – माह का प्रारम्भ सामान्य है। जो भी कदम उठायें सोच-समझ कर उठायें। बाद में मनोवांछित सफल्ता मिलेगी। जीवनसाथी के साथ मधुर व्यवहार रहेगा। सपने पूरे होते दिखाई देंगे। दूसरा सप्ताह कष्टकारी होगा, जल्दबाजी में कोई निर्णय न लें। खर्च पर नियंत्रण रखें। नशीले पदार्थों का सेवन न करें। स्वास्थ्य खराब हो सकता है। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगा रहेगा। इस समय की गई यात्रा में व्यापारिक ऑर्डर भी मिलेंगे। माह के मध्य में लाभ के साथ हानि के भी संकेत हैं। विदेश यात्रा का योग है। अंतिम सप्ताह लाभकारी है, अटके कार्य मित्रों के सहयोग से पूर्ण होंगे। सरकारी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप **महाकाल दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ – 2, 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22, 30

कर्क – सप्ताह का प्रारम्भ कष्टकारी रहेगा। मजबूरी में कोई कार्य करना पड़ सकता है। कोर्ट-कचहरी के मामले में उलझ सकते हैं। वाहन आदि खरीदे लाभ होगा। परिवार के सदस्यों के साथ योजनायें बनायेंगे। किसी धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। किसी भी कार्य में जबरदस्ती न करें। वाहन लापरवाही से न चलायें। विद्यार्थी वर्ग का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। खर्च की अधिकता रहेगी। माह के मध्य में व्यापार में प्रगति होगी। इस समय किसी ऐसे व्यक्ति से मुलाकात होगी, जिससे नयी योजनाएं बनाने में सहयोग मिलेगा। पति-पत्नी में प्रेमभाव का वातावरण रहेगा। परिवार में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। आखिरी सप्ताह में महत्वपूर्ण कार्यों में अड़चन आयेगी। जीवनसाथी का सहयोग मिलेगा। आर्थिक उन्नति होगी आप **अष्ट लक्ष्मी दीक्षा प्राप्त** करें।

शुभ तिथियाँ – 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 25

सिंह – सप्ताह का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। कोशिश करें नौकरी मिल सकती है। रुपये वापस मांगने वाले परेशान कर सकते हैं। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से शत्रु पक्ष हसेंगे। धार्मिक यात्रा का योग है। अचानक जमीन की बिक्री की बात हो सकती है। कोई छुपा रहस्य खुलने का डर है। कानून के शक के दायरे में आ सकते हैं। विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम है। नौकरीपेशा लोगों से उच्च अधिकारी वर्ग सन्तुष्ट रहेगा। प्रोपर्टी डीलर के कार्य में लाभ हो सकता है। तीसरा सप्ताह अनुकूल नहीं है, सतर्क रहें। वाहन धीमी गति से चलायें। गृहस्थ में तनाव की स्थिति रहेगी। कुछ अपनों से ही धोखा मिल सकता है। माह के अंत में शत्रुओं को परास्त कर सकेंगे, मेहनत रंग लायेगी। आप **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

शुभ तिथियाँ – 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

कन्या – सप्ताह का प्रारम्भ संतोषप्रद रहेगा। सभी कार्य पूरे करने में सक्षम रहेंगे। उच्चाधिकारी से मुलाकात महत्वपूर्ण जानकारी देगी। यहां समय अनुकूल है। व्यापार में वृद्धि होगी, प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शत्रु बदनाम करने की कोशिश करेगें। खर्च अधिक रहेगा। लापरवाही नुकसान पहुंचा सकती है। दूसरे सप्ताह में लाभप्रद समाचार मिलेगा। अटके कार्य पूरे होंगे। किसी पर अत्यधिक विश्वास न करें। धोखा मिल सकता है, स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहें। धार्मिक कार्यों में रुचि रहेगी। कोई छोटी सी बात लड़ाई का कारण बन सकती है। सतर्क एवं सचेत रहें। अनर्गल कार्यों में समय बीतेगा। संतान पक्षसहयोग करेगा। नये मकान की खरीदारी का सौदा हो

सकता है। पैतृक जायदाद मिलने की सम्भावना है। आप **रोग निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 9, 10, 18, 19, 20, 27, 28, 29

तुला - सप्ताह का प्रारम्भ सुखप्रद रहेगा। कैरियर के लिए उत्तम समय है। कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा। सरकार की ओर से कोई सम्मान भी प्राप्त हो सकता है। धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। किसी की तबियत खराब होने से चिंतित रहेंगे। मन कामकाज में नहीं लगेगा। दूसरे सप्ताह में चिंताएं सतायेगी। अहंकार से सर्वदा दूर रहें, अन्यथा कोई घटना हो सकती है। दीन-दुखियों की सहायता करेंगे। माह के मध्य में यात्रा से लाभ प्राप्ति होगी। उतार-चढ़ाव का समय है। लाभ होगा, लेकिन अधिक लालच में न पड़ें। नौकरीपेशा लोग सावधान रहें, कोई महत्वपूर्ण फाइल खो जाने से परेशानी में पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मेहनत का पूरा फल मिलेगा। अटके रुपये प्राप्त होंगे। आप दृढ़ निश्चय से अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होंगे, आखिरी सप्ताह में समस्यायें आ सकती है। रुपया उधार न देवें। दाम्पत्य जीवन में मधुरता रहेगी। आर्थिक परेशानी दूर होगी। आप **भैरव दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22, 30

वृश्चिक - सप्ताह का प्रारम्भ प्रतिकूल रहेगा। कोई आपत्ति आ सकती है। शत्रुओं से सावधान रहें, कार्यों के प्रति सावधान रहें। मुसीबतों का हल निकाल लेंगे। उच्चाधिकारी वर्ग प्रसन्न रहेगा। सरकारी कर्मचारियों का प्रमोशन या आय वृद्धि के अवसर हैं। दूसरों की बातों में न आकर स्वयं पर भरोसा रखे। मित्रों का साथ मिलेगा। वाणी में मधुरता रहेगी। कोई छोटी सी बात कलह का कारण बन सकती है। इस समय वाहन की खरीदारी हो सकती है। गृहस्थ जीवन में सुख और सहयोग मिलेगा। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगेगा। आलस्य से दूर रहें। स्वास्थ्य का ख्याल रखें। अच्छे लोगों से मित्रता का लाभ मिलेगा। आखिरी सप्ताह में कोई भी सौदा सोच-विचार कर करें। ट्रेनिंग पूरी होने पर नौकरी मिल सकती है। आप **रोग निवारण दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 25

धनु - सप्ताह का प्रारम्भ उचित परिणाम लायेगा। तीर्थ यात्रा का प्रोग्राम बन सकता है। किसी छोटी-सी बात को लेकर कलह का वातावरण बन जायेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। अवांछित कार्यों से रुपयों की प्राप्ति होगी। दूसरे सप्ताह में आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहेगी। अचानक यात्रा हो सकती है। मनोवांछित कार्य बनने से मन प्रसन्न रहेगा। भाइयों में गलत-फहमी दूर होकर सामंजस्य बनेगा। विद्यार्थियों की रुचि पढ़ाई में रहेगी। किसी दूविधा में रहेंगे, महत्वपूर्ण कार्यों में बाधा आने से मन उदास रहेगा। अटके हुये रुपये वसूल होंगे। माह के अंत के सप्ताह में आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। व्यापार बढेगा, आय के स्रोत बढ़ेंगे। आखिरी तारीख में कोई भी कार्य करते समय सोच-समझ कर कदम उठायें। जल्दबाजी में लिये निर्णय से छवि खराब हो सकती है। इस माह आप **विघ्ननाशक गणपति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 7, 8, 15, 16, 17, 25, 26, 27

मकर - सप्ताह का प्रारम्भ श्रेष्ठकारी रहेगा। परिस्थितियों सुधरेगी, आशानुकूल प्रगति होगी। विदेश यात्रा का योग बन रहा है। संजोये सपने साकार होंगे। किसी अपने का स्वास्थ्य खराब होने से चिन्तित होंगे। शत्रु वर्ग से सावधान रहें। कोई अपना भी धोखा दे सकता है। फालतू में किसी से उलझें नहीं। दूसरे सप्ताह में नौकरी प्राप्ति के अवसर हैं। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात दिनचर्या बदल देगी। अचानक किसी प्रॉपर्टी को

सर्वार्थ सिद्धि योग -	सितम्बर-11, 13, 17, 25, 30
रवि योग -	सितम्बर-2, 5, 6, 9, 16, 17, 29
अमृत सिद्धि योग -	सितम्बर-17, 26

लेकर झगड़े की स्थिति बन सकती है, काफी टेंशन में रहेंगे। उधारी वसूली करने से सफल होंगे, तीसरे सप्ताह में किसी भी महत्वपूर्ण कार्य को टालने की कोशिश करें। आखिरी सप्ताह में कोई भी कदम सोच-समझकर उठायें। जोखिमपूर्ण कार्यों से दूर रहें। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। मनोवांछित सफलता हासिल होगी। परिवार में सभी का सहयोग रहेगा। **मनोवांछित कार्य सिद्धि दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 1, 2, 7, 10, 18, 19, 20, 27, 28, 29

कुम्भ - माह के प्रारम्भ के 4-5 दिन श्रेष्ठ रहेंगे। आय के स्रोत बढ़ेंगे। कार्यों के हालात में सुधार होगा, शत्रुओं को जवाब देने में सक्षम रहेंगे। कोई अशुभ समाचार मिल सकता है। किसी का हित चाहेंगे, वह आपके विपरीत रहेगा। व्यवहार में खिन्नता होगी। अचानक तबीयत खराब हो सकती है। काम के प्रति लापरवाही न करें। वाहन चलाते समय सावधानी रखें। नशे आदि से दूर रहें अन्यथा स्वास्थ्य के लिए हानिकारक रहेगा। माह के मध्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति रहेगी। ज्यादा लालच में न पड़ें। अपनों का सहयोग नहीं मिलेगा। बाधायें आयेंगी लेकिन साहस से सामना कर पायेंगे।आखिरी सप्ताह में प्रॉपर्टी डीलर के कार्य में अवसर प्राप्त होंगे। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगा रहेगा। गलत सोहबत से दूर रहें, जीवनसाथी से वैचारिक मतभेद होंगे। कहीं बाहर जाने का प्रोग्राम बन सकता है। **नवग्रह शांति दीक्षा** प्राप्त करें।

शुभ तिथियाँ - 2, 3, 4, 11, 12, 20, 21, 22, 30

मीन - सप्ताह की शुरुआत अनुकूल नहीं है। शत्रु हावी रहेगा। इस समय किसी से उलझें नहीं। किसी और की गलती आप पर थोपी जा सकती है। कार्यों में सतर्कता रखें। शीघ्र ही समय एवं परिस्थितियां बदलेगी। कठिन परिश्रम से ही लाभ मिलेगा। अविवाहितों के रिश्ते का समय है। परिवार के साथ मधुर सम्बन्ध रहेंगे। इस समय यात्रा ये बचें। दूसरों की बातों में न आकर अपने पर भरोसा रखें। मित्रों का सहयोग मिलेगा। माह का मध्य शुभ रहेगा। किसी अनजान व्यक्ति से मुलाकात जीवन में बदलाव लायेगी। नौकरीपेशा के प्रमोशन का समय है। इस समय नया कार्य प्रारम्भ करने के पहले अच्छी तरह सोच-विचार कर लें। आखिरी सप्ताह भूमि, वाहन के क्रय के लिए शुभ रहेगा। अपनी आवश्यकताओं पर नियंत्रण रखें। पारिवारिक झंझटों से मानसिक शांति भंग हो सकती है। अपने ऊपर भरोसा रखकर कार्य करें। **नवग्रह मुद्रिका** धारण करें।

शुभ तिथियाँ - 5, 6, 13, 14, 15, 23, 24, 25

इस मास व्रत, पर्व एवं त्यौहार

दिनांक	वार	व्रत/पर्व
03.09.22	शनिवार	संतान सप्तमी
03.09.22	शनिवार	राधा अष्टमी/अष्ट लक्ष्मी जयंती
07.09.22	बुधवार	भुवनेश्वरी जयंती
09.09.22	शुक्रवार	अनंन्त चतुर्दशी
10.09.22	शनिवार	श्राद्ध प्रारम्भ
18.09.22	रविवार	प्रेत सिद्धि दिवस
25.09.22	रविवार	सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या
26.09.22	सोमवार	शरद नवरात्रि प्रारम्भ
30.09.22	शुक्रवार	उपांग ललिता व्रत

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर-4)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (सितम्बर-5)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (सितम्बर-6)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (सितम्बर-7)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरूवार (सितम्बर-1, 8)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (सितम्बर-2, 9)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (सितम्बर-3, 10)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (सितम्बर-11, 18, 25)	दिन 07.36 से 10.00 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 04.30 तक रात 07.36 से 09.12 तक 11.36 से 02.00 तक
सोमवार (सितम्बर-12, 19, 26)	दिन 06.00 से 07.30 तक 09.00 से 10.48 तक 01.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
मंगलवार (सितम्बर-13, 20, 27)	दिन 06.00 से 07.36 तक 10.00 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक रात 08.24 से 11.36 तक 02.00 से 03.36 तक
बुधवार (सितम्बर-14, 21, 28)	दिन 06.48 से 11.36 तक रात 06.48 से 10.48 तक 02.00 से 04.24 तक
गुरूवार (सितम्बर-15, 22, 29)	दिन 06.00 से 06.48 तक 10.48 से 12.24 तक 03.00 से 06.00 तक रात 10.00 से 12.24 तक
शुक्रवार (सितम्बर-16, 23, 30)	दिन 09.12 से 10.30 तक 12.00 से 12.24 तक 02.00 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 01.12 से 02.00 तक
शनिवार (सितम्बर-17, 24)	दिन 10.48 से 02.00 तक 05.12 से 06.00 तक रात 08.24 से 10.48 तक 12.24 से 02.48 तक 04.24 से 06.00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

सितम्बर-22

11. किसी असहाय को भोजन करायें।
12. पीपल के पत्ते पर मिठाई रखकर पीपल के वृक्ष की जड़ में रख दें।
13. किसी हनुमान मन्दिर में प्रसाद चढ़ाकर सारा प्रसाद गरीबों में बांट दें।
14. आज प्रातः गाय को रोटी खिलायें।
15. किसी ब्राह्मण को दक्षिणा के साथ अन्न दान करें।
16. पीपल के पेड़ में जल अर्पित करें।
17. काली उड़द की दाल एवं तेल दान करें।
18. आज रविवार के दिन भगवान सूर्य को अर्घ्य दें।
19. शिव मन्दिर में सफेद फूल अर्पित करें एवं जल चढ़ायें।
20. प्रातः बगलामुखी गुटिका (न्यौ. 150) स्थापित करके 'ह्लीं' मंत्र का 101 बार उच्चारण करके उसे धारण कर लें।
21. निखिल स्तवन के श्लोक 11 से 20 का पाठ हिन्दी अनुवाद सहित पढ़ें।
22. आज दुर्लभोपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
23. किसी देवी मन्दिर में तीन लाल पुष्प चढ़ायें।
24. शनि यंत्र (न्यौ. 250/-) का पूजन कर पीपल के पेड़ की जड़ में दबा दें।
25. सर्व पितृ श्राद्ध अमावस्या पर पत्रिका में प्रकाशित साधना सम्पन्न करें।
26. आज शरद नवरात्रि के प्रारम्भ पर माँ दुर्गा का पूजन करके जाएं।
27. कुछ सरसों के दाने अपने ऊपर 7 बार घूमाकर दक्षिण दिशा में फेंक दें।
28. आज शक्कर का दान करें, सफलता मिलेगी।
29. आज कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व इष्ट मंत्र का जप करें।
30. पत्रिका में प्रकाशित ललिताम्बा साधना सम्पन्न करें।

अक्टूबर-22

1. किसी कुंआरी कन्या को कुछ दक्षिणा दान करें।
2. प्रातः पूजन के बाद 'क्रीं' मंत्र का 51 बार उच्चारण करके जाएं।
3. मां दुर्गा के मंत्र की 1 माला अवश्य करके जाएं।
4. आज दुर्गा नवमी पर पूजन हवन सम्पन्न करें, कन्याओं को भोजन करायें।
5. आज विशालाक्षी साधना सम्पन्न करें।
6. आज अन्न दान करें।
7. शिष्योपनिषद सी.डी. का श्रवण करें।
8. शनि मुद्रिका (न्यौ. 150/-) धारण करें।
9. आज भगवान लक्ष्मी नारायण का पूजन करके ही बाहर जाएं।
10. माता लक्ष्मी की आरती करके ही जाएं।

05.10.22 - विजया दशमी

विशालाक्षी साधना

जो अष्ट सिद्धि प्रदायिनी देवी है और साधक के अभीष्ट को पूर्ण कर धन-धान्य, मान-सम्मान, प्रदान करती है।
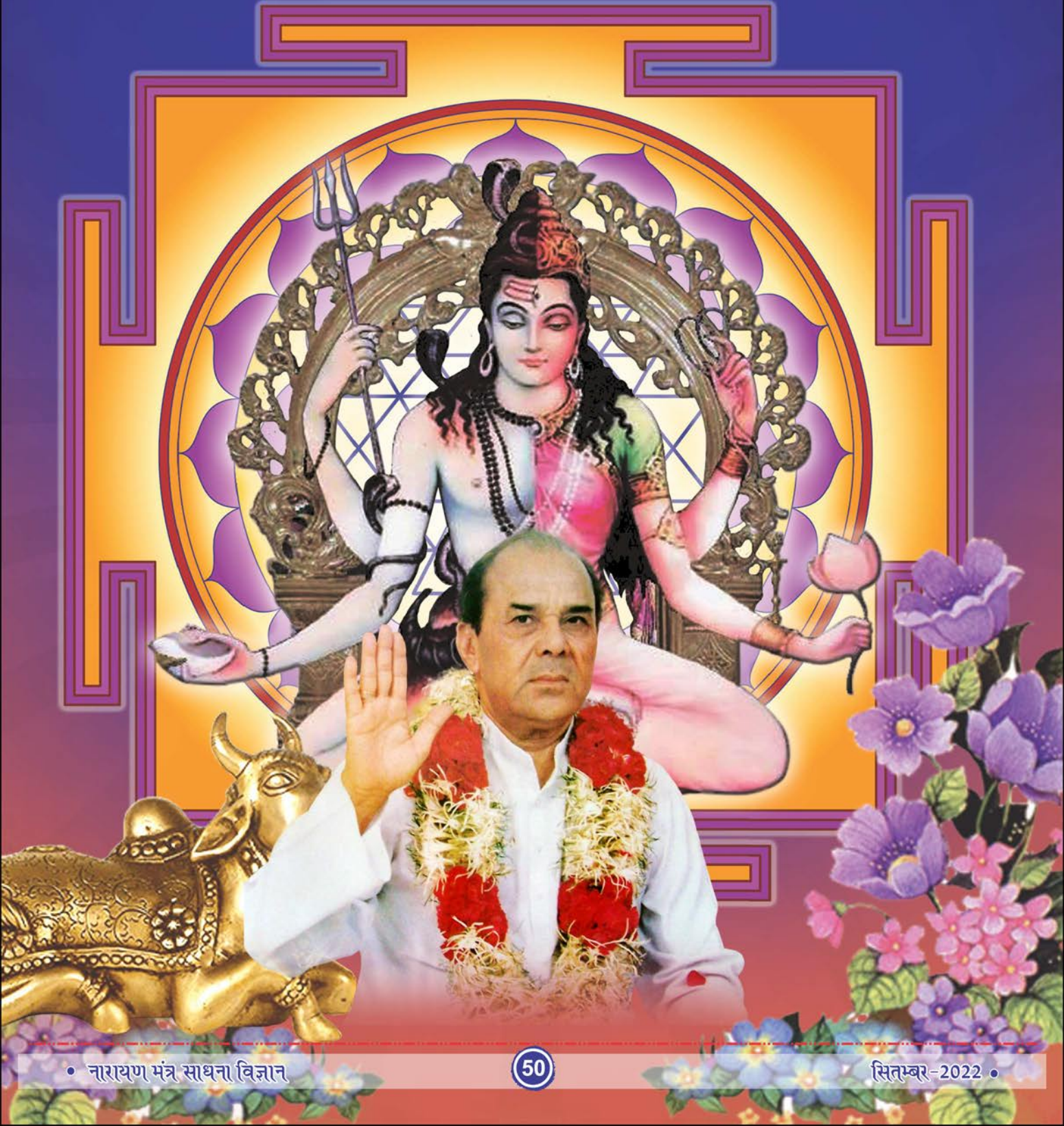
बात उन दिनों की है जब मैं साधनाओं को जानने और समझने का प्रयत्न कर रहा था। जहां भी मुझे लगता किसी स्थान पर कोई सिद्ध योगी आए हैं तो मैं उनसे मिलने पहुँच जाता। ऐसे ही मैं भटकता रहता था परंतु मुझे साधनाओं के विषय में कोई ठोस जानकारी नहीं मिल सकी। यद्यपि मैं इस विशाल समुद्र में एक तिनके की भांति ही था जिसका अलग से कोई अस्तित्व नहीं था। मैं अनेकों सिद्ध महात्माओं से मिला लेकिन मुझे उनसे मिलकर कोई संतुष्टि प्राप्ति नहीं होती थी। उनको देख कर मुझे लगा कि उन्होंने छोटे मोटे तंत्र प्रयोग सीख कर सामान्य जन मानस के मध्य प्रदर्शन कर स्वयं को स्थापित किया हुआ है।

ऐसा कह कर मैं किसी की अवहेलना नहीं कर रहा हूँ पर वास्तविकता यही है कि मैं निरंतर खोज में इधर-उधर घूमता रहता। तभी ऐसे ही किसी संन्यासी ने मुझसे कहा यदि तुम्हें वास्तव में साधनाएं सीखनी है तो गंगोत्री की ओर चले जाओ। वहां तुम्हें कोई योगी अवश्य ही मिलेंगे जो तुम्हारी स्पृहा को शांत कर सकेंगे।

उनकी बात सुनकर मैं थोड़ा हिचकिचाया पर मन में दृढ़ इच्छा लिए हुए गंगोत्री की ओर रवाना हो गया। जाते समय मुझे विश्वास अवश्य था कि मुझे अवश्य ही कोई सिद्ध योगी प्राप्त हो जाएंगे जो मुझे साधना सिद्ध करवा सकेंगे। गंगोत्री पहुंचने के बाद मुझे वहां कई संन्यासी मिले पर कोई ऐसा नहीं था जिससे मैं प्रथम साक्षात्कार में प्रभावित हो सकता या उनके प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ती।

धीरे-धीरे वहां मुझे सात दिन व्यतीत हो चुके थे, मैं मन ही मन दु:खी भी हो रहा था, कि क्या मेरे भाग्य में इस पथ पर अग्रसर होना नहीं है। मैं सोचता और फिर व्यथित हो जाता, कि यदि मुझे कोई गुरु मिल जाए, तो मैं उनका हाथ पकड़ लूँगा और उनके निर्देशन में मैं अवश्य इस पथ पर अग्रसर हो सकूँगा।

एक दिन घूमते-घूमते मैं न जाने किस ओर से एक अत्यंत निर्जन प्रदेश में पहुंच गया। वहां पर एक संन्यासी ध्यानस्थ मुद्रा में बैठे थे। वहां का वातावरण अन्य स्थानों की अपेक्षा अत्यंत सुरम्य था, वहां प्रकृति अपने पूर्ण सौन्दर्य में विराजमान थी। मैं आश्चर्य में पड़ गया - गंगोत्री के इस निर्जन प्रदेश में इतनी सुरम्यता, इतनी दिव्यता कहां से आ गई?

मैं कौतुहलवश उनकी प्रत्येक भाव मुद्रा को देख रहा था। अत्यंत शीत होने पर भी वहां सर्दी का अनुभव नहीं हो रहा था। करीब घण्टे-डेढ़ घण्टे बाद वे प्रकृतिस्थ हुए और एक चट्टान पर जाकर बैठ गये। कुछ ही देर में देखते-देखते वहां का वातावरण पुन: परिवर्तित हुआ और शीत लहर का प्रभाव व्याप्त हो गया, मेरे लिए यह साधना का प्रत्यक्ष आश्चर्यजनक अनुभव था।

मैं धीरे-धीरे उन योगी की ओर बढ़ा, जहां वे चट्टान पर निश्चिंत हो बैठे थे। मैंने उनके समक्ष जाकर उन्हें प्रणाम किया, तो वे चौंक गये। शायद उस निर्जन वन की ओर कोई जाता ही न हो इसलिए मुझे देख कर चौंक गये हों।

एक क्षण में उनकी भाव मुद्रा बदल गई, वे कुछ क्रोधित हो बोले - ''कौन हो? यहां किस प्रयोजन से आये हो? क्या चाहते हो?''

मैं उनके प्रश्नों से घबरा गया था, पर फिर हिम्मत जुटा कर बोला - 'मैं यहां मार्ग भटक कर आ गया हूँ। संध्या हो चुकी है और वापस जाने के मार्ग का ज्ञान नहीं है।

वापस जाने का मार्ग ज्ञात न होने पर उन्होंने मुझ पर कृपा कर वहां रोक लिया और वह रात्रि ही मेरे भाग्योदय की रात्रि बन गई। उनकी ही गुफा में मैंने रात्रि व्यतीत की, सम्पूर्ण रात्रि उन्होंने साधना की, जिसके फलस्वरूप मुझे भी अत्यधिक आनन्द की अनुभूति होती रही। सम्पूर्ण रात्रि मैं मन ही मन अपने इष्ट का मंत्र जप करता रहा।

प्रात: काल ब्रह्ममुहूर्त ही में वे पुन: अपनी साधना में बैठे और बैठते ही वे अचेत हो गये। मैं घबरा कर उनके समीप गया, तो उनको स्पर्श करने से ज्ञात हुआ, कि वे अत्यधिक ज्वर से पीड़ित हैं। मैंने उनको उठाया, उनके हाथ-पैर की मालिश की तथा जो मुझसे बन पड़ा वह किया।

करीब तीन-चार घण्टे बाद जाकर उन्हें होश आया, पर ज्वर के कारण वे स्वयं को अत्यधिक कमजोर महसूस कर रहे थे। पांच-छह दिन लग गये उन्हें पूर्ण रूप से स्वस्थ होने में और इन छह दिनों में मैं उनके लिए दूध लाता,उनकी सेवा करता और प्रत्येक क्षण उनके ही कार्य में रत रहता। इन छह दिनों में एक क्षण का भी मुझे समय नहीं मिल पाया, कि मैं संध्या वंदन कर पाता या उनसे किसी प्रकार की साधनात्मक चर्चा कर पाता। हाँ! नित्य इतना अवश्य करता, कि जहां वे साधना करते थे, उस स्थल को साफ करता, वहां उपस्थित विग्रह को नित्य धोता-पोंछता और पूजन

करता। साधनात्मक ज्ञान अल्प होने से मैं न तो यह जान पाया,, कि वह विग्रह किसका है और न ही कभी कोई विधान किया। सिर्फ विग्रह को नित्य स्नान करा कर, कुंकुंम और पुष्प चढ़ा देता। इतने दिनों में मैं वहां के क्षेत्र से भी अच्छी तरह से परिचित हो गया।

वहां से कुछ ही दूरी पर एक गाँव था या यों कहें, कि कबीला था, जहां आठ-दस परिवार रहते होंगे, वहीं से नित्य दूध ले आता और फल आदि की व्यवस्था भी हो जाती थी। वे गाँव वाले भी अत्यंत सहयोगी व धार्मिक प्रवृत्ति के थे, जिससे कभी मुझे उनसे किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं अनुभव हुई।

जब वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हुए, तब मुझे लगा कि वे मुझे अब जाने की आज्ञा दे देंगे, पर ऐसा नहीं हुआ। मेरा हृदय हर क्षण संशय ग्रस्त रहता, कि न जाने किस क्षण वे मुझे जाने की आज्ञा प्रदान कर दें। इतने दिनों में मैं उनकी काफी निकटता प्राप्त कर चुका था, मेरे मन में उनके प्रति अत्यंत अपनत्व हो गया था। वे मुझे अपने साधनात्मक अनुभव सुनाते थे और मेरे साथ अत्यंत मित्रवत् व्यवहार करते। उनकी इसी निकटता को प्राप्त कर अब उन्हें छोड़कर जाने की कल्पना भी मन में आती तो हृदय बैचेन हो उठता था।

परंतु दो-तीन दिन बाद ही उन्होंने मुझे जाने की आज्ञा दे दी, यह आज्ञा उन्होंने अत्यंत कठोर शब्दों में दी, जैसे वे मुझे जानते हों। लेकिन मैं तो उनसे जन्म-जन्मातर का संबंध बना चुका था। अत: उनके समक्ष मैं फूट-फूट कर रोने लगा, एक बालक की भांति उनके चरणों से लिपट गया, मेरी स्थिति यह हो गई थी, कि मुझे जाने की आज्ञा देने की अपेक्षा मृत्यु दे दें, तो वह अधिक रुचिकर होगी।

वे मुझसे अपने आपको छुड़ाकर पुन: उसी शिला पर ध्यानस्थ हो गये, जहां मैंने उन्हें प्रथम अवसर पर देखा था। मैं एक ओर होकर बैठ गया, हठीले बच्चे की तरह मन में हठ बना ली, कि यदि मुझे जाने की आज्ञा पुन: दी, तो मैं यहीं आत्महत्या कर लूँगा, पर वापस नहीं जाऊंगा। कई घण्टे व्यतीत हो गये, रात्रि धीरे-धीरे प्रगाढ़ होने लगी, पर वे प्रकृतिस्थ नहीं हुए। मैं निरंतर रोता ही जा रहा था। अगले दिन सुबह जब वे उठे, तो मैं वहीं एक वृक्ष के नीचे ठिठुरता हुआ दिखाई दिया।

मेरी ओर देखते हुए मुस्करा कर बोले - ''तू अपनी परीक्षा में सफल हुआ।''

. . .और अपने स्नेहापूरित हाथों से मुझे स्पर्श किया, मुझे लगा कि क्षणभर में ही मेरे अन्दर कोई विद्युत तरंग सी प्रवेश कर गई है।

मैं उनके चरणों से लिपट गया और कहने लगा - 'मैं अब यहां से नहीं जाऊंगा।'

वे मुस्करा दिये, मैं उस क्षण स्वयं को कुबेर की भांति समझ रहा था, जो देवताओं की सम्पूर्ण निधियों के स्वामी हैं।

अचानक मेरे मस्तिष्क में प्रश्न कौंधा - 'जिनके स्पर्श मात्र से मैं स्वयं में इतनी चेतना अनुभव कर रहा हूँ, फिर वे स्वयं कैसे इतने दिनों तक रोगग्रस्त रहे?'

मैं यह प्रश्न ले उनके सम्मुख पहुंचा, तो उन्होंने उत्तर दिया - 'मैं प्रकृति में हस्तक्षेप नहीं करता।'

मैं भी संतुष्ट हो गया, फिर उन्होंने मुझे दीक्षा प्रदान कर मुझे ऐसी साधनायें सम्पन्न करवाई, जिसके कारण मैं जीवन के भौतिक और आध्यात्मिक पक्ष में पूर्णता प्राप्त कर सका। मुझे अपने जीवन में कभी भी धन की याचना नहीं करनी पड़ी, कभी भी मेरे समक्ष शत्रु टिक नहीं सके और हर क्षण गुरुदेव ने अपनी कृपा से मुझे अभिभूत रखा।

काफी समय बाद उन्होंने एक ऐसा रहस्य उद्घटित किया, जिसे जानकर आज भी मेरा रोम-रोम उनके लिए श्रद्धावत हो झुक जाता है।

उन्होंने कहा - ''तुमने मुझे प्रश्न किया था, कि जब आपके स्पर्श से मैं क्षण मात्र में ठीक हो गया, तो फिर आप

दो-तीन दिन बाद ही उन्होंने मुझे जाने की आज्ञा दे दी, यह आज्ञा उन्होंने अत्यंत कठोर शब्दों में दी, जैसे वे मुझे जानते हों। लेकिन मैं तो उनसे जन्म-जन्मातर का संबंध बना चुका था। अतः उनके समक्ष मैं फूट-फूट कर रोने लगा, एक बालक की भांति उनके चरणों से लिपट गया, मेरी स्थिति यह हो गई थी, कि मुझे जाने की आज्ञा देने की अपेक्षा मृत्यु दे दें, तो वह अधिक रुचिकर होगी।

वे मुझसे अपने आपको छुड़ाकर पुनः उसी शिला पर ध्यानस्थ हो गये, जहां मैंने उन्हें प्रथम अवसर पर देखा था। मैं एक ओर होकर बैठ गया, हठीले बच्चे की तरह मन में हठ बना ली, कि यदि मुझे जाने की आज्ञा पुनः दी, तो मैं यहीं आत्महत्या कर लूँगा, पर वापस नहीं जाऊंगा। कई घण्टे व्यतीत हो गये, रात्रि धीरे-धीरे प्रगाढ़ होने लगी, पर वे प्रकृतिस्थ नहीं हुए। मैं निरंतर रोता ही जा रहा था। अगले दिन सुबह जब वे उठे, तो मै वहीं एक वृक्ष के नीचे ठिठुरता हुआ दिखाई दिया।

इतने दिनों तक रोग से ग्रस्त कैसे रहे?''

''इसका कारण स्पष्ट करता हूँ - तुम गंगोत्री में न जाने कहां-कहां भटकते रहते, पर तुम मेरे शिष्य थे और हो भी, मुझे तुम्हें अपने निकट लाने और ये अद्धितीय साधनायें तुम्हें देने के लिए, अपने प्रति पूर्ण रूप से तुम्हारा विश्वास प्राप्त करने के लिए ही मुझे वह स्वांग रचना पड़ा। इतने दिनों में मैं तुम्हारी सेवा भी लेता रहा और मात्र छह दिनों में ही मैंने तुम्हारे साधनात्मक स्तर को वहां पहुंचा दिया, जिस स्तर पर तुम पिछले जीवन में थे। उस क्षण तुम पर क्रोध करना भी उसी परीक्षा का एक भाग था, जिसमें सफल होने के बाद ही मैंने तुम्हें वे साधनायें प्रदान कीं, जिससे तुम पूर्णता प्राप्त कर सको।''

यह कहकर उन्होंने वह विग्रह मुझे दिया, जिसकी साधना वे करते थे। यह विग्रह माँ विशालाक्षी का था, जिनकी साधना कर अर्जुन ने भी अपने जीवन को सर्वोच्चता प्रदान की थी और मैं भी अपने जीवन में भी निरंतर उन्नति कर सकूं, इस हेतु ही मुझे विशालाक्षी साधना सम्पन्न करवाई थी।

मै उस क्षण यह सोचकर आश्चर्य चकित रह गया, कि गुरु को शिष्य का अपने प्रति विश्वास दिलाने, उसे साधनात्मक स्तर प्रदान करने के लिए कितना कुछ करना पड़ता है और शिष्य यह समझता है, कि जब गुरु जी ही ठीक नहीं हैं, तो मुझे क्या ठीक करेंगे? ऐसे ही वे परीक्षायें लेते हैं शिष्यों की घास-फूस को छांटने में।

मैं सौभाग्यशाली हूँ, कि मेरे ऊपर उन्होंने स्वयं ही अपनी कृपा कर अत्यंत सहज माध्यम से मुझे दुर्लभ साधना प्रदान की, जिस साधना के कारण मैं भौतिक जीवन में धन, सम्मान, यश आदि प्राप्त कर सका। वहीं विशालाक्षी साधना पत्रिका में प्रस्तुत है -

साधना विधान

- इस साधना में आवश्यक सामग्री 'विशालाक्षी यंत्र' और ''हकीक माला'' है।
- यह साधना साधक 05.10.2022 को सम्पन्न करें या फिर किसी भी माह में 'सवार्थ सिद्धि योग' पर सम्पन्न करें।
- साधक पीले वस्त्र धारण करें।
- लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछायें, उस पर चावल से त्रिकोण बनायें, त्रिकोण के मध्य केशर से तिलक करें। फिर उस पर यंत्र स्थापित करें।
- घी का दीपक लगा कर धूप लगायें।
- यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें।
- विशालाक्षी देवी का ध्यान करें -

ध्यायेद देवीं विशालाक्षीं, तप्त-जम्बू-नद-प्रभाम्।
द्विभुजामम्बिकां चण्डीं, खड्ग-खेटक-धारिणीम्।।
नानालंकार-सुभगां, रक्ताम्बर-धरां शुभाम्।
सदा षोडश-वर्षीयां, प्रसन्नास्यां त्रिलोचनाम्।।
मुण्ड-मालावली-रम्यां, पीनोन्नत-पयोधराम्।
शवोपरि महा-देवीं, जटा-मुकुट-मण्डिताम्।।
शत्रु-क्षय-करीं देवीं, साधकाभीष्ट-दायिकाम्।
सर्व-सौभाग्य-जननीं, महा-सम्पत्प्रदां स्मरेत्।।

- फिर ''हकीक माला'' से निम्न मंत्र की 75 माला मंत्र जप करें-

।। ॐ ह्रीं विशालाक्ष्यै नमः ।।

- साधना समाप्ति के बाद 21 दिन तक नित्य तीन माला मंत्र जप करें। 21 दिन बाद यंत्र तथा माला नदी या तालाब में प्रवाहित कर दें।

- न्यौछावर - 500/-

लक्ष्मी

इस संसार में सब तेरी माया है

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवि! भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी! मंत्र मूर्तेः सदा देवि! महालक्ष्मि! नमोऽस्तुते।।
आद्यन्त रहिते देवि! आदिशक्ते! महेश्वरि! योगजे योग-सम्भूते! महालक्ष्मि! नमोऽस्तुते।।

लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम होते हैं

जिनकी परिपालना अत्यन्त आवश्यक है।

आगे दो विशेष प्रयोग दिये जा रहे हैं।

इन सरल प्रयोगों का महत्त्व साधक इन्हें सम्पन्न कर ही समझ सकते हैं।

माया रूपी इस संसार में जो माया है, वह लक्ष्मी ही है, इसके बिना संसार रसहीन, स्वादहीन एवं नीरस हो जाता है और जो लक्ष्मी सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वही सांसारिक विजेता माना जाता है, लक्ष्मी साधना के कुछ विशेष नियम है, जिनकी पालना तो अत्यंत आवश्यक है।

लक्ष्मी साधना हेतु भाद्रपद, आश्विन एवं कार्तिक माह सर्वश्रेष्ठ माने गये है, इन तीन महीनों में नियम से लक्ष्मी साधना करने वाला साधक इच्छित फल अवश्य ही प्राप्त करता है।

ऐसा विधान है कि शुक्ल पक्ष में बृहस्पतिवार श्रेष्ठ माना गया है, और इस दिन यदि पंचमी, दशमी तथा पूर्णिमा तिथि हो तो श्रेष्ठ योग कहा गया है। यदि किसी गुरुवार को श्रेष्ठ योग न हो तो रवि तथा सोमवार को लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जा सकती है, इसके अतिरिक्त गुरु पुष्य योग भी श्रेष्ठ योग है। आने वाले समय में विजयादशमी, दीपावली के अतिरिक्त लक्ष्मी साधना का सर्वश्रेष्ठ योग आश्विन पूर्णिमा जिसे शरद पूर्णिमा भी कहा जाता है श्रेष्ठतम योग है, यह दिवस और रात्रि संयुक्त रूप से सिद्धि दिवस कहा गया है, इस दिन को जागरी लक्ष्मी साधना सम्पन्न की जाती है।

यह दिवस कुबेर सिद्धि दिवस भी है, शास्त्रोक्त विधान है कि जब भी लक्ष्मी साधना सम्पन्न करें, तो लक्ष्मी के साथ-साथ नारायण और कुबेर की साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी की पूजा यदि स्त्री करे तो उसके लिए विशेष सौभाग्य प्राप्त होता है तथा विवाहित व्यक्ति को जोड़े में अर्थात् पति-पत्नी दोनों को बैठ कर यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। लक्ष्मी अन्नपूर्णा भी कही गई है और जिसके घर में लक्ष्मी की कृपा होती है वहां धन-धान्य की कमी नहीं रहती, जो साधक लकड़ी के एक बर्तन में चार सेर धान्य भर कर पूर्व दिशा की ओर मुँह कर पुष्पों से सजा कर पूजा करता है, उसके घर-परिवार में धन-धान्य की वृद्धि होती है।

यद्यपि लक्ष्मी तथा सरस्वती के संबंध में आपसी विरोध की बातें बहुत सारी पुस्तकों में लिखी गई है, जब कि वास्तविक स्थिति यह है कि जब भी लक्ष्मी पूजन करें उस दिन प्रात: सरस्वती पूजन अवश्य करना चाहिए। सरस्वती रहित अर्थात् बुद्धिहीन व्यक्ति के पास लक्ष्मी कभी भी वास नहीं करती, यह ध्यान रहे। लक्ष्मी साधना में सुगंधित श्वेत पुष्पों का प्रयोग श्रेष्ठ माना गया है, और यदि संभव हो तो कमल पुष्पों द्वारा लक्ष्मी की पूजा सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि लक्ष्मी का आसन ही कमल है। लक्ष्मी पूजा में घण्टा नहीं बजाना चाहिए। सुगंधित द्रव्यों द्वारा अपने सामने लक्ष्मी मूर्ति अथवा चित्र को स्वर्ण आभूषण इत्यादि से विभूषित कर लक्ष्मी पूजा करना चाहिए।

आगे के दो प्रयोग लक्ष्मी साधना के सिद्ध लघु प्रयोग हैं, जिनकी सरलता में ही इनका प्रभाव छिपा है और जो साधक पूर्ण श्रद्धापूर्वक लक्ष्मी साधना के ये प्रयोग सम्पन्न करता है, उसके घर में लक्ष्मी का वास होता है।

साधक स्वयं भी श्वेत वस्त्र पहिनें श्वेत आसन हो, अपने सामने एक सफेद थाली में श्वेत वस्त्र बिछा कर उस पर सवा पाव चावल की ढेरी बनाएं उस पर गिरी का गोला रखें, गोले पर सफेद चन्दन से लक्ष्मी बीज मंत्र 'श्रीं' लिखें तथा गोले का पूजन करें। अपने सामने लक्ष्मी जी का हाथ में कमल पुष्प धारण किए हुए गरुड़ आसन पर बैठी लक्ष्मी का चित्र स्थापित कर उसका पूजन करें।

नारियल के गोले के आगे चावल की तीन ढेरी बनाएं एक ढेरी पर कुबेर यंत्र दूसरी ढेरी पर लक्ष्मी कमल चक्र तथा तीसरी ढेरी पर नारायण सिद्धि फल स्थापित करें, अब मूल पूजन प्रारंभ होता है। पूजन से पहले घी का दीपक जला दें तथा जब तक पूजन और मंत्र जप चलता रहे तब तक यह दीपक अवश्य ही जलते रहना चाहिए। सर्वप्रथम गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु आज्ञा प्राप्त करें, तत्पश्चात् कुबेर पूजन सम्पन्न करें, कुबेर का ध्यान कर निम्न कुबेर मंत्र की तीन माला का जप करें। मंत्र जप लक्ष्मी माला से करना है–

मंत्र

।। ॐ वैश्रवणाय स्वाहा।।

तत्पश्चात् नारायण पूजन सम्पन्न करें, इस पूजन में नारायण सिद्धि फल पर केसर कुंकुम विशेष रूप से अर्पित करें हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र की एक माला करें –

मंत्र

।। ॐ नमो नारायणाय।।

अब लक्ष्मी पूजन सम्पन्न होता है, सर्वप्रथम एक पुष्प लक्ष्मी चक्र के नीचे स्थापित कर ॐ आधार शक्त्ये कमलधारिण्यै सर्व शक्ति सिद्धयै नमः। मंत्र बोल कर लक्ष्मी का आह्वान करें तत्पश्चात् आगे दूध का बना नैवेद्य तथा सुपारी, पान, लौंग आदि अर्पण करें, तब हाथ जोड़ कर 'श्री महालक्ष्म्यै दीपंदर्शयामि नमः' कह कर लक्ष्मी के आगे दीपक रखें।

अब साधक अपने पास एक कटोरा पुष्पों से भर कर रखें तथा निम्न महामंत्र बोलते हुए एक-एक पुष्प लक्ष्मी मूर्ति तथा लक्ष्मी चक्र के आगे अर्पित करें –

मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै कमल धारिण्यै
गरुड़ वाहिन्यै श्रीं ह्रीं ऐं स्वाहा।।

इस प्रकार 108 बार मंत्र जप करना है और यह प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करना आवश्यक है, यदि 108 पुष्प की व्यवस्था न हो सके तो साधक 108 पुष्प पंखुड़ियां भी प्रयोग में ला सकते हैं। यह प्रयोग सिद्ध प्रयोग है और रोजगार, व्यापार आदि से संबंधित बाधा हो तो निश्चय ही दूर हो जाती है और मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है।

साधना सामग्री- 570/-

स्वर्णकांति लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग उन साधकों के लिए है जो आर्थिक दृष्टि से थोड़े ठीक हैं, लेकिन इतने अधिक उन्नत नहीं है कि अपनी इच्छानुसार धन-वैभव प्राप्त कर रहे हों, उन्हें यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

इस प्रयोग में भगवती लक्ष्मी का पूजन करना है।
साधना में लक्ष्मी की नौ शक्तियों का भी विशेष पूजन किया जाता है, वे नौ शक्तियां हैं -

1. विभूति, 2. उन्नति, 3. कान्ति, 4. सृष्टि, 5. कीर्ति, 6. सन्नति, 7. पुष्टि, 8. उत्कृष्टि, 9. ऋद्धि।

09.10.22 को या किसी भी शुक्रवार के दिन प्रातः अपने सामने बाजोट पर अष्टगंध से कमलदल बनाएं, मध्य में लक्ष्मी चित्र या मूर्ति को स्थापित करें और उसके समक्ष कोई भी स्वर्ण आभूषण समर्पित करे। तत्पश्चात् नौ चावल की ढेरियां बनाएं और क्रमशः निम्न नौ सामग्रियां रखें--

1. कार्यसिद्धि गुटिका, 2. उन्नतिदायक गुटिका, 3. सिद्धि फल, 4. तांत्रोक्त फल,
5. सर्पाकार मुद्रिका, 6. श्री फल, 7. पांच कमल बीज, 8. महालक्ष्मी यंत्र,
9. सर्वसिद्धि चैतन्य चक्र।

अब इन शक्तियों का पूजन निम्न प्रकार से करना है-

विं विभूत्यै। उं उन्नत्यै। कां कान्त्यै। सृ सृष्ट्यं। कीं कीत्वर्यै। स सन्नत्यं।
पुं पुष्ट्यै। उं उत्कृष्टयै। ऋं ऋद्ध्यै। श्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय।
श्रीं महालक्ष्मी अमृत चैतन्य मूर्त्यैं।

इस पूजन में लक्ष्मी की प्रत्येक शक्ति को कुंकुम, केसर, पुष्प, फल, चावल, नैवेद्य अर्पण करना है और प्रत्येक शक्ति के पूजन के साथ उस शक्ति को नमस्कार करते हुए अपनी श्रद्धा व्यक्त करनी है। (यह प्रयोग मूल रूप से तो एक लाख पच्चीस हजार मंत्र जप का है) साधक प्रतिदिन पांच माला सुबह पांच माला शाम अथवा इससे अधिक भी मंत्र जप कमलगट्टे की माला से सम्पन्न करें। लक्ष्मी साधना में कमलगट्टे की माला का विशेष प्रयोग है। यह अनुष्ठान सात दिनों तक करना है–

मंत्र

श्रीं ह्रीं श्रीं हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजत-स्त्रजां।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

प्रतिदिन शाम को गाय को कुछ भोजन अवश्य दें, तथा जब मंत्र अनुष्ठान पूरा हो जाए तो दशांश हवन अवश्य करें, लक्ष्मी की यह विशेष साधना महा साधना है और साधक को धन-धान्य कीर्ति, समृद्धि प्रदान करने वाली हैं इसे सम्पन्न करने वाला साधक लक्ष्मी कृपा से जीवन में कभी भी वंचित नहीं रहता।

साधना सामग्री - (कमलगट्टा माला + नौ सामग्री)

लक्ष्मी साधना के उपरोक्त दो प्रयोग अत्यंत सरल प्रयोग हैं और लक्ष्मी अपने भक्तों के गुण अवगुण को न देखते हुए जो उनकी साधना करता है, भक्ति करता है उस पर निश्चित रूप से प्रसन्न होकर शीघ्र फल प्रदान करती है।

यह दोनों प्रयोग शरद पूर्णिमा के दिन या प्रयोग में दिये गये दिन को प्रारम्भ किये जा सकते हैं।

साधना सामग्री- 700/-

सर्व दुख नाशक प्रयोग

यह लघु प्रयोग 'लक्ष्मीप्राप्ति' पुस्तक में लक्ष्मी के विशिष्ट स्वरूप हेतु उद्धृत है

जो कि जीवन के सभी दुःखों का नाश करने के लिए सपन्न किया जाता है।

किसी भी शनिवार को बाजोट पर 'ह्रीं यंत्र' स्थापित करें। उसका केसर से पूजन कर 'विद्युत माला' से ग्यारह माला जप करें

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रं सः नमः ।।

OM HREEM HRAM SAH NAMAH

यह प्रयोग पांच दिन का है। प्रयोग पश्चात् माला तथा यंत्र नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर- 450/-

सर्व रोग निवारण प्रयोग

यह लघु प्रयोग 'कुण्डलिनी यात्रा मुलाधार से सहस्रार तक' से लिया गया है

जो कि सभी रोगों का नाश करने के लिए सम्पन्न किया जाता है।

किसी भी रात्रि को घुटनों के बल बैठ कर,
'धन्वन्तरी माला' से नित्य इक्यावन माला मंत्र जप करने से रोग का निदान होता है-

मंत्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं सर्व रोग नाशय फट् ।।

OM HREEM HREEM SARV ROG NASHAY PHAT

यह पन्द्रह दिन का प्रयोग है। प्रयोग के पश्चात् माला को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर- 250/-

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन का निवास होता है

शरीर के प्रत्येक अंग को सुड़ौल बनाना है और मन से हर समय जवान रहना है तो अपनाइये

और भगाइये शारीरिक मानसिक रोग

गोरक्षासन

विधि :

जमीन पर दोनों पैर फैलाकर बैठ जाइये। इसके बाद दोनों पैरों को मोड़कर उनके तलवों को नाभि की सीध में कीजिये। इस दशा में दोनों तलवों की एड़ी-एड़ी से और अंगुलियां, अंगुलियां से मिल जाने चाहिए। साथ ही परस्पर मिली हुई एड़ियों को गुदा और लिंग के मध्य स्थित सीवन स्थान से भली भांति सटा दीजिये और दोनों एड़ियां सीवन स्थान को दबाती रहनी चाहिए। अब श्वास भरते हुए कमर सीधी करें। उसके बाद दोनों हथेलियों को घुटनों पर रखिये और दोनों घुटनों को भूमि पर छुआने का प्रयास कीजिए। इसमें हठ करने की आवश्यकता नहीं है धीरे-धीरे कुछ समय पश्चात् ऐसी स्थिति आ पायेगी। इस स्थिति में मेरुदण्ड सीधा रहना चाहिए। दृष्टि नासाग्र पर अवस्थित होनी चाहिए। इस स्थिति में जितना समय आप आसानी से श्वास रोक सकते हैं, रोकें। ध्यान स्वाधिष्ठान चक्र पर।

इस आसन से दबाव सीवन स्थान पर ही रहना चाहिए। अण्डकोष अथवा अण्डकोष की खाल नहीं दबनी चाहिए। स्त्रियां भी ध्यान रखें। उनकी जननेन्द्रिय पर किसी प्रकार का दवाब नहीं पड़ना चाहिए।

इस आसन को दो से दस मिनट तक करना चाहिए।

लाभ :

वीर्य रक्षा के लिये यह आसन अति उत्तम है। इसके अभ्यास से प्रमेह रोग दूर होता है, स्वप्नदोष निवारण में भी सहायक है। शुक्र ग्रंथियां पुष्ट होती है। ब्रह्मचर्य व्रत पालन में यह आसन विशेष रूप से सहायक है।

नारियों में, गर्भाशय पुष्ट होता है। जरायु संबंधी दोष दूर होते हैं। मासिक धर्म संबंधी अनियमिततायें, ल्यूकोरिया, कटिशूल आदि दूर होते हैं। इससे घुटने व जांघों की नसें व मांसपेशियां सुदृढ़ होती हैं। यह आत्मबल, आत्मचेतना और इच्छा शक्ति बढ़ाता है। भुजाओं पर तनाव पड़ने के कारण उन्हें शुद्ध रक्त प्रचुर मात्रा में मिलता है, अत: भुजायें भी सशक्त बनती है।

शक्तिपातयुक्त दीक्षा

गणपति दीक्षा

गणपति दीक्षा प्राप्त करना साधक के लिये कल्पवृक्ष के समान फलप्रदायक है। गणपति सभी प्रकार के भौतिक सुखों के प्रदाता, विघ्नहर्ता तथा ऋणहर्ता है।

गणपति दीक्षा प्राप्त करने से साधक को समस्त भौतिक सुख-सम्पत्ति, समस्त नौ निधियां प्राप्त होती हैं। गणपति विद्या के आधार है, अतः वे अपने साधक को कुशाग्र बुद्धि प्रदान करते हैं और इसके साथ ही साथ ओंकारवत् होने के कारण अपने साधक को आध्यात्मिक रूप से भी परिपूर्ण करते हैं।

गणपति के परिवार में ऋद्धि-सिद्धि और शुभ-लाभ हैं।
अतः गणपति दीक्षा से घर में सम्पत्ति वृद्धि होती है।
कार्य में सिद्धि प्राप्त होती है।
व्यापार में लाभ होता है तथा शुभ कार्य सम्पन्न होते हैं।
अतः गणपति दीक्षा कलियुग की सर्वश्रेष्ठ दीक्षा मानी गई है
और इस बार महाशिवरात्रि से पहले यह दीक्षा प्राप्त होना श्रेष्ठ सौभाग्य है।

मंत्र

।। ॐ गं गणपतये नमः ।।

योजना केवल 10, 11 एवं 16 सितम्बर 2022 इन दिनों के लिए है

किन्हीं पांच व्यक्तियों को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 2250/- **'नारायण मंत्र साधना विज्ञान'**, जोधपुर के बैंक के खाते में जमा करवा कर आप यह दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। दीक्षा के लिए फोटो आप हमें संस्था के वाट्स अप नम्बर 8890543002 पर भेज दें। इसी वाट्स अप नम्बर पर पांचों सदस्यों के नाम एवं पते भी भेज दे।

Wealth and more wealth

The Sadhana of Kuber Yantra is considered the best among all rituals for gain of wealth. It is the Sadhana of none other than the treasurer of the Gods - Kuber. It was due to his devotion to the Lord that Kuber got this honour bestowed upon him through the grace of Lord Shiva.

One might be a simple family man, a businessman or an ascetic the importance of wealth is one's life cannot be denied. Even our Rishis and Yogis accomplished Sadhanas to acquire wealth. When the great king Dashrath needed wealth for a war he supplicated before his Guru Vashishth for help. Vashishth had thousands of disciples whom he fed on his own.

This shows that none of our Rishis was a pauper or a beggar. Due to the power of Tantra the Rishis were able to fulfil all their wishes. But today when man is cut off from spiritualism he depends totally on wealth for everything when the fact is that unlimited wealth can be assured through Sadhanas.

Today the very basis of all comforts of life is money and without it life cannot be imagined. For food, education of children, marriage of one's child and to fulfil the various needs one is totally dependant on money.

No doubt through hard work one can rise high. But some times even hard work does not bring the desired amount of success financially. If along with hard work one also seeks the help of Sadhanas then one can very quickly attain to the desired level of prosperity.

Kuber Yantra Sadhana is one very fast acting and powerful ritual through which one could become rich very quickly. Following are the benefits of the Sadhana - attainment of wealth and prosperity, success in business, freedom from debts, riddance from poverty.

The Sadhana must be tried on a **Sunday** between 9 pm and midnight. Have a bath and wear white clothes Sit facing North on a white seat. Cover a wooden seat with a red cloth. In a Steel plate write **Jha** with vermilion.

On it place ***Kuber Yantra***. On the right side of the Yantra place a ***Tantrokt Nariyal***. Offer vermilion, rice grains and rose petals on the Yantra and Nariyal.

Light ghee lamp and incense. Join both palms and chant this verse.

Manujbaahya Vimaan Varasthitam, Garud Ratnanibham Nidhi-naayakam. shiv-sakhah Mukutaadi-vibhooshitam, Var-gade Dadhatam Bhaj Tudilam.

Then chant 25 rounds of the following Mantra with a **Kamalgatta rosary**.

Om Sham Sheem Shamaadhipatih Aagachh Yakshaay Kuberaay Phat

After this chant one round of Guru Mantra. Then offer more rose petals on the Yantra. The next day place the Yantra in business place or in your safe tied in a red cloth.

Tie theTantroki Nariyal and rosary in a red cloth and drop the bundle in a river or pond. After 45 days drop the Yantra too in a river or pond.

Truly this is a very unique Sadhana which has been much praised by the various texts of Tantra.

It is said that the place where this Sadhana is accomplished becomes blessed by Lakshmi, the Goddess of wealth and prosperity and one never again has to suffer from any material paucity in life.

Sadhana articles - 700/-

18 सितम्बर 2022

माँ विन्ध्यवासिनी साधना शिविर

शिविर स्थल : ऋद्धि-वृद्धि गेस्ट हाउस, नटवर चौराहा, जंगी रोड, विंध्याचल, मिर्जापुर (उ.प्र.)

नोट : विन्ध्याचल स्टेशन से 3 किलोमीटर एवं मिर्जापुर स्टेशन से 3 किलोमीटर की दूरी पर

मुख्य आयोजक–इन्द्रजीत राय–8210257911, 9199409003, मनोज कुमार शर्मा (मिर्जापुर)–9236591523, अनिल जयसवाल, (मिर्जापुर) –8127831089, अजय जयसवाल, (वाराणसी)–9335643294, अनुराग द्विवेदी (बुढार मध्य प्रदेश)–98266 12023, सुनील सेठ (मुगलसराय)–9415622157, डी.के. पाण्डेय (सतना, म.प्र.), सूर्यानारायण दुब्बे एवं विद्या देवी (इलाहाबाद)–7408169214, संजय शर्मा (रीवा) डॉ. सुमन चौरासिया (लाटघाट)–7007692878, आयोजक मिर्जापुर–दुर्गेश तिवारी–99190 07784, मनीष सेठ 9956440545, देवेन्द्र नाथ मिश्रा–82127 19063, राम आश्रय पाण्डेय–7376161493, विजया नन्द गिरी–9161194576, अरूण चन्द्र पाण्डेय, संतोश मिश्रा, डॉ. नन्द लाल चौरसिया, मुनमुन दुबे, हिमांशु मिश्रा, संतोष श्रीवास्तव, प्रो. बबहु सिंह, कुलदीप शुक्ला, रविन्द्र कुमार पाण्डेय, विकास प्रजापति, डॉ. रमेश चन्द्रा, अमृतांशु मिश्रा, विन्ध्याचल–सोनू दुबे–80090 07077 , प्रयागराज– राजेश श्रीवास्तव, गया प्रसाद यादव, अजीत श्रीवास्तव, रामचन्द्र केसरी वाणी, विजय शुक्ला, गाटगी राय, सदानन्द राय, अतिन्द्र सिंह, चित्रकूट– राजेश दुबे, चाकघाट– सिद्धनारायण त्रिपाठी, मुगलसराय– भानु प्रताप यादव, शिव कुमार जयसवाल, जयदेव घोष, मनोज कुमार पाण्डेय, क्षितिकान्त केशरी, दत्ता राजपूत, वाराणसी– प्रेम नन्दन पाण्डेय, अशीष दुबे, दिनेश सेठ, रामाधार विश्वकर्मा, रौनक जयसवाल, अजय मौर्या, सिद्धार्थ पाण्डेय, लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी, अवधेश शर्मा, भदोही–मेवालाल श्रीमाली, झगरू रामधीन, ललू गुप्ता, राधेश्याम प्रजापती, रमेश बोधनमाल, राजेश वर्णवाल, विद्या शंकर (ललू जी), जयशंकर सिंह, राजकुमार गुप्ता, पारासनाथ गुप्त, गोपीगंज–राजेश पण्डा, जौनपुर–मीरा सिंह, रीता गुप्ता, अमरनाथ पाण्डेय, श्याम लाल गुप्ता, लखीमपुर खीरी–चन्द्र कुमार रसतोगी, रीवा (मध्य प्रदेश) –डॉ. राजेश्वर वर्मा, सतना–ए.पी. मिश्रा, पियुश श्रीवास्तव, कटनी–राकेश श्रीवास्तव, बरही–डॉ. सुभाष पटेल, राम अवतार गुप्ता,

8 अक्टूबर 2022

सद्गुरु निखिलेश्वरानन्द कृपायुक्त

सहस्त्राक्षी लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल :

अन्नपूर्णा मन्दिर, लदरूहीं, **चौंतड़ा**, जिला–मण्डी (हि.प्र.)

आयोजक हिमाचल प्रदेश सि.सा. परिवार–आर.एस. मिन्हास–8894245685, संजीव कुमार–8894513703, अजय कुमार–9816120454, बलराम काकु–9805580784, विनीत कुमार–8017008690, विकास सूद–9816066485, रमेश चन्द्र, अजय कुमार, अजय धरवाल, गोविंद राम, त्यागी, रोहित, पुरुषोत्तम, महेश बस्सी, खेमचन्द, वीना देवी, इला ठाकुर, नीना पटियाल, काँगड़ा–देव गौतम–8894075015, वृन्दा गौतम, सुनील नाग, ओंकार राणा, सुनन्दा, संजय सूद, कुशला देवी, अशोक कुमार, राजू, संध्या, केसर गुरंग, जुल्फीराम, ओमप्रकाश शर्मा, जीतलाल कालिया, सुभाष चन्द्र शर्मा, नरेश शर्मा, दिनेश निखिल, हमीरपुर–निर्मला देवी, राजेन्द्र शर्मा, सुनील भाटिया, प्रवीण धीमान, जाहू–सागरदत्त, प्रभदयाल, चमन, अशोक कुमार, सुन्दरनगर– जयदेव वर्मा–9816314760, वंशीराम ठाकुर, नीलम, शिमला– चमनलाल कौण्डल, सुरेन्द्र कंवर, टी.एस. चौहान, तुलसीराम कौण्डल

9 अक्टूबर 2022

तारा महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल : होटल M4U (एम फॉर यू), हमीरपुर रोड, नजदीक बस स्टैण्ड, घुमारवीं (जिला बिलासपुर–हि.प्र.)

आयोजक घुमारवीं–ज्ञानचन्द रतन–9418090783, धर्मदेव शर्मा – 9805820830, राजेश कुमार–8219200398, संजय शर्मा एडवोकेट– 9218502781, हेमलता कौण्डल–9816048648, प्रदीप गुप्ता–9816047662, गोवर्धन–9816093510, हेमराज–9418673731, प्रेम सागर–9418115670, नरेन्द्र– 82195 47388, डॉ. सुरेश ठाकुर–8988142740, पिंकी– 9817068928, प्रकाश राणा–8580903884, सुषमा– 98051 39373, बीना–9418528102, जगदीश ठाकुर– 7018265076, यशवन्त राणा–8218259028, कमलेश ठाकुर–8219597325, बलदेव भाटिया–9817194811, जयपाल शर्मा–9418075136, शुका राम–9736298911, तिलक राज–8219834869, रविन्द्र कुमार–9816307688, ललित कुमार–9643676057, स्नेह लता–8278849848, उत्तम–98171 90815, कश्मीर

सिंह-9816125858, सागर-9459318584, यसुमति-9418520478, रामकुमार-9816862834, अश्विनी शुक्ला-9888530833, सुरेन्द्र शुक्ला-7018176331, राजू सेन -98829 66086, सिरी राम-9816491011, डॉ. सुमन-94182 57738, सन्तोष-9816160261, सुभाष नड्डा-9817171928, जगदीश गदी-9816764766, मनशा राम-8894880584, अमरनाथ शर्मा-9817083130, संजू बाबा-9418005236, सुरेन्द्र-98170 44770, अश्विनी कुमार-9817724090, चमन-9805876001, विजय-9817055316, रजनी-96254 74643, अरविन्द कुमार-9418050544, जगदीश (मरहोल) -9816592904, सुन्दर-97361 44322, रामस्वरूप- 9418460221, **बरठीं**-प्रकाशो-9418084207, **तलाई**-डॉ. राजेश-9625478910, जेजवीं-9816693447, गोपाल-9805986985, रामलाल-9816817466, विश्वनाथ-9816574250, **बिलासपुर**-जीवनलता-9418046965, राजेश भारद्वाज-7018418938, धर्मपाल- 9418450251, अंकुश- 97362 57462, **कन्दरौर**-चैन लाल- 9805650078, सुरेश चन्देल-70185 35326, सदा राम-9816243101, **हमीरपुर**- राजेन्द्र शर्मा-9418134039, कुलदीप -9459012418, डॉ. गगन-9418125421, प्यारसिंह-96253 04976, **मण्डी**-डॉ. भुवन-9817041416, **सुन्दर नगर**-रविन्द्र नाथ-94187 26430, जयदेव शर्मा-9816314760, **सरकाघाट**-रोशनलाल -9459590877, जगदीश शर्मा-7018630982, **शिमला**-तुलसी राम कौण्डल- 9418694858, सी.एल. कौण्डल-9418040560, अशोक शर्मा- 94599 60098, **नगरोटा सूरियां**-ओम प्रकाश-9418250674, अमरजीत -9418350285

15 अक्टूबर 2022

10 महाविद्या साधना शिविर

शिविर स्थल : मंगल रिसोर्ट, बरगदवाँ चौराहा, खेतान हॉस्पीटल के सामने, सुनौली रोड, **गोरखपुर (उ.प्र.)**

मुख्य आयोजक-इन्द्रजीत राय-8210257911, 9199409003, के.के. शुक्ला, (गोरखपुर) 737661853, सेतभान जी (गोरखपुर) 87368 64333, अजय जयसवाल (वाराणसी)-9335643294, डॉ. एस.पी. चौरासिया (लाटघाट)-9450734919, डॉ. राज द्विवेदी (गोरखपुर) -9140524182, अमरनाथ जी (गोरखपुर)-91405 24182, योगी रमेश नाथ जी (गोरखपुर) 9517084233, **आयोजक गोरखपुर**-बद्री नारायण श्रीवास्तव, प्रभात कुमार, राम नारायण पठवा, दुर्गा सिंह, राम प्रकाश पाण्डेय रवि प्रकाश, डॉ. चन्द्र प्रकाश जी, विवेकानन्द त्रिपाठी, महेन्द्र प्रताप सिंह, सुरेश गुप्ता, अवधेश प्रसाद सिंह, कौशल्या देवी, खुशबू गुप्ता, दीप नारायण शुक्ला, गिरी जी, मोदन बाल जी, रामाशेष जी, सुग्रीव चन्द्र जी, उपेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, सम्पूर्णनन्द त्रिपाठी, मिलन जी, गुठान निसाद, शकुन्तला देवी, रमेश मौर्या, सत्यदेवी, कान्तानाथ जी, सुधीर जी, रमई जी, रामहरी जी, रविन्द्र जी, किशन कुमार, रामलाल जी, व्रिजेश कुमार, अशोक गुप्ता, रविन्द्र कुमार, एतवार नाथ, देवेन्द्र नाथ मिश्रा, अलख, सुग्रीव कुनोजिया, प्रेम प्रकाश, संजय निसाद, महेश गुप्ता, सुनील पासवान, गुठुल प्रसाद, ओरी शर्मा। **संत कबीर नगर (खलीलाबाद)**- जनार्दन सिंह, रूधन प्रसाद चौरासिया, ऋषिकेश राय, ललख निरंजन, चन्द्रभान राय, डॉ. गिरी राय, गंगा प्रसाद, बैजनाथ वर्मा, रामाशीष चौरासिया। **लाटघाट**-व्यास मिश्रा, दुर्गा प्रसाद मौर्या, विंध्यवासनी राय, हेमन्त दुब्बे, सुजी राय, दया शंकर शुक्ला, श्रीमती निर्मला चौरासिया, राम केवल सिंह, विजय शंकर यादव, दिनेश सिंह, डॉ. अनिरूद्ध सिंह, डॉ. रत्नेश पाण्डेय, डॉ. शिवम यादव, दिनेश चौरासिया, मूनीष चन्द्र मिश्रा, विजय वर्णवाल, योगेन्द्र पटेल, डॉ. रामकिसुन सिंह, कमलेश राय, डॉ. श्री कृष्ण मौर्या, मोती मौर्या, रामसिंह मौर्या, बिनोद कुमार, सत्य प्रकाश सिंह, उपेन्द्र पटेल, अनिस दुबे, उपेन्द्र मौर्या। **दोहरीघाट बड़हलगंज** - राजकुमार राय, अजय राय, आनन्द तिवारी, नित्यानन्द मिश्रा, दया शंकर तिवारी, डॉ. राजीव पाण्डेय, वीरेन्द्र शाही, श्री कृष्ण यादव, राम गोविन्द यादव, संतोश गुप्ता, शिवांकर तिवारी। **रौनापार** - अभय नारायण सिंह पटेल, रवि शंकर यादव, ओम प्रकाश गोड़, जय बहादुर सिंह, अनिल यादव, सीता राम यादव, उमेश गुप्ता, शंकर गुप्ता, रामरूप यादव, वि. के. शर्मा, मनोज श्रीवास्तव। **आजमगढ़** - विंध्याचल पाण्डेय, घनश्याम तिवारी, संजय पाण्डेय, रवि उपाध्याय, पूजा यादव, जितेन्द्र यादव, सौरभ उपाध्याय, मकरन्द साहनी, आशा चौहान, राजेश गुप्ता, जितेन्द्र मौर्या, नन्दु यादव, दुख हरण यादव (सदर आजमगढ़)। **बलिया**- डॉ. शशांक राय, सरोज जी, विन्ध्याचल चौहान, विजय प्रजापती, जर्नादन यादव, राम कृपाल चौहान। **बस्ती सोनहा**- सुरेश चन्द्र, **अम्बेडकर नगर**- चन्द्रभान यादव, **बस्ती**-दिनेश चन्द्र पाण्डेय, ओमकार सिंह, व्रिजेश सिंह। **कुशीनगर** - ओम प्रकाश पाण्डेय, रत्ना राज लक्ष्मी पाण्डेय, धर्मेन्द्र गुप्ता, वैद्यनाथ वर्मा, **जहांगीरगंज**-इन्द्रजीत सिंह, महिपत उपाध्याय, विनोद गुप्ता, **रामनगर**-अशोक शुक्ला, (मैनेजर साहब), अच्छे लाल यादव, राम कर्ण प्रजापति, अरूण कुमार त्रिपाठी, सुरेश कुमार गुप्ता, ओमकार पाण्डेय। **दर्शननगर**- डॉ. जगदीश सिंह, जगदीश सिंह, लालजी मौर्या, **महाराजगंज**-डॉ. रोहित प्रजापति, डॉ. रवि प्रताप प्रजापति, छोटु प्रजापति, अरुण प्रजापति, प्रमोद शर्मा, संध्या शर्मा, नीलेश प्रजापति, **मउ**-अशोक कुमार गोंड, **मउघोसी**-रामभजन चौहान, सुरेश चौहान, विजय सिंह चौहान, कमलेश सोनकर, पारस सोनकर। **गाजीपुर**-महेन्द्र सिंह, चन्द्र मोहन शुक्ला, शम्भू नाथ, दीपू, गोण्डा, नरेन्द्र कुमार, **आ.सि.सा. परिवार-देवरिया सुनौली के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन। आ.सि.सा. परिवार नेपाल, बुटवल के समस्त गुरू भाई एवं गुरू बहन।**

16 अक्टूबर 2022

बगलामुखी साधना शिविर

शिविर स्थल : गुरु जी मैरिज लॉन, निकट रेलवे क्रॉसिंग, , राजारामगंज, बछरावां (रायबरेली)

मुख्य आयोजक–बछरावां–अखिलेश वर्मा–9450742182, दिनेश वर्मा–9125436511, राजेश कुमार वर्मा–91254 01575, डॉ. विजय वर्मा–8299635941, शिवानी गुप्ता, उमेश वर्मा, अजय वर्मा, जितेन्द्र कुमार, सतीश गुप्ता, अभिषेक बाजपेई, बलराम सिंह बघेल, बेचालाल, महेश प्रसाद, केदार वर्मा, देव नारायण, सरवन कुमार, राहुल गुप्ता, ओ.पी. मास्टर, मानवेन्द्र सिंह, अजीत, सत्रोहन वर्मा, अजय भैरमपुर, वन्दना वर्मा, दिव्या सैनी, आशीष, शिवनारायण, श्रीग्रुप, राजा, नीशू, शनि, गुड्डू, अजयसिंह (गुरुजी मैरिज लॉन), लवकुश, अनुराग, दिलीप, मुन्ना, राजू, दिपेन्द्र पटेल, अनूप शर्मा, विष्णु, गोविंद, निम्मी शुक्ला, मनोरमा पाण्डे, केदार, आशीर्ष गोलू, अशोक पाल, **महाराजगंज**–संजय गुप्ता, सतीश प्रजापति, राजेश प्रजापति, रामकिशोर धुन्नी यादव, गणेश मिश्रा, मनोज सिंह, नन्दु विश्वकर्मा, ज्ञानेन्द्रसिंह, रामसुमिरन यादव, वंश बहादुर यादव, **रायबरेली**–मोहनलाल वर्मा, पुत्तु निखिल, ऊषा वर्मा, **लखनऊ**–अजय सिंह, संग्राम सिंह, सतीश टंडन, राकेश चन्द्र वर्मा, जयंत मिश्रा, डॉ. प्रवीन सिंह, **कानपुर**–महेन्द्र यादव, रामनिवास पाल, शैलेन्द्र सिंह, हरिनाम सिंह यादव, **बाराबंकी**–संदीप, राजन, किरनलता, विनीता वर्मा, महेश चन्द्र, रामहर्ष, अखिलेश वर्मा, **प्रतापगढ़**–सोहन वर्मा

17 अक्टूबर 2022

माँ बागेश्वरी साधना शिविर

शिविर स्थल : मैजेस्टिक पार्टी पैलेस, वडा पुलिस ऑफिस के पीछे, डी.एस.पी. रोड, फुल टेक्रा, नेपालगंज (नेपाल)

मुख्य आयोजक–कमला बिष्ट–9848183897, गिरेन्द्र शाही–9848046943, सुरेश न्यौपाने–9848035825, राधा शाह–9822417747, पवित्रा थापा, अजीता पछाइ, डॉ. आशीष शुक्ला, कृष्ण बहादुर शाह, तीला भण्डारी, सुधा शाही, नवराज बी. सी., नरेश श्रेष्ठ, सरिता महरा, सीमा गौतम, लीला ज्ञवाली, ससीला शाह, भीम तिमील्सेना, नरकान्त जोशी, बुधराम चौधरी, तारा देवी ओली, तिलका के.सी., निर्मला बिष्ट, सूरज शुक्ला, धनु शाही, लक्ष्मण चौधरी, सीता उपाध्याय, शान्ता चन्द, तेक बहादुर थापा, बिन्दु सेन, माधव घिमिरे, उर्मीला गौतम, रवि श्रेष्ठ, जानुका बराल, **राजविराज**–घनश्याम दास श्रीमाली, पुनीता श्रीमाली, **निखिल शिष्य ग्रुप, काठमाण्डू**–अविनाश गुप्ता, रितेश कार्की, सुभाष कार्की, मेलिना बुढाठोकी, सम्झना श्रेष्ठ, कृष्ण श्रेष्ठ, **तुलसीपुर दांग**–विष्णु श्रेष्ठ, **बुटवल**–ज्ञानेश्वर वजिमय, महेन्द्र शर्मा, **लखनऊ**–अजय कुमार सिंह, नीलम सिंह, सतीश टण्डन, पंकज दुबे, डी.के. सिंह, जयन्त मिश्रा, सन्तोष सिंह (अन्नु), प्रदीप शुक्ला, **लखीमपुर खीरी**– चन्द्रकुमार रस्तोगी, बाबा सूरज दास,दास,

23-24 अक्टूबर 2022

दीपावली महोत्सव एवं साधना शिविर

शिविर स्थल : गुरुधाम जोधपुर

6 नवम्बर 2022

सर्वोन्नति प्रदायक

सूर्यनारायण साधना शिविर

शिविर स्थल : नामधारी गार्डेन सीसमो होटल, कल्पना एसकोयर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

आयोजक मण्डल : इन्द्र जीत राय–8210257911, 9199409003 चैतन्य गुंजन योगी जी (भुवनेश्वर)–8144904640, डॉ. लक्ष्मी नारायण पानी ग्राही एवं प्रतिमा कुमारी पत्रा (ब्रह्मपुर) - 9437616301, वैष्णो चरण साहू (बलांगीर) 8249804350, सुत ध्रुवा एवं सत्यवती ध्रुवा, (बाण्डामुण्डा)–9337852925, दीलिप मिश्रा (सम्बलपुर) –9438202003, **कटक**–शिव विरचरण नारायण त्रिपाठी, 8895972932, अभिषेक शर्मा–8847857125, **भुवनेश्वर**–किशोर कुमार बरिहा–9937056155, प्रदीप कुमार महापात्रा, टुन्ना भाई, अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार **ब्रह्मपुर**–सत्यवादी भंजो देव, संतोष कुमार पति, मनोज कुमार पात्रा, ध्रोनी दास, संतोष कुमार सेठी एवं **ब्रह्मपुर** के सभी गुरू भाई एवं गुरू बहन, **कालाहांडी**–प्रदीप साहू–9777830254, सुजीत जी, **कटक**–मंगेश बेहेरा, उपेन्द्र मलिक, **राउरकेला**–नरेश राजगड़िया–8018406882, सरोज कुमार प्रधान, गौर सिंह भूमिज, वृंदावन ताती, रोहित कुमार पेलई, **बांडामुण्डा**–जयदीप नायक, सूरज मलाकार, **झारसुगड़ा**–हरि बाग बाबू लाल साहू, वेंकेट राव, राजू मेहर, जगरनाथ साहू, नीतिन जी, **सुन्दरगढ़**–अशोक कुमार, श्री नाथ समल, सुनील कुमार पटेल, **सम्बलपुर**–गोविन्द पंडा, लिंग राज प्रधान, चन्द्रशेखर डोरा, **बलांगीर**–सुब्रत बोहिदार, अशोक राउत, बासुदेव रता, अश्विनी त्रिपाठी, विजय भुषण बघेल, सेषा देव मेहर, सुशील कुमार तांदी, विकास मिश्रा, वरूण थनाप्ति, कामदेव बारिक, अनिल कुमार मिश्रा, सत्य बागरति, गजेन्द्र साहू, रविन्द्र मेहर, विजय पानी, नन्दी मिश्रा, **पूरी**–संतोष कुमार परिदा, **तेतलागढ़**–ऋषिकेश नाग एवं जमुना नाग, **धर्मगढ़**–नेहारिका नाग, **बिहार लखीसराय** – मुरारी महतो, पप्पू महतो, नन्दकिशोर कुमार, **बेगुसराय बिहार** – लुटन जी

7-8 नवम्बर 2022

संन्यास दिवस महोत्सव साधना शिविर

शिविर स्थल :

इंडोर स्टेडियम पार्किंग ग्राउण्ड, बुढ़ातालाब, रायपुर (छ.ग.)

आयोजक मण्डल छत्तीसगढ़-जी.आर. घाटगे-9669901379, महेश देवांगन-9424128098, लकेश्वर चन्द्रा-9827492838, सेवा राम वर्मा-9977928379, संजय शर्मा-9111342100, दिनेश फुटान-8959140004, एन.के. कंवर-9644334011, दुष्यंत पटेल-7089168600, लेखराम सेन-9826957606, हितेश ध्रुव-9826541021, सहदेव साहू-9893637680, प्रतापसिंह प्रधान-7566555111, डॉ. महेश्वरनाथ योगी-9993316290, जनक यादव-7987086097, टीका राम वर्मा-6261180440, महेन्द्र वर्मा-9406403210, दिलीप देवांगन-7000354515, राधेश्याम साहू-9131863005, समेलाल चौहान-7805906027, अजय पटेल-8839655810, पिताम्बर ध्रुव-9993242093, सियाराम बरेठ-9755836240, अजय साहू-9009579631, रामस्वरूप नागवंशी-7697581977, ज्ञानेश तुमरेकी-99071 02649, अशोक साहू-9753292562, जिला रायपुर-चन्द्रप्रकाश स्वर्णकार- 9770218087, बृजमोहन साहू-7974012769, रविन्द्र कन्होले- 6261865178, पवन साहू-98271 82257, मारकण्डेय शर्मा, विजय यादव, दशरथ यादव-8959763666, मेहतरु यादव, बलदाउ सिन्हा, मीना देवदास, ममता सोनी, सविता प्रजापति, मुकेश छुरे, सुरेश निषाद, रामवतार निषाद, नंदकुमार यादव, टाकेश्वर साहू, भानमती वर्मा, देवान राम साहू, कमलेश चन्द्रवंशी, दुर्गा वर्मा, ज्ञानिक निखिल, उमाकांत साहू, राजेश सोनी, टीकाराम यादव, रवि साहू, वागेश चन्द्रा, दुर्गेन्द्र निषाद, अदिति नवरंग, ढालसिंह ध्रुव, विनोद यादव, रामकुमार वर्मा, गिरवर साहू, मूलचंद साहू, उत्तम साहू, ऋषि निषद, बी. श्रीनिवास, नानक साहू, जगदेव ध्रुव, संजू सोनकर, अश्विनी यादव, हेमलाल सोनकर, आनंद शुक्ला, प्रतिभा लहरी, लिलेश कुमार, आर्यन पटेल, निखिल वर्मा, चेतन निषाद, सुरेश साहू, गौकरण सिंह, संदीप प्रजापति, हरेन्द्र प्रजापति, पुनितेश्वर देवांगन, ज्ञानिक निषाद, दुर्गेश निषाद, टीकम यादव, भृगु यादव, लालजी यादव, सत्यवान महंत, रानी धीवर, उषा वर्मा, दुर्गा वर्मा, हितेश सेन, दिनेश साहू, गणेश हरपाल, कल्याणसिंह उइके, छलिया राम साहनी, गजेन्द्र सोनवानी, यशोदा यदु, सेजबहार-गोवर्धन यादव-9754596913, सिलतरा-धनीराम साहू, राकेश वर्मा, प्रेमलाल निर्मलकर, बंशीलाल साहू, विकास चन्द्रा, वंदना लहरी, यशोदा साहू, ईश्वर साहू, तिलक यादव, ढेलूराम वर्मा, नारद साहू, दिलीप यदु, रामशरण गिरी, तिल्दा-नेवरा-शैलेन्द्र वर्मा-97542 91554, शत्रुहन लाल वर्मा-9406405611, संतोष राव लाहने, राधिका वर्मा, पवन वर्मा, पल्लवी वर्मा, जागेश्वर पटेल, मालती वर्मा, मीना वर्मा, गौरव वर्मा, दीपक वर्मा, सोनम वर्मा, छपोरा-शत्रुहन वर्मा, सिलयारी-गज्जू वर्मा, बलौदा बाजार-लेखराम चन्द्राकर- 9926114722, अग्रहित धीवर-9754664556, देवचरण केवट-8435112361, अग्रहित धीवर-9754664556, दिनेश ठाकुर, उमेश्वरी चन्द्राकर, रामकुमार पटेल, मुरारी साहू, दिलीप साहू, उत्तम फेकर, केशव पटेल, टीकाराम वर्मा, पुरुषोत्तम यादव, जनक राम देवांगन, संजय वर्मा, देवनारायण वर्मा, बद्रीप्रसाद साहू, रथराम साहू, दामोदर प्रसाद तिवारी, बोधीराम आदित्य, लखनलाल सिदार, गिरधारी साहू, हुलास साहू, द्रोणाचार्य कन्नौजे, सियाराम पटेल, राजेन्द्र पटेल, मनोहर कन्नौजे, भगेलाराम केंवट, भाटापारा-पुरुषोत्तम कर्ष-9754251788, लक्ष्मीप्रसाद वर्मा-9009577151, निर्मला कर्ष, महासमुंद-खोमन कन्नौजे-9993377750, रामेश्वर प्रसाद ठाकुर, विष्णु साहू, ओमप्रकाश पटेल, आचार्य देवनारायण, श्रीमती सरस्वती बिरकोनी, फटकन बाई साहू, सोनाराम निषाद, भवानी शंकर, कुंजलाल यादव, दीवारचंद भोई, नरेन्द्र साव, बंधीधर पटेल, डेहरी लाल पटेल, कमलेश साहू, बसना- गरियाबंद-शिवमूर्ति सिन्हा-7999343781, संतोष जैन- 7415537926, डॉ. कोमल सिन्हा, डेहर पटेल, केशव साहू, टीकमचंद, चंचल गायकवाड़, धमतरी-एन.सी. निराला-9329278047, संजीव तिवरी- 7898009665, सत्यनारायण मीनपाल, दिलीप मीनपाल, सालिक राम साहू, सरस सोनी, उत्तम देवांगन, नारायण देवांगन, अशोक साहू, मगरलोड-विषय लाल साहू-9770126672, गंभीर साहू, डी.आर दीवान-9340605060, टाकेश्वर साहू, जयंती कंवर, दुर्ग-विकेश वर्मा-7024791221, डिलेश्वर प्रसाद चन्द्राकर-8305656776, गौरव टंडन-8109849856, प्रेमलाल धनकर, श्रीमती तारा चंद्राकर, वंदना चक्रवर्ती, हरिशचन्द्र यादव, कुलेश्वर यादव, तेजराम देवांगन, डॉली देवदास, जितेन्द्र कुमार, खोमलाल, गिरीश टंडन, कु. लक्ष्मी भिलाई-यामिनी निखिल, खेदुराम देवांगन, स्वाती, संजय चंद्रवंशी, राजनांदगांव- बेनीराम गजेन्द्र-9407608711, भगवती प्रसाद देवांगन-6264377782, चेतन साहू-7771095317, संतोष देशमुख-9908184712, दिनेश यादव-7389045471, बी.ए. राजू, भावेश देवांगन-8770429644, कुलदीप साहू-87700 53592, दिनेश प्रजापति, नकुल सिन्हा, शारदा तुकरेकी, कांती साहू, चन्द्रकान्त रामटेके, सूर्या साहू, खिलेश्वर साहू, खैरागढ़-तेजेश्वर गौतम-9827950765, मुकेश देशमुख-91748 30776, गुप्तेश्वरी गौतम, गोवर्धन वर्मा-7089626903, जितेन्द्र वर्मा-9165993292, गणेश सिन्हा, पुखराम श्रीवास, अम्बागढ़ चौकी-गनपत नेताम-9406012157, कार्तिक राम कोमा, नन्दूराम धनेन्द्र, रेणुका महाला, मंगतूराम भरद्वाज, छुरिया-डॉ. भूषण आनंद-9399782421, डोंगरगांव-राज यदु-9893463106, यादो राम कोठारी, रामनारायण सोनवानी-9827413295, हेमंत साहू- 9179253555, संतोष चक्रधारी, डॉ. जितेन्द्र सिंह-9589445714, अशोक निषाद, डोंगरगढ़-कार्तिकराम साहू-7974982400, ज्योति भूधर साहू- 9407625706, बालोद-शिवकुमार मरकाम-9424123804, डॉ. जगजीवन निषाद-9977026040, रमेश निषाद-6265568273, कौशल गजमल्ला-9826935021, दिलीप साहू, भगवत राम साहू, जांजगीर चांपा-संतोष साहू-7999819021, जयचंद पटेल- 7725007553, थानसिंह जायसवाल, वेद श्रीवास, रामचरण बरेठ, चित्रकुमार चन्द्रा, माता रानी सिदार, मुकेश टंडन, पदुम लाल निषाद, नरेन्द्र राठिया, गंगासागर कैवर्त, जागेन्द्र निर्मलकर, प्रहलाद कौशिक, रामकुमार राठौर, गुरुशरण चन्द्रा, नोबेल पटेल, बेमेतरा-श्री खूबीराम साहू, दिनेश साहू, रामचरण साहू, शत्रुहन साहू, मोती बिरझे, बिलासपुर-अनिल यादव- 9753191911, दंतेवाड़ा-सुश्री लक्ष्मी थामस, अम्बिकापुर-रामवृक्ष रामभगत, परमेश्वर, कांकेर-अनिता नागवंशी, राजेश्वरी नागवंशी, सांवली बाई नागवंशी, पंचुराम मण्डावी, टिकन कुमार नेवला, जगदलपुर-राधाकृष्ण कुशवाहा, संजीव जायसवाल, कोरबा-लक्ष्मी शोरी, रायगढ़-सुश्री देविका यादव,

काठमाण्डू में आयोजित साधना शिविर के दृश्य

आयोजित साधना शिविर के दृश्य

दिल्ली कार्यालय – सिद्धाश्रम 8, सन्देश विहार, एम.एम. पब्लिक स्कूल के पास, पीतमपुरा, नई दिल्ली-110034
फोन नं. : 011-79675768, 011-79675769, 011-27354368

Printing Date : 15-16 August, 2022
Posting Date : 21-22 August, 2022
Posting office At Jodhpur RMS

RNI No. **RAJ/BIL/2010/34546**
Postal Regd. No. Jodhpur/327/2022-2024
Licensed to post without prepayment
Licensed No. RJ/WR/WPP/14/2022
Valid up to 31.12.2024

माह : सितम्बर एवं अक्टूबर में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव श्री अरविन्द श्रीमाली जी निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान गुरुधाम (जोधपुर)	
16	सितम्बर
12	अक्टूबर

स्थान सिद्धाश्रम (दिल्ली)	
10-11	सितम्बर
05-06	अक्टूबर

प्रेषक –
नारायण-मंत्र-साधना विज्ञान
गुरुधाम
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)
पोस्ट बॉक्स नं. : 69
फोन नं. : 0291-2432209, 7960039,
0291-2432010, 2433623
वाट्सअप नम्बर : 8890543002